प्रेमधारा

Shree Prem

- ✯ संसार की सबसे बड़ी भूख है सम्मान पाने की इच्छा।
- ✯ अपनी प्रशंसा सुनने से ज्यादा सुखद अनुभूति कुछ भी नहीं, किन्तु इसकी इच्छा रखने से बड़ा दुर्गुण भी कुछ भी नहीं है।
- ✯ मनुष्य, मनुष्य का अपमान करे इससे बड़ा अपराध और क्या हो सकता है ?
- ✯ अपने दुर्गुणों को जान लेना ज्ञान है, उसे दूर कर लेना अभ्यास एवं उस पर विजय प्राप्त कर लेना ही सिद्धि है।
- ✯ मार्ग वही है – जिस पर चलने से दूसरों की भलाई होती है।
- ✯ निरंतर दूसरों की भलाई के बारे में सोचते रहने से बड़ा कोई तप नहीं।
- ✯ सद्गुरू के दर्शन से सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।
- ✯ संसार में जो कुछ है वह सब एक दिन बदल जाएगा।
- ✯ जीवन में आपके द्वारा किया गया एक ही अच्छा कार्य आपको महान बना सकता है।
- ✯ हिंसा समस्या के समाधान का हिस्सा कभी भी नहीं बन सकता है।
- ✯ जो एक का विश्वासपात्र नहीं बन सकता है, वह दूसरे का भी नहीं बन सकता।
- ✯ जो संबंध शर्त्तों पर टिकी हो वह कभी भी टूट सकती है।
- ✯ जो अपने स्वार्थ के लिए दोस्ती करता है वह दोस्ती नहीं अवसरवादिता है।
- ✯ मनुष्य सृष्टि के आदि से सत्ता एवं संपत्ति की लड़ाई लड़ रहा है – जो कभी किसी के लिए स्थाई नहीं होती।
- ✯ जो अपनी ही आवश्यकता को सबसे बड़ा समझता है वह दूसरों को कभी नहीं समझ सकता है।
- ✯ अपवाद के अतिरिक्त संसार के सभी रिश्ते शर्त्तों पर टिके हुए हैं।
- ✯ कमजोर मन के साथ मजबूत शरीर की कल्पना नहीं की जा सकती है।
- ✯ मनुष्य का छोटा–बड़ा होना उसके कार्य पर निर्भर करता है।
- ✯ लक्ष्य की कल्पना अकेले भी चलते रहने के दृढ़ संकल्प से प्राप्त की जा सकती है।
- ✯ खुद को जान लो फिर ईश्वर को भी एक दिन जान लोगे।
- ✯ व्यापार अच्छे व्यवहार के साथ करो – एक दिन पूरे संसार में फैल जाओगे।
- ✯ हर कोई अपने सामने वाले के कारण महान हुआ है – इसलिए सामने आए लोगों की सुनों एवं उसका निदान करो।
- ✯ छल जिसके साथ किया जाता है, उससे पहले छल करने वाला समाप्त हो जाता है।
- ✯ छल से संसार को नहीं जीता जा सकता है।
- ✯ जब बुरे लोग बुराई करने से नहीं थकते तो फिर अच्छाई की ओर बढ़ने वाला क्यों कर थकेगा।
- ✯ अगर तुम कुछ नहीं कर सकते हो तो दिन–रात सुंदर संकल्पों से अपने को भर दो, एक दिन तुम सब कुछ करने वाले हो जाओगे।
- ✯ संसार सुंदर संकल्पों का ही परिणाम है।

प्रेमधारा

- ✓ पृथ्वी पर रिश्तेदार शादियों एवं मरने पर भोज ही खाने आते हैं। ये दुख ज्यादा देते हैं एवं सुख की सिर्फ बात करते हैं।
- ✓ जो सत्ता एवं संपत्ति छल से अर्जित की जाती है वह पल भर में चली जाती है।
- ✓ ईश्वर के बनाए नियमों पर चलने वालों को संसार में कोई थोड़ी देर के लिए कष्ट दे सकता है किन्तु उसका नाश नहीं कर सकता है।
- ✓ जो माता अपनी संतान को छल करना सिखाती है वह अपनी संतान से एक दिन खुद ठगी जाएगी।
- ✓ सुधारना ही है तो अपनी संगति सुधारो।
- ✓ मनुष्य जो कुछ भी अपना अनुभव कहता है वह आस–पास से प्राप्त अनुभव होता है।
- ✓ अनुभव अत्यन्त ही कीमती है– इससे पीढ़ी दर पीढ़ी लाभान्वित हो सकती है।
- ✓ परमात्मा के चिंतन मनन एवं भजन के अलावा इस कलियुग के छल रूपी कष्ट से और कौन बचा सकता है।
- ✓ अच्छी बातों को ढ़ोने वाला कुली मत बनों बल्कि उसे आचरण में उतार महान बनो।
- ✓ हर निर्माण के पीछे त्याग एवं कठिन परिश्रम ये दो महत्त्वपूर्ण कारण होते हैं।
- ✓ सत्य पर चलने वालों की रक्षा ईश्वर अवश्य करता है अन्यथा पृथ्वी जीने लायक नहीं रह जाती।
- ✓ भ्रष्टाचार एवं भारत दोनों को हम भारतीयों ने एकाकार कर दिया है। अगर बचाना ही है तो भारत को भ्रष्टाचार से बचाओ।
- ✓ पहले दूध की गंगा बहती थी अब भ्रष्टाचार की नालियों से दूध की गंगा पीने लायक नहीं रह गयी है।
- ✓ राजा के आचरण को ही प्रजा भी धारण करती है। अतः बिना राजा के सुधरे देश नहीं सुधर सकता।
- ✓ कठिन व्रत है बुरों के साथ रहने का एवं उसके अच्छा बनने का इंतजार करने का। अगर इस व्रत का निर्वाह पूरी जिन्दगी के लिए हो जाय तो महान आत्मा है वह।
- ✓ कठिनाइयों से डरो नहीं, बुराइयों के सामने झुको नहीं, अच्छाइयों के लिए बढ़ते रहो यही जिन्दगी है, यही जिन्दगी है।
- ✓ मृत्यु तो आएगी, उसका इंतजार करने से क्या फायदा? जिन्दगी एक पल भी बची है तो उसे हँस कर जी लो, हँस कर जी लो।
- ✓ तुम्हारे रोने से अगर मौत भाग जाती तो श्मशान में मुर्दे नहीं होते एवं श्मशान से लौटी जिन्दगी–जिन्दगी नहीं होती।
- ✓ हँसने का एक पल भी मौका मिले तो हँसो ऐसा कि मौत भी डर कर चली जाय तुमसे।
- ✓ अपनों से गम मिलते है, फिर भी हम क्यो बनाते हैं अपने? जिन्दगी एक परंपरा है अपनों का पराया बनते रहने का।

- ✓ भूलना हमारी आदत सी है फिर भी हम याद करना भी नहीं भूलते हैं, यही जिन्दगी है, यही जिन्दगी है।
- ✓ दुखों को याद करोगे तो दुखी हो जाओगे – इसलिए खुशियों को चाहने वाली याद बनाओ – उन खुशियों को जो लौट कर जाए न कभी तुमसे।
- ✓ ईश्वर की राह पर चलने वालों को कभी ठगा नहीं जा सकता एवं गुनाहों की राह पर चलने वालों को कभी बचाया नहीं जा सकता है।
- ✓ हजार बार सत्य निराश होता है किन्तु एक बार जीत उसकी ही होगी।

प्रेमधारा

- ✡ इच्छाओं से मुक्त हुए बिना स्थायी खुशी को प्राप्त नहीं किया जा सकता है।
- ✡ खुशी बिना कारण प्राप्त होती नहीं है एवं कारण हमेशा उपलब्ध रहता नहीं, इसलिए खुशियाँ हमेशा ही अस्थायी होती हैं।
- ✡ परमात्मा के प्रति हमारा जो कमजोर विश्वास है वही हमें दुखी करता रहता है।
- ✡ अपनी योग्यता बढ़ाने की जगह हम दूसरों की बढ़ी हुई योग्यता से ईर्ष्या करते हैं।
- ✡ काम से ज्यादा नाम की इच्छा मनुष्य को भ्रष्ट बनाता है।
- ✡ देश के लिए काम करने वालों की व्यक्तिगत आमदनी बढ़ती हो तो उसे अपराधी ही माना जाएगा।
- ✡ देश गरीब तो देश में रहने वाला कोई भी अमीर कैसे कहला सकता है।
- ✡ ज्यादा धन हमेशा गलत उपायों से ही प्राप्त किया जा सकता है।
- ✡ बिना नियमों के उल्लंघन के एक भी व्यक्ति धनी नहीं हो सकता है।
- ✡ धनवान एवं परमात्मा दोनों ही एक दूसरे का विपरीतार्थक है।
- ✡ धन एवं परमात्मा की प्राप्ति एक साथ कभी नहीं हो सकती है।
- ✡ धन्य वे लोग हैं जो थोड़े में खुश हो जाते हैं।
- ✡ धन्य वे लोग हैं जो नहीं मिलने पर भी किसी से शिकायत नहीं करते हैं।

✡ धन्य वे लोग हैं जो पुरस्कार की जगह अपमान झेलते हैं, वही एक दिन परमात्मा के सबसे करीब जाने जाएँगे।

✡ जो दुख या सुख अपनों को होने पर आपको प्रभावित करता है वही जब गैरों के साथ होने पर भी हो, तभी आप इंसान है।

✡ बड़ा कोई तब तक नहीं है जब तक वह परिवारवाद एवं रिश्तेदारवाद से मुक्त नहीं है।

✡ जब किसी की बर्बादी शुरू होनी होती है तो वह दूसरों के दुखी होने से खुशियाँ मनाता है।

✡ वादा करके मुकर जाना बेईमानी की पहली सीढ़ी है।

प्रेमधारा

✡ ममता एवं माता दो नहीं, एक ही है।

✡ माता बूढ़ी होती है, उसकी ममता कभी भी नहीं।

✡ घर का रिश्ता घर के चूल्हे से दिखता है, जहाँ रिश्तों की मिठास जन्म लेती है, फलती है, फूलती है, फिर फैल जाती है।

✡ घर को बचाना है तो घर के चूल्हे को बचाना होगा जहाँ से हमारे रिश्ते रिश्तेदारों के आने की खबर लगती है।

✡ गलत स्रोतों से अर्जित किया गया धन एक दिन गलत राह पर खर्च हो जाता है।

✡ खाने से पहले विचार करो – यह अन्न कैसे आया है, रहने से पहले विचार करो – यह घर कैसे बना है, पहनने से पहले विचार करो – यह किन पैसों से खरीदा गया है, यही संस्कार है।

✡ धन अर्जित करने का सही कारण नहीं बने तो निर्धन रहना बेहतर है।

✡ कुछ लोग खुद से रास्ता बनाते हैं, कुछ लोग बनाए रास्ते पर चलते हैं, कुछ लोग बनाए रास्ते को बिगाड़ देते हैं। आदमी किस श्रेणी का है इससे पता चलता है।

✡ मन लगाने का जो साधन हम ढूंढते हैं, वही हम होते हैं।

✡ एक भी प्रजा जब तक दुखी है, राजा अपनी जवाबदेही से मुक्त नहीं हो सकता है।

✡ राज्य की गरीबी का कारण राजा का गलत होना है।

✡ राज्य की राजधानी में जब गरीबी बसती हो और राजा राज्य की भलाई पर बोलकर अपनी दूर दृष्टि जाहिर कर रहा हो तो यह बेईमानी है।

✡ जो राजा एक शहर को नहीं सुधार सकता, उससे पूरे देश को सुधारने की उम्मीद रखना प्रजा की या तो मजबूरी है या भ्रष्ट राजा के कुकर्मो में उसकी भागीदारी।

प्रेमधारा

✡ मनुष्य को यह पता ही नहीं है कि उसे कितना धन, कितनी प्रशंसा एवं कितना बड़ा पद चाहिए – यही कारण है कि वह कुछ भी प्राप्त कर असंतुष्ट रहता है।

✡ शांति मनुष्य जीवन का उद्देश्य अब तक नहीं बन पाया है, इसलिए भ्रष्टाचार समाज का अभिन्न अंग बना हुआ है।

✡ जबतक हम धन एवं सत्ता की प्रशंसा करते रहेंगे, तब तक कोई भी व्यक्ति ईमानदार नहीं बनना चाहेगा।

✡ इन दिनों सफलता पाने की कुंजी ने एक बाजार का रूप ले लिया है, फिर भी असंतुष्ट एवं असफल व्यक्तियों की भीड़ ज्यादा बढ़ रही है।

✡ जो आमदनी से कम खर्च करता है, वही सुखी रहने का रहस्य जानता है।

✡ जो थोड़ा लगाकर ज्यादा पाना चाहता है, वह व्यापारी है।

✡ जो बिना लगाए ही पाना चाहता है, वह राजा है।

✡ जो कुछ भी पाए बिना ही अपना सब कुछ लगाते रहता है, वह योगी है।

✡ जो पाने एवं लगाने के अन्तर से मुक्त हो चुका है वही जीवन मुक्त है और मोक्ष को प्राप्त करने वाला है।

✡ निरंतर जो चित्त समाज की भलाई में लगा है एवं बदले में अभाव का अपमान झेल रहा है, एक दिन उसी के आशीर्वाद से कोई धनवान बनेगा।

✡ भलाई करने से बड़ा सुख संसार में कुछ भी नहीं।

✡ जो सम्मान देने वाले को सम्मान एवं अपमान करनेवाले को अपना ताज पहनाएगा, एक दिन संसार उसे ईश्वर के नाम से पुकारेगा।

✡ तुम जब भलाई के लिए एक कदम बढ़ाते हो तो ईश्वर तुम्हारे पास हजारों कदम बढ़ाकर अपनी मदद तुम्हें पहुँचाता है।

✡ पाँच की सहमति से शुरू किया गया कार्य सफल होता है।

✡ कार्य शुरू करने से पहले अपनी आत्मा से अवश्य पूछो – उसकी स्वीकृति के बिना शुरू किया गया कार्य हमेशा ही कष्ट देता है।

✡ जो तुम्हारे उद्देश्य में सहायक है वही तुम्हारा मित्र है।

- ✡ जो पिता अपने जीवन में ही अपने पुत्रों को उचित जिम्मेदारी देकर सांसारिक जवाबदेही से मुक्त हो जाता है – वही सुखी पिता है।
- ✡ वृद्ध, रोगी एवं गरीब एक ही हैं। इनकी सेवा कर ईश्वर की कृपा प्राप्त की जा सकती है।
- ✡ जन्म एवं मृत्यु का जो रहस्य है वही ईश्वर के अस्तित्त्व का बोध कराता है।
- ✡ श्मशान में किसी की अंतयेष्टि पर उठा वैराग्य घर पहुँचने तक भी नहीं रह पाता है – यही माया है।
- ✡ बार – बार पुत्र द्वारा दिए जाने वाले कष्टों के बारे में सुनकर भी कोई अपने भाइयों के पुत्र को भी अपने बेटे के बराबर नहीं मानता तो वह भला समाज को कैसे अपना बना पाएगा।
- ✡ आज राजनीति भी धनवानों के धन की तरह हो गई है जिसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र या परिवार का ही सदस्य होता है।
- ✡ मेले से वस्तुएँ खरीदकर लाई जाती हैं, ज्ञान एवं वैराग्य नहीं।
- ✡ सिर्फ चिंता करते रहना एवं शारीरिक श्रम नहीं करना – व्यक्ति को आलसी बनाता है, जो सफलता के लिए बाधक है।

प्रेमधारा

- ✡ गुरु किसी को बदलता नहीं बल्कि बुद्धि पर पड़ी हुई धूल को झाड़कर विवेक को जगा देता है।
- ✡ मनुष्य स्वभाव से अपनी प्रशंसा सुनने के लिए बेताब रहता है एवं संत इसे ईश्वर प्राप्ति में बाधक मान एकांत जीवन जीना चाहते हैं।
- ✡ मनुष्य सबसे बड़ा हो भी जाए किन्तु जब तक उसे सब कोई सबसे बड़ा कहे नहीं, तब तक उसे संतोष नहीं हो सकता है।
- ✡ आज तक कोई भी राज्य किसी पूर्व राजा की प्रशंसा कर नए राजा को नहीं लाया। प्रत्येक सरकार निंदा के बल पर ही बनती है एवं गिरती है।
- ✡ जो सरकार दूसरों की निंदा करके बनी हो, भला वह अच्छी कैसी हो सकती है।
- ✡ हमें एक ऐसी सरकार चाहिए जो निंदा के बल पर नहीं, अच्छे कार्य, आचरण के बल पर बनी हो।
- ✡ सभी धर्मों से राष्ट्रधर्म श्रेष्ठ है।
- ✡ घर के कोने में तुम्हारे उपदेश फेंके मिलेंगे, क्योंकि घर के लोग कभी घर के उपदेश को अपनाते नही, इसलिए बूढ़े माँ–बाप तुम्हें रोते मिलेंगे।
- ✡ अगर मनुष्य किसी चीज से नहीं थकता है, तो वह है अपनी प्रशंसा।
- ✡ प्रशंसा से बड़ी भूख एवं निंदा करने से बड़ा आनंद मनुष्य के लिए कोई और दूसरा नही, किंतु जो इससे अपने को अलग कर ले वही एक दिन परमात्मा से मिलने का अधिकारी बनेगा।
- ✡ संसार की वे सभी पुस्तकें जो अच्छी मानी जाती है, वह किसी न किसी की प्रशंसा में लिखी गई है।
- ✡ मनुष्य हमेशा ही उसे अच्छा कहता आया है, जो दूर नहीं, बहुत दूर रहता हो, किन्तु जो नजदीक रहनेवाले से प्यार करता है वही मसीहा है।
- ✡ एक दिन सबको पता चल जाता है कि वह कहाँ जाने वाला है किन्तु तब हम अपनी इच्छा से यात्रा की दिशा नहीं बदल सकते हैं, जो इस रहस्य को जानता है वही ईश्वर के करीब कहलाता है।

- ✡ हमें समय रहते अपने बुरे आचरण को प्रकट कर उससे मुक्ति पा लेनी चाहिए, क्योंकि हमारा पिता हमें देख रहा है।
- ✡ हम संसार के कार्यों को कर महान कहलाना चाहते हैं, पर यह सरल है क्या ?
- ✡ शांति इच्छाओं के रहते नहीं मिल सकती है।
- ✡ जब आपको बार–बार अपनी गलती एवं अपने गलत होने का अहसास होने लगे तो समझें ईश्वर की कृपा आप पर हो गई है।
- ✡ इस संसार से परे, संसार के बारे में जाने बिना, इस संसार की खूबसूरती के बारे में बयान करना भी झूठ ही है। हममें से कोई भी इस संसार से परे संसार के बारे में नहीं जानने की असफलता को स्वीकार करने की बजाय उसे नहीं होने की ही चर्चा में अपना समय व्यर्थ गँवाते हैं।
- ✡ हम सभी उस बच्चे की तरह हैं जो हाथ में माटी के खिलौने को ही संसार की सबसे कीमती चीज समझ बैठता है।
- ✡ जिस प्रकार सयाने होने पर हम सभी मिट्टी के खिलौने को खुबसूरत तो कहते हैं किंतु बच्चे की तरह सीने से लगाकर नहीं सोते, उसी प्रकार उस ईश्वर के बारे में जाने बिना हममें से हर कोई इस नश्वर संसार को सीने से लगाए रखेगा।

प्रेमधारा

- ✡ राजतंत्र में राजा एवं प्रजा लिबास एवं निवास से दिखता था, अगर यही अंतर एवं पहचानने का तरीका प्रजातंत्र में भी दिखे तो समझना चाहिए कि प्रजातंत्र अभी आया नहीं है।
- ✡ राजतंत्र में जो सुविधाएँ राजा को थी, वही आज प्रजातंत्र में भी है।
- ✡ प्रजातंत्र प्रजा का तंत्र नहीं बल्कि संख्या का तंत्र है जहाँ किसी का अच्छा–बुरा होना संख्या तय करती है।
- ✡ गुरू अगर सिर्फ पैसे के लिए कार्य कर रहा हो तो उसे गुरू नहीं, ठेकेदार कहना चाहिए।
- ✡ प्रकृति फैलने के नियमों पर ही टिकी है, जैसे बीज वृक्ष के रूप में, घास झाड़ियों के रूप में एवं मन संसार का सबसे बड़ा आदमी के रूप में फैलना चाहता है।
- ✡ सफलता के लिए नित्य सुंदर कल्पनाओं से अपने को ओत–प्रोत करो।
- ✡ कल्पना शक्ति सभी शक्तियों में श्रेष्ठ है।
- ✡ कल्पना से ही सृजन एवं विनाश किया जाता है।
- ✡ मनुष्य में सृजन करने की जो क्षमता है वह देवताओं का गुण है एवं विनाश करना असुरों का ।
- ✡ प्रतिस्पर्धा बहुत स्वस्थ होकर भी ईर्ष्या के इर्द–गिर्द मँडराती रहती है।
- ✡ मनुष्य हमेशा ही अपने मन की चाहता है इसलिए वह विवाद में पड़ता है। जो सबका चाहे वही विवाद से परे एवं महान कहलाता है।
- ✡ कार्य करने एवं बोलने वालों में तुलना किया जाय तो हमेशा ही बोलने वालों की संख्या ज्यादा होगी।
- ✡ जो कार्य करने से ज्यादा बोलने लगे वह सच कभी बोल ही नहीं सकता है।
- ✡ अगर झूठ से बचना हो तो कम बोलो, आवश्यक बोलो।
- ✡ मनुष्य को लगता है कि वह खुद की सोच का कर रहा है, जबकि वह औरों को देखकर कुछ अच्छा या बुरा कर रहा होता है।
- ✡ आवश्यकता से ज्यादा एवं कम बोलने वाले दोनों ही किस्म के लोग झूठ बोलने वाले होते हैं।

- ‘मून गाय खून खाए’ अर्थात् जो जरूरत पड़ने पर भी नहीं बोले वह एक दिन गद्दारी करेगा।
- गुरू के संग से बड़ा आनंद, संसार में कुछ भी नहीं।
- विचारों के अलावा संसार के सभी निर्माण एक दिन ध्वस्त होकर पुनर्निर्माण को प्राप्त होते हैं।
- निर्माण की कल्पना में बड़ा ही आनंद है।
- जो कार्य की गुणवत्ता से ज्यादा उसकी कीमत वसूली की चिंता में रहता है, वह हमेशा ही कम गुणवत्ता वाली चीज बनाएगा।
- रंग के ज्यादा खर्च करने से चित्र सुंदर नहीं होते बल्कि चित्र सुंदर होते हैं रंग की उचित मात्रा एवं स्थान प्रयोग से।
- शोहरत के प्रभाव से कोई सिद्ध ही बच सकता है।
- सबों के माता–पिता एवं गुरु का आदर करो किंतु अपने माता–पिता एवं गुरू की पूजा करनी चाहिए।
- देश को योगियों की नहीं, योगी जैसे राजा की जरूरत है।
- कोई बड़ा बना कैसे है, वह कोई जानना नहीं चाहता है, न ही वैसा करना चाहता है किन्तु बनना हर कोई बड़ा ही चाहता है।
- प्राथमिकताओं पर आधारित जीवन जीने वालों की स्मृतियाँ कमजोर पड़ जाती हैं।
- अगर आप अपने खास क्षेत्र में ही बहुत आगे निकलना चाहते हैं एवं उसके अलावा कुछ नहीं सोचते हैं तो दैनिक जीवन की छोटी–छोटी बातें आप भूल जाएंगे।
- पगडंडी भी मिले तो क्या बुरा है, पहुँचने के लिए तो सिर्फ कदम को कदम से मिलाने की जरूरत है।
- जप साधना से कर्त्तव्य साधना श्रेष्ठ है।

प्रेमधारा

- क्रोध कार्य परिणाम के प्रति असंतोष है।
- कर्म के अलावा मनुष्य के हाथ में कुछ भी नहीं है।
- मनुष्य एक जादू चाहता है जिससे वह जो कुछ चाहे तत्क्षण पूरा हो जाए किन्तु ऐसा कभी नहीं होता है।
- चादर से बाहर पाँव फैलाओगे तो कष्ट होगा ही।
- गृहस्थाश्रम में रहते हुए साधु का आचरण करना बड़ा ही कठिन है।
- कलियुग में भगवान नंगों, भूखों एवं बेघरों के बीच निवास करते हैं।
- आपको भोजन देने का जो कारण है उसे भोजन कराकर खाओ, नहीं तो एक दिन भोजन के बदले कंकड़ पत्थर ही मिलेंगे।
- गलत तरीके से अर्जित धन एक दिन आपके बड़े कष्ट का कारण बनेगा।
- व्यापार एवं राजनीतिक लाभ–हानि के संदर्भ में ही जो निर्णय लिया जाए, वह मानवीय कभी नहीं हो सकता जो पूरे विश्व में हो रहा है।
- हम उसे ही बड़ा कहते हैं जिसे हर कोई बड़ा कह रहा है, इसमें आपकी क्या महानता है।
- बड़ों की तस्वीर बड़ा बनाकर एवं छोटे की तस्वीर बड़े के साथ उसे अत्यंत ही छोटा अर्थात दीन–हीन दिखाकर आज तक छापी जाती रही है– क्या यही हमारा बड़प्पन है ?
- जब समाज चर्चितों की पूजा करने लगे तो उसे गिरने से कोई नहीं बचा सकता है।

- जिस काल में सबसे कमजोर व्यक्ति के बारे में नहीं सोचा जाए, वही काल महाकाल का रूप धारण कर हिंसक हो जाता है।
- बड़ों का बड़प्पन अपना स्वादिष्ट थाल अपने आश्रितों की ओर बढ़ाकर एवं उसके थाल में पड़ा रूखा–सूखा अपने लिए ले लेने में है।
- जो अच्छी बात सोचे उस पर ईश्वर की कृपा है एवं जो अच्छा ही सिर्फ करे वह ईश्वर स्वरूप है।
- कर्ज एवं परदेश हमेशा ही कष्टदायक होता है।
- जो मित्र धनवान हो वह धन का सहयोग नहीं करे, जो मित्र बलवान हो वह बल का सहयोग न करे, तो मान लेना चाहिए कि वह आपका मित्र नहीं है।
- राजा को बड़े लोगों की नहीं, बल्कि पता कर के बड़े कार्यों में लगे लोगों की मदद करनी चाहिए तभी राज्य का विकास संभव है।
- कर्त्तव्यनिष्ठ राजा को वैसी खबरों का पता करते रहना चाहिए कि राज्य हित में कौन–कौन से कार्य हो रहे हैं और उन्हें कहीं कोई कठिनाई तो नहीं हैं।
- हम सुधर सकते हैं अगर अहसास अपनी गलती का हो जाय।
- आपकी गलती हमेशा निर्दोष को कष्ट देती है।
- गलती नहीं कर हम संसार के लाखों लोगों की श्रम शक्ति को बचा कर सृजन क्रान्ति ला सकते हैं।
- कुछेक लोगों की गलतियों को सुधारने के लिए विश्व के करोड़ों लोग लगे हुए हैं।
- एक व्यक्ति की चोरी को पकड़ने के लिए हमेशा ही एक हजार लोग लगे रहते हैं जो न खेती कर पाते, न उद्योग कर पाते, न विद्यालय और अस्पताल में कहीं काम कर सकते हैं।
- व्यक्ति को अपराध मुक्त किए बिना समाज एवं राष्ट्र का विकास संभव नहीं है।

- जिस देश में न्यायाधीशों एवं आरक्षियों को कोई काम नहीं मिले, वहीं की प्रजा सुखी हो सकती है।
- हमें आरक्षियों के संरक्षण में चलने वाले देश का नहीं बल्कि संस्कार एवं चरित्र से संरक्षित देश चाहिए।
- जो कार्य बड़ा करता हो एवं अपने दैनिक जीवन में साधारण ढंग से रहता हो वही बड़ा है।
- बड़े कार्यों का सबसे छोटा लाभ लेने वाला ही देश का भला कर सकता है।
- अच्छे को भी अच्छा पहले कुछ ही लोग कहते हैं।
- विचारों को व्याकरण से नहीं समझा जा सकता है।
- कुछ लिखना एवं बोलना चाहिए किंतु उससे ज्यादा जरूरी है आचरण से शुद्ध होकर ही बोले और लिखें।
- कार्य करने से पहले उसके प्रभाव अवधि के बारे में सोचो कि उस कार्य का प्रभाव कितने समय तक रहेगा।
- नित्य वैसे कार्य के बारे में सोचो जिसका प्रभाव न्यूनतम सौ वर्षों तक पृथ्वी पर रहे और यह एक वृक्ष लगाकर, एक विद्यालय, एक अस्पताल बनाकर पूरा कर सकते हो।
- हजारों वर्षों के बाद भी तुम सिर्फ प्रभु भक्ति के कारण ही याद किए जा सकते हो।

- अच्छे कार्यों के लिए उठाए जाने वाले कष्ट के कारण घर से बाहर वाले तक हो सकते हैं।
- कार्य पूरा होने का सुख हमेशा ही क्षणिक होता है।
- कार्य के लिए कार्य नहीं बल्कि महान विचार के लिए कार्य करो।
- अच्छे विचार को पढ़कर जाना जाता है किन्तु अच्छा कार्य बिना लिखे–पढ़े ही पूरी दुनिया में फैल जाता है।
- वह मन महान है जो दुखियों के बारे में सोचता हैं एवं कुछ करने के लिए आतुर रहता है।
- मैं संसार का सबसे बुरा व्यक्ति हूँ, क्योंकि मेरे सामने बुरा होता रहता है और मैं कुछ भी कर नहीं पाता हूँ।
- रक्त का रिश्ता हमेशा ही मायाग्रसित कर भ्रष्ट बनाता रहा है।
- कौन कहता है घृतराष्ट्र मर गया है। जो पिता पुत्र के गुनाहों पर पर्दा डाल रहा है वह घृतराष्ट्र ही तो है।
- जिस सत्य को समझना सबसे आसान है, उसे आचरण में लाना सबसे कठिन है।
- अगर मन में अच्छे विचार उठने लगे तो एक दिन अच्छे आचरण भी करने लगोगे।
- शब्द कठोर न निकले, यह बड़ा ही मुश्किल है।
- सुबह के समय शांति से रहो, दिन भर कार्य करते रहो, शाम को अपने दिन भर के कार्यों के बारे में विचार करो एवं रात्रि में सबकुछ ईश्वर पर छोड़ आराम करो।
- आचरण की जीत के बिना जीवन की हार ही है।
- युवाओं के कंधों पर होता है बच्चों एवं वृद्ध का भार।

प्रेमधारा

- जो सत्य की राह है वह प्रभु की राह है, जो विनय की राह है वह प्रभु का राह है, जो क्षमा की राह है वह प्रभु की राह है, जो दया की राह है वह प्रभु की राह है, जो न्याय की राह है वह प्रभु की राह है – इस पर चलने वाले प्रभु एवं मनुष्य का अंतर समाप्त कर उस प्रभु को प्राप्त कर लेते हैं।
- एक दिन सब को प्रभु का दर्शन होगा, इस दिन के इंतजार में ही जीव बार–बार जन्म एवं मृत्यु को प्राप्त करता है।
- प्रभु कल्पना नहीं हैं – वह एक सत्य स्वरूप है जो सबों के अन्दर वास करता है।
- प्रभु के अनुभव के बिना जीव को शांति नहीं मिल सकती है।
- प्रभु का मार्ग गरीबों की बस्ती से गुजरता है।

- प्रभु का मार्ग दुखियों के घर से शुरू होता है।
- प्रभु का मार्ग नंगों एवं भूखों की आँखों से देखा जा सकता है।
- हे मनुष्य! तुम जब प्रभु को ढूंढ़ने निकले थे तो वह तुम्हारे पड़ोसियों के घर में बैठा तुम्हारे लौटने का इंतजार कर रहा था।
- प्रभु की खोज में मैं पहाड़ों पर चढ़ा किन्तु पभु खाईयों में छिपे शोषितों के बीच लेटा था।
- हमने प्रभु को पाने के लिए आसन एवं ध्यान लगाया एवं हमारा प्रभु बच्चों की मुस्कान में छिपकर हम पर हँस रहा था।
- हम प्रभु को पाने के लिए मंदिरों के कीर्त्तन में झूम रहे थें और हमारा प्रभु मंदिरों की चौखट पर नंगा–भूखा पड़ा प्रसाद से पेट भरने का इंतजार कर रहा था।
- **हम प्रभु को पाने के लिए संतों की प्रशंसा में लगे थे एवं हमारा प्रभु हिंसक दस्यु बना सुधारने को चुनौती दे रहा था।??????????????????????????????????**
- घर के कोने में हमारे प्रभु माता–पिता के रूप में श्रद्धा के दो बोल सुनने को जब लालायित थे तब हम मंदिर में प्रभु की प्रशंसा में प्रशंसा एवं स्तुतियों के ऊँचे बोल लगा रहे थे।
- प्रभु के नाम पर खुद को कब तक ठगते रहोगे– जब कर्त्तव्य के रूप में प्रभु पास में खड़ा है।
- प्रभु विहीन संसार की कल्पना वैसी है जैसे पत्तों बिना हरियाली, जड़ बिना पौधा, हवा बिना सांस, गर्मी बिना अग्नि, शीतलता बिना बर्फ एवं पृथ्वी बिना घर।
- प्रभु ने कहा– जब भी तुम अच्छा सोचते हो, करते हो, तब मैं ही तुम्हारे बीच बैठा तुम्हारी प्रशंसा कर पूरे संसार में तुम्हारे अच्छा होने की खबर फैलाता हूँ।
- जब तुम्हें कुछ नहीं मिलता है तो रोते हो एवं जब वह मिल जाता है तो उसे संभाल कर नहीं रखते।
- जो पूर्व के दिए को संभाल कर रखेगा, उसे ही प्रभु आगे भी देगा।
- जब व्यक्ति, परिवार एवं समाज सब के सब रातों–रात धनी बनने के लिए व्याकुल दिखने लगे तो पृथ्वी का अंत निकट समझो।
- कलियुग में धन धर्म का साधन नहीं रह जाता है बल्कि धर्म भी धन कमाने का साधन बन जाता है।
- उस मन को प्रणाम करो जो हर पल दुखियों एवं गरीबों के बीच रमन करता रहता है।
- जो मृत्यु को जान चुका है वही एक दिन ईश्वर को भी जान पाएगा।
- दलाली जिस समाज एवं देश का पेशा बन जाए, उसे भ्रष्ट होने से कोई नहीं बचा सकता है।
- कष्ट से बचना है तो रिश्तेदारों को घर में मत बसाओ।

- गंधारी की तरह पत्नी होनी चाहिए, माँ कभी भी नहीं।
- जो पत्नी पति से एवं जो पति पत्नी से छुपाकर कार्य करे, वह रिश्तों के टूटने का इतन्जार करे।
- मुश्किल है एक महिला का मैके एवं ससुराल के प्रति न्याय करना।
- अगर भलाई का हृदय में ख्याल आए तो जितना जल्द हो सके उसे पूरा कर लेना चाहिए।
- कलियुग में जिसे छल–बल नहीं आता, उसे मंद बुद्धि का कहा जाता है।
- रिश्तेदार मरने पर आँसू बहाते हैं, किन्तु जीने पर उनके जीने के लिए उन्होनें क्या किया था, इस पर वे विचार कभी नहीं करते।
- अध्यात्म एवं व्यापार साथ–साथ नहीं चल सकते हैं।
- व्यापार को अध्यात्म के तरीके से चलाया जा सकता है किन्तु अध्यात्म को व्यापार के तरीके से नहीं।
- कुछ लोग प्रभावशाली लोगों के प्रभाव का अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करते हैं किन्तु खुद में एक भी अच्छे गुणों का विकास नहीं करते।
- कलियुग में ज्यादातर रोग आपसी सम्बम्धों में तनाव के कारण पैदा होते हैं।
- बातें करने में सबको आनंद आता है किन्तु काम करने में किसी–किसी को।
- खर्च का हिसाब देने में जो कर्मचारी विलम्ब करे, समझो वह बेईमानी का रास्ता ढूँढ़ रहा है।
- कलियुग का अंत जितना करीब आएगा, रातो–रात अमीर बनने की बीमारी भी तेजी से बढ़ेगी।

प्रेमधारा

- बहुतों से आगे, बहुतों से पीछे – क्या जिन्दगी यही है ? किससे आगे, किससे पीछे ?
- इंसान को जब मिलता है तो झुक कर सलाम करता है एवं मिलते ही वह पीछे मुड़कर भी नहीं देखता।
- अच्छों एवं बुरों में बँटी है यह दुनिया। हर कोई अपने अुनसार अपना पक्ष चुन लेता है।
- संसार में सर्वोत्तम कुछ भी है तो वह है सवेरा।
- संसार का सत्य यह है कि बुरा से बुरा व्यक्ति भी सवेरा होने का इंतजार करता है।
- संसार के समस्त निर्माण ने कभी–न–कभी सुबह होने का इंतजार किया था।
- अगर कुछ पाना है तो हर दिन सुबह होने का इंतजार करो।
- संसार की सभी विभूतियाँ सुबह की देन है।
- मैं बूढ़ा नहीं हुआ हूँ बल्कि मेरा प्रभु से मिलने का समय आ गया है, तुम जो दोगे मुझे वही मैं उस प्रभु को पहुँचाऊँगा।

प्रेमधारा

- पता नहीं कितनी चोट खाई हमने तुम्हारी राह बनाने के लिए और तुम्हें एक बार ठोकर लगी तो राह ही बदल दिए!
- बड़े काम के लिए बड़ी जिन्दगी चाहिए, बड़ी जिन्दगी के लिए लम्बी सांस चाहिए, लम्बी सांस के लिए शारीरिक श्रम करना चाहिए, शारीरिक श्रम के लिए व्यायाम नहीं घर का काम करना चाहिए।
- काश कोई राजा नहीं होता तो शायद न होती कोई दीवारें, न होते आपस के खून खराबे, न होते धमाके, न होती हजारों मौतें– इतना सब कुछ जानकर भी हमने आज तक बिना राजा के जीना नही सीखा।
- उसी दिन दुनिया की सबसे बड़ी जीत होगी जिस दिन हमें जीने के लिए न राज्य की सीमा और न राजा की जरूरत होगी।
- दुर्लभ है दान के लिए धन कमाना।
- एक काम पूरा किए बिना ही दूसरा काम प्रारम्भ कर देना – परेशानी का कारण बन सकता है।
- सफलता के लिए छोटी–छोटी बातों का ध्यान रखना चाहिए।
- असामान्य कार्य करना एवं सामान्य लोगों की तरह रहना यह महापुरूषों का ही गुण है।
- निर्माण बिना धैर्य के संभव नहीं है।
- हर कार्य को अपना अंतिम कार्य समझ कर जो करेगा उसका परिणाम ही बेमिसाल हो सकता है।
- बीते कल का विज्ञान एवं आज के विज्ञान में अंतर यही है कि एक पुल समन्दर में लाखों साल बाद भी मिलता है एवं आज का पुल निर्माण के बाद कभी भी टूट सकता है।
- प्रकृति प्रेम के बिना ईश्वर प्रेम संभव नहीं है।
- धूप जब प्रचंड हो, ठंड जब बर्फ हो, वर्षा जब छुपने की जगह न दे, तब भी जो सब कुछ कर रहा हो, पूरी प्रकृति से अकेले लड़ रहा हो, वही गरीब है, धरती का नसीब है।

प्रेमधारा

- जिस दिन अपना संपूर्ण मन किसी को दे दोगे उस दिन ही वह तुम्हारा हो जाएगा।
- प्रभु को प्राप्त करना चाहते हो और पल दो पल के लिए भी चित्त उसमें तुम्हारा ठहर नहीं पाता है!
- सभी जीवों में मनुष्य ही है जो सबकुछ प्राप्त कर लेने की क्षमता रखता है।
- पृथ्वी पर सूर्य को निगलने का प्रमाण है, आकाश में उड़ने का प्रमाण है, पहाड़ों पर चढ़ने का प्रमाण है, समन्दर लाँघने का प्रमाण है, समन्दर पीने का प्रमाण है, फिर भी आलसी एवं कायर पुरूष जीवन भर असंभव–असंभव की रट लगाते रहते हैं।
- आओ कुछ ऐसा करें कि लिखने को धरती भी छोटी पड़े।
- आओ हम कुछ ऐसा करें कि धरती तो धरती आकाश भी छोटा पड़े।

प्रेमधारा

- ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किए बिना विद्या एवं स्वास्थ्य प्राप्त करना असंभव है।
- संसार मिलने – बिछुड़ने का एक अहसास है।
- कम श्रम में ज्यादा अर्जित किया गया धन मनुष्य को पथ भ्रष्ट कर देता है।
- अपनी संतान की गलती जिस माता को नहीं दिखती है वह अपनी संतान के लिए गढ्ढा ही खोद रही है।
- आपके बच्चों से अगर अगल–बगल वालों को कष्ट पहुँच रहा हो एवं आप अपनी संतान की फिर भी प्रशंसा ही कर रहे हों तो एक दिन आप बड़े कष्ट को झेलने वाले हैं।
- मनुष्य अपना बुरा जितना कर सकता है उतना दूसरों का नहीं।
- अपनी भलाई, दूसरों की भलाई से शुरू होती है।
- एक ही बात को बार–बार दुहराना सामने वाले को ऊबाऊ बना देता है।
- अपने आस–पास को सजाकर रखो, एक दिन तुम्हारी पूरी जिन्दगी खिल उठेगी।
- हम खुश रहना चाहते हैं किन्तु दूसरों को खुश रखे बिना यह संभव है क्या ?
- मृत्यु के बाद हम मरे व्यक्ति की गलतियों को भूल उसकी प्रशंसा में लग जाते हैं किन्तु जिसकी गलतियों को हम नहीं भूलते, वे मनुष्य नहीं दानव ही हो सकते हैं।
- अनुयायी हमेशा ही असुविधाओं के बीच से निकलता है एवं नौकर सुविधाओं के बीच से।

प्रेमधारा

- प्रभु ने हमें जो कुछ दिया वह अपने पास बिना रखे दिया, जैसे – सूर्य की रोशनी, नदी का पानी, हवा का भंडार आदि किन्तु हमने जब भी किसी को दिया तो अपने पास रख कर ही दिया।
- प्रभु ने हमें जो कुछ दिया, उसे थोड़ा ही समझा, इसलिए हम हमेशा अशांत रहे।
- प्रभु ने हमारे रहने के लिए हमें पूरी पृथ्वी दी और हमने उसे बाँट कर देश बना लिया।
- देश के लिए जीना अच्छी बात है, किन्तु देश बनाने की घटना दुनिया की सबसे बुरी घटना है।
- युद्ध तो देश के प्रति अहंकार एवं स्वाभिमान के बीच का संघर्ष मात्र है।
- जब तक देश की कल्पना साकार होती रहेगी, युद्ध भी होता रहेगा।
- अच्छा एवं बुरा दोनों की ही पहचान कर्मों से ही होती है।
- कर्म वही करो जो सभी जीवों के हित में हो।
- जैसे अंधों को कुछ भी नहीं दिखता, प्रभु वैसे ही भक्तिहीन प्राणियों को नहीं दिखते।
- विश्वास रखो, एक दिन प्रभु तुम्हें ढूँढ़ते हुए पहुँचेंगे और उस दिन सिर्फ तुम्हारी भक्ति ही काम आएगी।
- जो वक्त प्रभु के संस्मरण में बीते, वही वक्त है।
- प्रभु की याद में सारा शहर रोशन था और प्रभु दूर झोपड़ी में अपने दीपक का बिना तेल लिए शहर से वापस लौट रहा था।
- जब प्रभु को रथ पर हीरे मोती से सजाकर शहर में घुमाया जा रहा था तब प्रभु खदानों में भूखा पत्थर तोड़ रहा था।

- हे प्रभु को ढूँढ़ने वाले! प्रभु भूखों की भूख में, नंगों के कपड़े में, जाड़े की ठिठुरन में, बीमारों की चीख में, बच्चों की सहजता में, अपंगों की वैशाखी में छिपा बैठा है और तुम इन सबों को छोड़ अपने अहंकार को ढूँढ़ने में लगे हो।
- सम्पूर्ण सृष्टि के राजा ने अपनी प्रजा के लिए सब कुछ दिया एवं पृथ्वी का राजा उसकी दी हुई चीज को अपनी प्रजा तक पहुँचा तक नहीं पाता है।

प्रेमधारा

* अपने मतलब के लिए आपकी प्रशंसा करने वाले ही आपको मिलेंगे– इनसे सावधान रहें।
* जितना नुकसान अपनों ने किया है, उतना दूसरे कभी नहीं करेंगे।
* नुकसान का खतरा सिर्फ अपनों से रहता है।
* हमने भारत में आज तक अपने कर्मचारियों को राष्ट्र का अनुयायी नहीं बनाया, जिसका परिणाम भ्रष्टाचार है।
* भ्रष्टाचार कम श्रम करके ज्यादा धन कमाने वालों की देन है।
* श्रम के अनुपात में फल प्राप्त करने की इच्छा रखने वाली संस्कृति ही किसी देश को ईमानदार बना सकती है।
* **'सत्य'** राष्ट्र का धर्म बने, तभी हम आदर्श राष्ट्र की कल्पना साकार कर सकते हैं।
* संसार की भलाई सिर्फ सत्य द्वारा ही की जा सकती है। बाकी सभी झूठे लोगों का छलावा है।
* सत्य हम सबों का इंतजार कर रहा है कि कब हम उसे अपनाएंगे।
* वक्त पर नहीं किए गए कार्य के नुकसान के बदले बाद में बहुत अच्छे ढंग से किए गए कार्य के परिणाम से भी उसकी भरपाई नहीं की जा सकती है।
* समय से ज्यादा महत्वपूर्ण संसार में कुछ भी नहीं है।
* समय के महत्व को समझे बिना सफलता के मंत्र को नहीं समझा जा सकता है।

* समय के महत्व का मंत्र ही सफलता का मंत्र है।
* समय को समझो, सफलता को पाओ।
* प्रशंसा हमेशा ही किसी कार्य विशेष के लिए मिलती है।
* एक कार्य के लिए प्रशंसा पानेवाला दूसरे कार्यों के लिए शिकायत का पात्र भी बन सकता है।

* सत्य प्रशंसा एवं शिकायत करने वाले ही आपके सच्चे मित्र हैं, किन्तु ऐसे मित्रों की संख्या दुर्लभ है।
* क्या आप सत्य बोलते हैं? अगर नहीं तो राष्ट्र की भलाई तो दूर, आप अपनी भलाई भी नहीं कर रहे हैं।
* आप की भलाई कोई कर सकता है तो वह है सत्य, सिर्फ सत्य।
* करोड़ों शब्दों को बोलने, लिखने, पढ़ने एवं सुनने की रूचि रखने वाला समाज एवं देश मुक्त हो सका है क्या? सुख एवं आनंद का रास्ता सिर्फ सत्य से शुरू होता है एवं सत्य में ही विलीन हो जाता है।
* सत्य के अतिरिक्त सब कुछ छलावा है।
* हजारों लोगों वाली सत्संग सभा का भी विषय आज सत्य नहीं रहा है।
* सत्य के अतिरिक्त सब कथा है जो बच्चों को अच्छी लगती है।
* हजारों जन्मों तक, लाखों प्रयास के बाद भी सत्य के अतिरिक्त, संसार की भलाई दूसरा कोई नहीं कर सकता है।
* मैं सत्य को धारण करने एवं करवाने के लिए आया हूँ।
* मैं जान गया हूँ कि पृथ्वी की भलाई सिर्फ सत्य को स्वीकारने एवं धारण करने में है।
* क्या आप सत्य को अपनाना चाहेंगे ?
* धर्म का सबसे सरल सूत्र है सत्य जिसे धारण करने के बदले में हम सबकुछ धारण करते हैं।
* जब संसार होता है, और नहीं होता है, तब भी पाँचों तत्व सत्य रूपी शब्द में ही विलीन रहते हैं।

* यह कल्पना नहीं बल्कि सत्य है कि सृष्टि के आदि एवं अंत में संपूर्ण सृष्टि सत्य में ही समाहित रहती है।
* जिस दिन तुम सत्य का साक्षात्कार करोगे वह तुम्हारी जिन्दगी का सबसे बड़ा दिन होगा।
* सत्य शब्द होते हुए भी सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड है, ईश्वर है, और इसे अनुभव किया जा सकता है।
* सत्य अकेले उठता है, अकेले बैठता है, अकेले चलता है क्योंकि उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता है।
* जहाँ सत्य खड़ा होता है वहाँ सभी बैठ जाते हैं, जहाँ सत्य बैठता है वहाँ सभी विश्राम करते हैं, जहाँ सत्य चलता है वहाँ सभी उसके पीछे हो जाते हैं।
* सत्य की बराबरी नहीं की जा सकती है। हम सिर्फ उसके साथ हो सकते हैं।
* सत्य को समझना उतना ही आसान है जितना बच्चों की मुस्कान को, फिर भी कुछ लोग कहते मिलेंगे कि सत्य को समझना बहुत ही मुश्किल है।
* सत्य को नहीं समझने वाले लोग नहीं समझने का नाटक करते हैं किन्तु दुखी होने पर वे ही गिड़गिड़ाते मिलेंगे।
* सत्य संसार को समझने की शक्ति देता है।
* सत्य संसार को अपने पीछे–पीछे चलाता है।
* अगर कोई अच्छी बात ही कहना चाहते हो तो **'सत्य'** कहो।
* हम जिन्दगी भर सत्य के अलावा सब कुछ बोलते रहते हैं।
* सत्य के बारे में बोला गया हर शब्द सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की शक्ति लिए खड़ा रहता है।
* उस दिन दुनिया का सबसे अच्छा दिन होगा जिस दिन सत्य सबकी जुबान से बोला जाएगा।
* प्रभु की सबसे अच्छी प्रार्थना सत्य को स्वीकारने एवं अपनाने में हैं।
* सत्य के अलावा प्रभु किसी अन्य प्रार्थना को नहीं सुनता है।

* सत्य प्रभु का सबसे प्रिय शब्द है जिसे अपनाने के लिए वह हमें सब कुछ देता रहता है।
* सत्य का जो संग है वही सत्संग है।
* सत्य के अभ्यास के बाद किसी और अभ्यास की जरूरत नहीं होती है।
* लोग सत्य नहीं अपनाते एवं झूठी कथाओं को सुनने में, कहने में अपनी जिन्दगी ब्यर्थ गँवाते हैं।
* सत्य महौषध है।
* सत्य महायोग है।
* सत्य को छोड़ने पर न औषध काम आती है, न योग, न प्रभु के नाम पर चलने वाली अनंत कथा।
* हे प्रभु के नाम पर जुटने वाले लाखों लोग! तुम्हारे प्रयास से संसार का एक घर भी आदर्श नहीं बन पाया, फिर संसार को आदर्श कैसे बनाओगे! वह तो सत्य को छोड़ने से पहले ही हजारों, लाखों मील पीछे छूट गया है।
* आओ अपना भ्रम तोड़ो – सत्य से संसार एवं ईश्वर दोनों को ही हँसते–हँसते प्राप्त करो।
* यह जानते हुए भी कि तुम्हें एक दिन जाना होगा, फिर भी मृत्यु के डर से मारे–मारे फिर रहे हो, नित्य नए झूठ अपना रहे हो।
* आप महान तो बनना चाहते हैं किन्तु महान लोगों का कोई भी आचरण अपनाना नहीं चाहते हैं।
* आप विद्वान बनना चाहते हैं किन्तु अध्ययन नहीं करना चाहते हैं।
* आप धनवान बनना चाहते हैं किन्तु धनवानों के द्वारा किए गए श्रम–सिद्धांत को व्यवहार में उतारना नहीं चाहते हैं।
* आप खिलाड़ी बनना चाहते हैं किन्तु सूर्योदय से पहले उठना तक नहीं चाहते हैं।
* आप धार्मिक बनना चाहते हैं किन्तु कर्तव्य के लिए कोई भी त्याग नहीं करना चाहते हैं।
* आप प्रशंसा तो प्राप्त करना चाहते हैं किन्तु कोई भी प्रशंसनीय कार्य करना नहीं चाहते हैं।

* आपकी मंजिल अभी बहुत दूर है और आपकी आँखों ने अब तक सही वक्त पर बिछावन छोड़ने तक का भी अभ्यास नहीं किया है।
* सबेरे जागो, सबेरे पाओ।

प्रेमधारा

* प्रयास एक ऐसा मंत्र है जिसे बार–बार दुहराते रहने से सारे कार्य पूरे होते हैं।
* सभी मंत्रों का प्रभाव शून्य हो जाता है जब तक प्रयास रूपी मंत्र को शब्द रूपी मंत्र के साथ नहीं जोड़ा जाए।
* असहनीय कठिनाइयों के आने के बाद भी सहजता जिस मनुष्य का साथ नहीं छोड़ती है वही एक दिन परमेश्वर पुत्र के रूप में जाना जाएगा।
* मृत्यु दंड देने वाले को भी जो क्षमा करता है वही परमेश्वर पुत्र के रूप में जाना जाएगा।
* सत्य स्वरूप है एवं क्षमा शक्ति जिसे सिद्ध कर लेने पर किसी अन्य सिद्धियों की आवश्यकता नहीं रह जाती है।
* चाहते हो हर युग में तुम्हें याद किया जाता रहे और इसके लिए राज्य तो राज्य छोटा से छोटा त्याग भी तुम नहीं करना चाहते हो।
* सेवक के धर्म को अपनाने वाला एक दिन संपूर्ण पृथ्वी का स्वामी बन जाता है।
* ईश्वर नाम स्मरण से बड़ा सुख और किसी में भी नहीं है।
* खुद को दुख से निकालने के लिए भी पहले तुम्हें दूसरों को दुख से निकालना होगा। जैसे– सुग्रीव को भगवान ने दुख से दुख से निकाला।
* एक दिन किसी को पानी पिलाते हो तो उसके बदले में सारी जिन्दगी उससे अपना गुण गान करवाना चाहते हो एवं उस परमात्मा ने तुम्हारे लिए मरूभूमि में भी दरिया निकाला, पत्थर पर भी फसल उपजाई, रात में भी तुम्हें भटकने से

बचाने के लिए तारों का सहारा दिया। और उसके गुणगान में कुछ पल भी तुम नहीं निकाल पाते।

* हम सभी अपनी आत्मा को खोए हुए लोग हैं जो हाथ, पाँव जैसे अंगों के श्रृंगार के साधनों को जुटाने में ही सारी जिन्दगी गुजार देते हैं।
* अनुभव ही करना है तो अपनी आत्मा का अनुभव करो, जो सभी अनुभवों में श्रेष्ठ है।
* हम अपनी कल्पनाओं की दुनिया को सजाने सँवारने में दिन–रात पसीना बहाते रहते हैं और एक दिन आत्मा के अभाव में अचानक सबकुछ उदास हो उठता है।
* हम हर पल वस्तुओं की सुरक्षा के लिए चिंतित रहते हैं और हमारी आत्मा हमारी इस मूर्खता पर हँसती रहती है।
* आत्मा संसार का सबसे बड़ा न्यायाधीश है जो गलत फैसला कभी भी नहीं देती है।
* अगर बातें किसी की माननी ही है तो अपनी आत्मा की मानो।
* परमात्मा के सबसे करीब एवं परमात्मा जैसा सिर्फ आत्मा ही है।
* कठिनाइयों से ही होकर गुजरता है, सफलता का मार्ग।
* जब तुम शहर के लिए चलते हो तो शहर ही पहुँचते हो, फिर जिस दिन ईश्वर के लिए चलोगे, उस दिन ईश्वर के पास कैसे नहीं पहुँचोगे।
* जो जहाँ के लिए चलता है, वह वहीं पहुँचता है।
* हममें से कितने परमेश्वर के पास पहुँचने के लिए चलते है ? फिर तुम्हें ईश्वर नहीं मिला तो क्या आश्चर्य है!
* वे सभी अज्ञानी ही हैं, जो ईश्वर का आकार–प्रकार तय करने में लगे हैं।
* चौबीसों ही घंटे तो बाहर की चीजों को प्राप्त करने एवं उसे संभालने में लगे रहते हो, इसलिए एक दिन तुम अपनी आत्मा को ही खो देते हो।
* तर्कों से अगर ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता तो भगवान के सभी भक्तों के हाथ में तर्कशास्त्र की किताबें होती।
* मंदिर जाने के रास्ते में वृद्ध एवं रोगी मिल जाए तो पहले उसकी मदद करो।
* पूछो भगवान से कि वे दुखियों के बीच रहते है या मंदिरो की सजावट में।
* जिस भगवान ने पृथ्वी पर दुखियों के बीच रहकर उनके कष्टों को दूर कर अपना अवतार काल बिताया, उसी भगवान को मानने वाले दुखियों से घृणा कर भला उस भगवान को कैसे प्राप्त कर सकेंगे ?
* प्रत्येक कथा का श्रोता, कथा के उद्देश्य को मानने की बाध्यता से मुक्त होकर सुनता है। इसलिए उसे कोई लाभ नहीं होता।

* कथा अवश्य सुनो किन्तु जो तुम्हें अच्छी लगे उस कथा में, उसे अवश्य करो, तब जाकर कथा में जाने का लाभ है।
* थके मन को जैसे बिछावन सबसे प्रिय है, वैसे ही प्रभु को प्राप्त करने की इच्छा रखने वालों के लिए नाम प्रिय होता है।
* नाम महिमा का ऐसा प्रभाव है कि कोई भगवान को राक्षस कहकर पुकारे तो दया, करूणा, वरदान विहीन पुरूष ही उसके सामने उभर कर आएगा।
* नाम प्रभाव के बारे में क्या कहना है– जब भी तुम्हें किसी को बुलाना होता है तो नाम ही तो लेते हो और वह आ जाता है।
* बार–बार नाम लो, एक दिन तुम्हारा प्रभु तुम्हारे पास खड़ा मिलेगा।
* नाम लेकर जो कार्य करने के लिए तुम किसी को पुकारते हो, वही वह करता है तो भला प्रभु को जिस कार्य के लिए पुकारोगे, वह कार्य तुम्हारा कैसे नहीं होगा।
* अगर तुम्हें कुछ भी करने नहीं आता है तो नाम जपने का कार्य शुरू कर दो। एक दिन तुम्हें सब कुछ आ जाएगा।
* प्रभु बड़ा बनकर समन्दर लांघते हैं एवं छोटा बनकर किसी के अहंकार को चूर करते हैं।
* प्रभु जिसे चाहते हैं, अपने जैसा बना देते हैं।
* प्रभु ने कहा हम तुम्हें अपने जैसा बनाना चाहते हैं और तुमने कहा हमें अभियंता बना दो।

प्रेमधारा

* शिक्षा का भौतिक जीवन में पद एवं संसाधनों को जुटाने वाली व्यवस्था के रूप में प्रचारित होना ही इसे सत्य एवं संस्कार से अलग कर दिया है जिसके परिणाम स्वरूप भ्रष्टाचार समाज एवं देश में फैल रहा है।
* जो विचार एवं प्रयास देश को ईमानदार नहीं बनाते हों, उस पर पुनर्विचार करना चाहिए एवं उसे छोड़ देना चाहिए।
* ईमानदार देश में ही प्रजा सुखी रह सकती है।
* अपवाद को छोड़कर भारत के लोग किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले देश के हित–अहित के बारे में विचार करते ही नहीं हैं।
* किसी एक व्यक्ति के कारण परिवार, समाज, संस्था एवं देश को पहुँचा नुकसान उसके गैर जिम्मेदार व्यक्तित्त्व के कारण ही होता है।

* आज के कार्य को कल पर टाल देना यह बहुसंख्यक लोगों के आचरण में है।
* अगर आप किसी को कुछ दे रहे हैं तो उसे सुंदर तरीके से विनम्रता पूर्वक ही दें।
* हमेशा ही सामनेवाले से माँगते रहना एवं उसके द्वारा दी गई जवाबदेही को पूरा न करना बेईमानी है।
* जो तुम्हारे वश में है उसे तुरंत पूरा कर अपने श्रेष्ठ जनों को प्रसन्न करो, इससे तुम्हारी आयु, विद्या, यश और बल बढ़ेंगे।
* सही उत्तराधिकारी के रूप में पुत्र, शिष्य एवं मित्र जो कोई भी आपको प्राप्त होता है वही आपके जीवन की सही कृति है।
* सही उत्तराधिकारी प्रभु कृपा बिना प्राप्त नहीं हो सकता है।
* वे लोग भाग्यशाली हैं, जिनके द्वारा छोड़ा गया कार्य उनके जीवन के बाद भी पुत्र, शिष्य एवं मित्र द्वारा सिर्फ पूरा ही नहीं किया जाता है बल्कि पूर्व से भी अच्छे ढंग से आगे बढ़ाया जाता है।
* सही उत्तराधिकारी के अभाव में पिता का पिता होना एवं गुरु का गुरु होना नहीं रह जाता है।
* पिता एवं गुरु की सच्ची कृति अपने उत्तराधिकारी के निर्माण के बिना पूरी नहीं होती है।

* सही उत्तराधिकारी प्राप्त कर पिता, गुरु एवं राष्ट्र धन्य–धन्य हो उठता है।
* सही उत्तराधिकारी का निर्माण सिर्फ आपका निर्मल चरित्र ही कर सकता है।
* जो राष्ट्र शिक्षा एवं स्वास्थ्य के लिए उचित वातावरण का निर्माण नहीं कर पाता है वह विकास के सपने को कभी भी पूरा नहीं कर पाएगा।
* राष्ट्र का निर्माण चरित्र निर्माण के बिना कभी भी पूरा नहीं हो सकता है।
* किसी भी समाज एवं राष्ट्र के निर्माण के पीछे उसका चरित्र ही होता है।

* राष्ट्र द्वारा निर्धारित कार्यक्रम में चरित्र निर्माण पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।
* चरित्र निर्माण हेतु महापुरूषों के जीवन को अध्ययन–अध्यापन में डालने के साथ–साथ इतिहास को सत्य रूप में प्रस्तुत कर उसे अभ्यास द्वारा अपनाना चाहिए।
* कौन कितना सफल है वह उसकी कल्पना शक्ति पर निर्भर करता है।
* कल्पना शक्ति ही सभी शक्तियों का मार्गदर्शन करती है।
* कल्पना के अभाव में ही घर में अनाज रहने पर भी भूखे सोना पड़ सकता है।
* सुबह उसी के घर में हलचल रहती है जो शाम को सुबह की कल्पना किए बिना ही निश्चिंत हो जाता है।
* पृथ्वी ईश्वर की श्रेष्ठ कल्पना है जहाँ करोड़ो वर्षो से वही हो रहा है, जो सृष्टि के आदि में सोचा गया था। हममें से हर कोई अपने भविष्य का धरातल तो ढूँढ़ रहा है किन्तु कल्पना के बिना हम सब कुछ पाकर भी अव्यवस्थित हैं।
* विभिन्नताओं के लिए है यह सृष्टि, यह पृथ्वी भी ईश्वर की कल्पना का ही जादू है जो यह व्यवस्थित है। आओ, हम भी कल्पना करे, कार्य करें और अपना हर पल व्यवस्थित करें।
* हर सुबह अच्छी हो क्योंकि वह सुबह दिन की शुरूआत है, इसलिए प्रत्येक शाम एवं रात्रि को सभी बिन्दुओं पर विचार करो जिसे तुम्हें सुबह में करना है, फिर सुबह सुहावनी हो जाएगी।
* अपनी सुबह को सुहावनी बनाओ, पूरी जिन्दगी सुहावनी हो जाएगी।
* अपनी सुबह को सँवारो, पूरी जिन्दगी सँवर जाएगी।

* जिन्दगी में अगर अनंत ऊर्जावान बनना चाहते हो तो उगते हुए सूर्य के स्वागत से प्रत्येक सुबह की शुरूआत करो।
* गृह कार्यो को तनाव रहित होकर, अति उत्साहित होकर करने में योग का गूढ़ रहस्य छिपा है।
* गृहस्थाश्रम के नित्य घरेलू कार्यो में आसन–प्राणायाम का अभ्यास है।

* अप्रशंसनीय शब्दों को सुनना एवं प्रशंसनीय कार्य करना ही प्रत्याहार है।
* विपरीत विचार वालों के साथ रहते हुए अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लेना ध्यान है।
* पूरी पृथ्वी ही विरूद्ध में क्यों न खड़ी हो जाए, फिर भी ईश्वर को अपने कार्यों के साथ आत्मसात कर लेना ही समाधि है।
* यात्रा सिर्फ प्रभु की ओर बढ़ने वाला कदम ही है।
* आज तक संसार के सभी शास्त्रों ने पृथ्वी पर रहने के लिए ही नियम बनाए हैं, स्वर्ग एवं नरक के लिए नहीं। इसलिए हे मनुष्यो! ध्यान एवं समाधि के उस भ्रम से मुक्त हो जाओ जो तुम्हें इसे करनेवाले को आश्चर्य रूप में देखने के लिए बाध्य कर तुम्हें हीन बनाता आया है।
* पृथ्वी पर ही जो आँख खोलते हुए चलता है, बोलता है, करता है और कभी भी विचलित नहीं होता वही मनुष्यों में श्रेष्ठ होकर ईश्वर तुल्य दिखने लगता है। ??
* शक्ति का ध्यान कर शक्ति, ज्ञान का ध्यान कर ज्ञान, ईश्वरस्वरूप का ध्यान कर ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है।
* कर्म न ध्यान से अलग है और न ही समाधि से, इसलिए हे मनुष्य! श्रेष्ठ कर्मों को करने वाले बनो। एक दिन सर्वश्रेष्ठ बन जाओगे।
* छोटी–छोटी लाठियों का संग्रह एक बोझा बनता है, उसी प्रकार सद्कर्मों के संग्रह से मनुष्य एक दिन सर्वश्रेष्ठ बनता है।
* एक ही दाना का कमाल है कि आज संसार के सभी गोदाम अनाज से भरे पड़े हैं। इसलिए सुकर्मों के एक बीज ही अपने जीवन में बोने की जरूरत है।
* बिना जुनून का कोई कार्य पूरा नहीं हो सकता है।

* अच्छा सहयात्री यात्रा को जिस प्रकार सुखद बना देता है, उसी प्रकार लक्ष्य के लिए साथ चलने वाले अच्छे मित्र लक्ष्य प्राप्ति की कठिनाइयों को आसान कर देते हैं।

* घर के दैनिक कार्यों को अपने सेवकों पर छोड़कर एवं कार पर चढ़कर तथाकथित संतों की सभा में जाकर योगाभ्यास करना एवं करवाना मन के अहंकार एवं भ्रम के सिवा कुछ भी नहीं है।
* कौन–सा आसन या प्राणायाम है जो घर के दैनिक कार्यों को करने से पूरा नहीं होता ?
* संसार की महान कथा है– सत्य के लिए जीना, सत्य के लिए मरना। बाकी सब मनोरंजन है।
* मन जहाँ लगा रहता है, उसे मनोरंजन कहते हैं जो वासनाओं के इर्द–गिर्द सबसे ज्यादा प्रसन्न रहता है। क्या इसे ही मनोरंजन मान लिया जाए ?
* मन परमात्मा एवं परमार्थ में लगाने वाले गुरु की पूछ से बाहर हो गया है एवं उसका स्थान कामी एवं लोभी पुरूषों ने धनार्जित करने के उद्देश्य से ले लिया है।
* आज चर्चाओं के द्वारा महान बनने एवं बनाने की नई तरकीब ने अपना स्थान बना लिया है जिसके परिणामस्वरूप समाज दिशाहीन होता जा रहा है।
* ऐसे संसार का सभी कार्य दुर्गम है किन्तु काम वासना पर विजय प्राप्त करना प्रभु की प्रत्यक्ष कृपा का ही परिणाम है।
* ऐसे तो वासनाएँ दुश्मन के द्वारा दी जानेवाली परिणाम ही दिया करती है किन्तु इसे मित्र बना हम ऊर्जा के स्रोत सूर्य बन सकते हैं।
* वासनाओं से युद्ध नहीं मित्रता स्थापित कर ही जीत हासिल की जा सकती है, जैसे तलवार से लड़ने वाला कम या ज्यादा घायल होकर रहेगा किन्तु उसे मित्र बनाकर हम अपने सिरहाने के पास रखकर आराम से सो सकते हैं।
* भगवान ने बुद्धि का प्रयोग मात्र दुष्टों के द्वारा दी जानेवाली पीड़ा से बचने के लिए दिया हैं किन्तु सामान्य जीवन में जो इसका प्रयोग करता रहता है वह एक दिन स्वयं भी दुष्ट हो जाता है।

प्रेमधारा

* बेईमानी का सबसे बुरा प्रभाव ईमानदार लोगों पर पड़ता है जो उसे सुधारने की बजाय खुद ही बेईमान हो जाते हैं।
* भारत की ईमानदारी किताबों की बात होकर रह गई है।
* भारत में ईमानदारी बेईमानों के काज–बटन की तरह कुर्त्ते की शोभा होकर मात्र रह गई है।
* हमें दूसरों की बेईमानी तब तक ही दिखती रहती है जब तक बेईमानी करने का खुद को मौका नहीं मिल जाता है।
* भारत एक ही था किन्तु हमारे देश को चलाने वालों ने इसे जातियों का, धर्मों का, क्षेत्रों का एवं व्यक्तियों के भारत के रूप में बांट दिया है।
* हे भारत के युवा मनीषियों! जातियों एवं भाषा के नाम पर तार–तार हुए, चिथड़े हुए इस भारत को अपनी ईमानदारी एवं पुरूषार्थ से बचाओ नहीं तो यह सज्जनों के लिए रहने लायक जगह नहीं रह जाएगी।
* संस्था एवं देश को ईमानदार लोगों का मिलना अब भाग्य की ही बात बनकर रह गई है।
* भारत में अपने कर्मचारियों की बेईमानी से हुए घाटे को देश एवं संस्था अपने मुनाफे की राशि को बढ़ाकर पूरा करता है।
* देश, उद्योग एवं संस्था के लोग ईमानदार हो जाए तो प्रत्येक चीज के लिए किया जाने वाला भुगतान आधा हो जाएगा एवं राष्ट्र की सभी चीजें सस्ती हो जाएंगी।
* महँगाई का कारण बेईमानी द्वारा चल रहा देश है।
* महँगाई तब तक नहीं रूकेगी जब तक लोग ईमानदार न होंगे।
* विकास की दर 10 गुणा बढ़ सकती है, अगर बेईमानी शून्य पर पहुँच जाए।
* जिस कार्य में जितना समय लगना चाहिए उससे ज्यादा लगने पर दक्षता की कमी या बेईमानी है और दोनों ही स्थितियों में आदमी को उस कार्य से मुक्त कर देना उचित होगा।
* जिसके जीवन में एकांत में बात करने वाला विषय ज्यादा हो, वह ईमानदार हो ही नहीं सकता है।
* एकांत वार्त्ता लोग या मानवता की भलाई के लिए नहीं बल्कि हमेशा ही खुद को बचाने के लिए होती है।
* प्रभु ने एकान्त से मौन का संबंध बनाया है जो प्रभु के चिंतन–मनन मात्र के लिए है।
* प्रभु चिंतन के अलावा एकांत हमेशा ही घातक सिद्ध होगा क्योंकि वार्त्ता का विषय हमेशा ही दूसरों को नुकसान पहुँचाने के लिए होता है या नुकसान पहुँचाने में असमर्थता की स्थिति में निंदा तक सीमित रह जाता है।
* जो एक झूठ बोल सकता है वह दूसरा झूठ भी बोल सकता है।
* जिससे आप अपने बचाव के लिए झूठ बोलवाना चाहते हैं वही एक दिन आपको नुकसान पहुँचाने के लिए हजारों झूठ बोलेगा।
* झूठ कभी भी किसी के लिए भी लाभप्रद नहीं हो सकता है, यही कारण है कि आज हर कोई नुकसान का खतरा महसूस करता रहता है।

प्रेमधारा

* बहुत कठिन है बुरे की बुराइयों को भूलकर उसे प्यार देना किन्तु महान बनने का और दूसरा रास्ता भी तो नहीं है।
* एक दिन जब हम नहीं होंगे तब भी यह दुनिया होगी, किन्तु क्या हमने कुछ ऐसा इनके लिए किया है, जिसके लिए उनकी दुनिया में हम याद किए जाएँ।
* जिन्दगी में हर कोई जिंदा दिखता है किंतु मृत्यु के बाद भी जो जिन्दा दिखे, जिन्दगी वही जीकर गया है।
* वह जो आपकी बुराइयों को प्रकाश में लाता है और आपको आपकी बुराइयों को भूलकर आपसे प्यार करता है वहीं आपका गुरु है।
* राज्य को बिना कुछ दिए उससे सब कुछ पाने की इच्छा रखने वाली प्रजा को भी ईमानदार नहीं कहा जा सकता है।
* प्रजातंत्र में राजनेताओं की हर बातें वोट के इर्द–गिर्द घूमती रहती है। यही प्रजातंत्र का दुर्भाग्य है।
* महान कार्य करने वाला सिर्फ शरीर से मरता है, कीर्ति तो मृत्यु के बाद पहले से भी ज्यादा बोलने लगती है।
* महान कार्यों को करने वाले लोगों का सबसे बड़ा गुण यह होता है कि जब मृत्यु भी उनके सामने खड़ी होती है, तब भी वे मुस्कुराते हुए अपना कार्य कर रहे होते हैं।
* ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा तब समझ में आती है जब आप भलाई के लिए अपमान झेल रहे होते हैं, धन का अभाव झेल रहे होते हैं, मृत्यु मुँह बाए खड़ी रहती है फिर भी आपकी मुस्कान आपके ओठों से ईश्वर नहीं छीनता।
* संसार की सबसे सुखद घटना वह है जब अच्छे कार्यों को करने वाले लोग जीवन भर अपमान, अभाव, तिरस्कार झेलते रहते हैं एवं मृत्यु के

बाद उन्हें ही भगवान कह कर फिर से आने के लिए पहाड़ों पर चढ़कर पुकारते हैं।

* अच्छे को अच्छा कहने में आपकी क्या महानता है, जबकि पृथ्वी पर कुछ लोगों ने बुरे को भी गले लगाया है।

प्रेमधारा

* जिसकी बात कोई नहीं मानता फिर भी वह उन सबों को सब कुछ देता रहता है उसे ही ईश्वर कहते हैं।
* हे प्रभु! जब भी मैं किसी का बुरा चाहूँ तो वह कभी पूरा न हो एवं मेरे बिना भला चाहे भी मेरे बुरा चाहने वालों का भी भला करना। मुझे विश्वास है मेरी प्रार्थना तुम सुनोगे।
* मैं यह नहीं जानता हूँ कि तुम मेरी सुनते हो या नहीं किन्तु इतना अवश्य जानता हूँ कि तुम दुखियों की अवश्य सुनते हो।
* हे प्रभु! मुझे वह बनाओ जिसकी तुम सुनो।
* प्रभु के संग की इच्छा प्रभु की कृपा के बिना कैसे आ सकती है।
* मैं धन्य हो गया हूँ कि तुम मुझे याद रहते हो।
* प्रभु बेवजह संसार में किसी को एक पल के लिए भी नहीं रखता।
* मैं यह जानता हूँ कि बुरा चाहने वाले किसी का बुरा नहीं कर पाते किन्तु भला तो बिना चाहे भी हो जाता है, क्योंकि प्रभु सब के भले के लिए हमारे बीच उपस्थित रहता है।
* प्रभु के दर्शन के बिना जीव को शांति कहाँ ?
* प्रभु वैसे ही मिलते हैं जैसे माँ की गोद में उसका बच्चा।
* जाओ, हवा से पूछो कि क्या वह बुरों के साथ नहीं रहेगी ? फिर तुम किसी को बुरा कहना।
* किसी को बुरा कहने से पहले इंसान खुद बुरा बनता है, फिर किसी को वह बुरा कहता है।
* एक दिन पूरी पृथ्वी प्रभु में मिल जाएगी जैसे सुगंध–दुर्गन्ध दोनों ही सहजरूप से आकाश में मिल जाती है।
* प्रभु के आने का इंतजार करो, जीवन निर्मल हो जाएगा।
* सत्य कुछेक शब्दों में कहा जाता है एवं असत्य कथाओं में।
* कथा कभी भी शत–प्रतिशत सत्य हो ही नहीं सकती है।

* घटनाओं का सत्य वर्णन वह भी नहीं कर सकता है जिसके साथ घटना घटित हुई हो फिर दूसरे कैसे कर सकते हैं ?
* सत्य के लिए समाज को कथाओं से सत्य में आना होगा।
* सत्य के अलावा भलाई का कोई और रास्ता नहीं है।
* सत्य समय बचाता है एवं असत्य ही समय की बर्बादी का कारण है।
* सत्य को रोचक नहीं बनाओ, सत्य को सत्य रहने दो, इसी में सबों की भलाई है।

बेमबामक

प्रेमधारा

* पूजा–पाठ की व्यवस्था को लेकर उठने वाला तनाव नित्य सभी घरों का एक हिस्सा बन गया है।
* किसी कार्य को करने का कौन सा सही तरीका है, यह उस कार्य को करने वक्त से लेकर परिणाम प्राप्त करने तक तनाव नहीं अनुभव होने से ही पता चल सकता है।
* सफल मैनेजमेंट, समय, श्रम, सहयोगी, कार्य करने की चट्टानी इच्छाशक्ति एवं परिणाम के बीच सही संबंध स्थापित करने का नाम है।
* सफल मैनेजमेंट जिस परिणाम को प्राप्त करने के लिए जरूरी है, उसमें घर पहली सीढ़ी है। इसे व्यवस्थित किए बिना आपके द्वारा सफलता के लिए सभी उपायों को अपनाने के बाद भी सफलता कोसों दूर नजर आएगी।
* सफल मैनेजमेंट, सूर्योदय के एक घंटा पूर्व से शुरू होता है और बिना थके दिन भर चलता रहता है।
* सफल मैनेजमेंट कटु शब्दों का भी शांति से उत्तर देने में है।
* सफल मैनेजमेंट शुरू में ग्राहकों के हिसाब से चलता है, बाद में ग्राहकों को अपने हिसाब से चलाता है।
* सफल मैनेजमेंट इंतजार करने वालों में अंतिम व्यक्ति की तरह धैर्य रखना सिखाता है।
* कमजोर कल्पना का ही परिणाम है कार्य में असफलता।
* ठीक से सोचो, ठीक से करो, सफलता अवश्य मिलेगी।

* अर्थव्यवस्था के बिना सभी व्यवस्था व्यवस्थाहीन दिखने लगती है।
* संस्था हो या देश अर्थ के बिना नहीं चल सकता है।
* अर्थव्यवस्था की कल्पना को संस्कार के साथ साकार की जाने वाली व्यवस्था ही सर्वोत्तम है।
* राजा अपनी संतान को राजा के रूप में देखना चाहकर अपने बराबर अपनी संतान को बनाना चाहता है एवं प्रजा अपने से बड़ा अर्थात अपनी संतान को राजा बनाना चाहती है।

प्रेमधारा

* मृत्यु प्रभु का अपना अंदाज है, आत्मा को जीर्ण–जर्जर काया से मुक्त कर नयी काया में प्रवेश कराने का।
* हममें से हर कोई को अगर नित्य नए कपड़े मिले तो अत्यधिक खुश होंगे, किन्तु प्रभु तो रुग्ण, बीमार, असमर्थ काया से ही आत्मा को मुक्त करते हैं, फिर काया परिवर्तनरूपी इस क्रिया से हम उदास क्यों होते हैं ?
* मृत्यु निराश लोगों की इच्छा है किन्तु आने पर हर कोई चाहता है कि वह लौट जाए।
* मृत्यु ज्ञानियों का ज्ञान है, जिस सच का अभ्यास कर मनुष्य सुख दुख से सदा के लिए मुक्त हो जाता है।
* मृत्यु एक उत्तर है जहाँ इच्छा रूपी सभी प्रश्नों का अंत हो जाता है।
* मृत्यु प्रकाश है, नव जीवन के शुभागमन का।
* जाना मृत्यु नहीं, परिवर्तन मृत्यु है और जिसके जीवन में परिवर्तन की संभावना समाप्त हो जाए, उसे हम क्या कहेंगे!
* हममें से हर कोई अपने जीवन में परिवर्तन की इच्छा रखता है। हम अपने आज से मुक्ति चाहते हैं और उस मुक्ति में छिपी होती है निर्धनता, अज्ञानता एवं दुर्बलताओं जैसी अनंत कष्टकारक स्थिति की मृत्यु। यह जब आती है तब धनी, ज्ञानी एवं सबल पुरुषों का जन्म होता है।

* आओ हम प्रभु से मृत्यु माँगे– अज्ञानता की, कठोरता की, हिंसा की, तिरस्कार की, घृणा की, जिसके बाद खुशियाँ एवं परम आनंद का जन्म हो सकेगा।
* जाना एक ऐसा सत्य है जो आज तक अजेय रहा है।

प्रेमधारा

* क्रोध कोई भी कर सकता है किन्तु जो इसे तत्क्षण नियंत्रित कर ले वह महान है।
* लोगों के बीच भगवान के प्रति जितना भ्रम है उतना किसी और विषय को लेकर नहीं है।
* जब एक दुकानदार अपनी पहली कीमत से कम पर किसी एक वस्तु को दे देता है तो ग्राहक दुकानदार से हर वस्तु को पूर्व में कहे दाम से कम कीमत पर सामान लेना चाहता है।
* जो अपनी कीमत कम और ज्यादा नहीं रखता है बल्कि उचित रखता है उसके यहाँ ही ज्यादा भीड़ लगती है।
* गुणवत्ता के कमजोर होने से ही वस्तुओं की बिक्री के लिए आप तनाव झेलते हैं।
* गुणवत्ता बढ़ाओ, ग्राहक बढ़ाओ, यह स्थायी व्यापार का अनमोल सूत्र है।
* झूठ एक दिन व्यापार एवं व्यापारी दोनों को ही बरबाद कर देता है।
* गुणवत्ता ठीक रखिए, महान व्यापारी बनिए।
* आजकल अमीरों ने अपने पूजा–पाठ के कार्यों को भी मजदूरों से करवाकर भक्ति का नया तरीका चुन रखा है।

* मनुष्य तब तक ही मनुष्य है जब तक वह अपनी इच्छा से दूसरों का कार्य करता है नहीं तो जानवर ही है।
* एक सौ मूर्ख कर्मचारियों को रखने की जगह एक बुद्धिमान कर्मचारी रखो तभी कार्य भी होगा एवं शांति भी रहेगी।
* आप जो कुछ भी करें उसे सबसे अच्छे ढंग से करें, उसका परिणाम आपको संसार के श्रेष्ठतम व्यक्तियों के बीच लाकर खड़ा कर देगा।
* संदेहास्पद व्यक्तित्त्व हमेशा ही बड़ी जवाबदेही को पाने के लायक नहीं रखता और मनुष्य का पद से पतन हो जाता है।
* बड़ा आदमी जो कुछ कहता है उसे बड़ा मान लिया जाता है किन्तु साधारण आदमी जो कुछ कहता है अगर उसे मान लिया जाए तो वह साधारण आदमी बड़ा हो जाता है।
* जो जीवन में हर अवस्था में अच्छा दिखता रहा हो वैसा व्यक्तित्त्व दुर्लभ है, इसलिए उसे हम महान कहते हैं।
* घटनाओं का जो सत्य विश्लेषण कर सकता है वही सही निर्णय ले सकता है, वही न्यायाधीश है।
* आजकल रैलियाँ राजाओं की सेना की तरह सत्ता में पहुँचने का उपाय बन गयी है फर्क इतना ही है कि पहले सेना अपना राजा नहीं बदलती थी अब ये रैलियों वाली सेना सुबह–शाम अपना राजा बदल देती है।
* पहले सेना एक निश्चित क्षेत्र में ही युद्धकर बाकी जनता को कोई कष्ट नहीं देती थी, अब ये रैलियों वाली सेना नित्य गाँव से चलकर शहर तक पहुँचते–पहुँचते न जाने कितनों का नुकसान पहुँचाती रहती हैं।
* मंच पर खड़ा राजा प्रजा की कितनी बातों को पूरा करता हैं, यह सब कोई जानते हैं फिर भी गरीब जनता एक शाम का भोजन एवं निःशुल्क शहर यात्रा में ही असीम सुख प्राप्त कर संतुष्ट हो जाया करती हैं।
* धन्य ये गरीब हैं, जिनका नाम लेकर भारत में हर दिन एक नए राजा के बनने का तो रास्ता प्रशस्त होता है किन्तु गरीब की गरीबी नहीं दूर होती।
* गरीबों के नाम पर अमीर और अमीर कब तक बनते रहेंगे ?
* गरीबी भी झूठ की ही देन है।
* बिना सत्य को लाए गरीब की गरीबी दूर नहीं की जा सकती है।
* अगर सत्य नहीं अपनाया गया तो हजारों वर्षों के बाद भी गरीबी दूर नहीं की जा सकेगी।

* गरीबी दूर करने के लिए सत्य अपनाओ अन्यथा गरीबी नहीं दूर हो सकेगी। हम इस भविष्यवाणी को सत्य होता अनादिकाल तक के लिए देखते रहेंगे।
* गरीबों के नाम पर संघर्ष करने वाला प्रत्येक राजा अमीर हो गया है किन्तु गरीब आज भी वही है, जहाँ पहले खड़ा था।
* किसी का नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से उसकी शिकायत करना हमेशा ही शिकायत करने वाले को कमजोर एवं जिसकी शिकायत होती है उसे मजबूत करता है अगर जिसकी शिकायत हो रही है वह शिकायत करने वाले की प्रशंसा कर दे।
* जो आपकी शिकायत करे, आप उसकी प्रशंसा करें, यह बड़े ही धैर्य का कार्य है किन्तु यही महान लोगों का गुण है।
* सुबह एवं शाम अध्ययन में बिताए गये समय के कारण ही आप दिन भर सफलता एवं शांतिपूर्वक कार्य कर सकते हैं।
* दूर का ढोल सुहावना होता है यह तब सिद्ध हो जाएगा जब तुम कुछ अच्छा करो, अच्छा कहो तो दुनिया भले ही वाह–वाह कहे, किन्तु घर वाले प्रशंसा में चिल्लाने की जगह फुसफुसाएंगे भी नहीं।
* तुम्हारे कार्य का सही मूल्यांकन वही करेगा जो दूर खड़ा तुम्हें देख रहा है। नजदीक वाले तुम्हारे लिए सिर्फ निराश करने वाले शब्द ही कहेंगे।
* प्रलय के पूर्व सम्पूर्ण पृथ्वी जल एवं मिट्टी का घोल बन जाएगी, फिर उच्च ताप पर वाष्प वायु संकुचित होने के क्रम में एक तीव्र, असहनीय ध्वनि उत्पन्न होगी जो आज की माप के हिसाब से ढ़ाई कदम होगा जिसे सत्य कहा जाएगा। सत्य में ही पृथ्वी एवं सम्पूर्ण सृष्टि का लोप एवं सत्य से ही सृष्टि का उदय होता आया है।
* संसार का सबसे बड़ा गणित ढ़ाई का है जिसे सत्य कहते हैं और जिसे ढ़ाई आखर प्रेम से प्राप्त किया जा सकता है।
* सत्य का रहस्य प्रेम से खुलता है इसलिए प्रेम से सोचो, प्रेम से बोलो, प्रेम से कहो तो सृष्टि को प्रलय की विभीषिका से बचा सकते हो।
* प्रलय विभीषिका से बचने एवं बचाने का रहस्य सत्य स्वीकारने, अपनाने एवं प्रेम से रहने में हैं। इस पर बुद्धिमानों को विश्वास नहीं हो सकेगा। प्रेम ही है जो संसार को सुन्दर बनाता है एवं रहस्यमय सृष्टि से पर्दा हटाता है।
* प्रतिष्ठा अगर बिना पैसा के किसी को मिले तो समाज में वैसे प्रतिष्ठितों का नित्य अपमान होता रहता है।

* महान वहीं होते हैं जो सर्व साधारण हो जाते हैं इसलिए उन्हें अर्थाभाव हमेशा ही बना रहता है।
* फिजूलखर्ची के कारण उत्पन्न धनाभाव एवं परमार्थ में किए गए धन के कारण उत्पन्न अभाव में जमीन आसमान का अन्तर है। पहला मनुष्य को पतन की ओर ले जाता है एवं दूसरा महानता के शीर्ष पर ।
* कोई कार्य कोई इसलिए भूल जाता है, क्योंकि उसका महत्त्व उसके लिए नहीं है, अगर भूला गया कार्य ही उसका कार्य है तो उसके बारे में विचार करना चाहिए।
* किसी कार्य स्थल पर किसी को बारह घंटे तभी काम करना पड़ता है जब आठ घंटे भी दूसरे लोग काम नहीं करते हैं।
* जिस कार्य को करने में पैसे नहीं मिलते हों वह आपके घर के अन्दर काम नहीं माना जाएगा। बाहर बिना पैसे के लिए जो काम आप करते हैं उसी कारण एक दिन आपकी पूजा होती है।
* संसार का विकास व्यक्ति द्वारा प्रगति का लक्ष्य बना कर चलने से हुआ है। आप भी अपना विकास चाहते हैं तो अपने कार्य को एक लक्ष्य देना ही होगा।
* जो कार्यालयों में जहाँ–तहाँ यह कहते फिरते हैं कि मुझे काम नहीं है, वे आलसी एवं पहले नं0 के बेईमान हैं। ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए।
* जो लक्ष्य भी नहीं प्राप्त करते हैं एवं नित्य असफलता के लिए अपनी व्यस्तता बताते हैं वे दूसरे नं0 के बेईमान है।
* नृत्य पर देवता एवं दानव दोनों ही मोहित होते रहे हैं और आज मनुष्य मोहित हो रहा है तो इसमें आश्चर्य क्या है ?
* नृत्य जब तक देखते रहोगे तभी तक आनंद है और जब उसकी नकल करने लगोगे तो जीवन में भस्मासुर की तरह मारे जाओगे।
* कलियुग नृत्य करता हुआ भस्मासुर है जो विनाश के कगार पर पहुँच चुका है।
* जो अपने कार्य के अलावा सब कुछ करता हो, उसका रोम–रोम बेईमानी से भरा पड़ा है। ऐसे लोगों को पहचान कर तुरन्त पदच्युत करना चाहिए।
* शांत एवं अशांत मन के बीच इच्छाएँ कभी पूरी नहीं होती।

* प्रभु ने पृथ्वी पर मनुष्य मात्र को ही अनंत इच्छाओं एवं उसे प्राप्त करने का सामर्थ्य रखने वाला बनाया है।
* सामान्य जीव भोजन, छाया एवं सुरक्षा के लिए इधर उधर दौड़ता रहता है। मनुष्य ही है जो इसके अतिरिक्त इच्छाओं के लिए अहर्निश भाग–दौड़ करता रहता है।
* मनुष्य एवं जानवर में जो मूल अंतर है– वह यह है कि जानवर भोजन की खोज तक ही सीमित है एवं मनुष्य दृश्य एवं अदृश्य दोनों ही जगत् की कल्पनाओं को साकार करने की इच्छाओं से जीता है।
* मनुष्य सृष्टि की अनमोल रचना है। इसे प्राप्त करने के बाद जो परमार्थ एवं देवत्व की प्रतिमूर्त्ति नहीं बन सका वही पतनोन्मुख होकर मनुष्य के अतिरिक्त अन्य जीव रूप में खो जाता है।
* हममें से हर कोई अपने आचरण से ही अगला जीवन प्राप्त करेगा।
* मनुष्य परमात्मा को साधन के रूप में इस्तेमाल करना चाहता है, इसलिए वह असफल रहता है। हम प्रभु का साधन बनें, प्रभु के कार्य में काम आएँ एवं अपना जीवन धन्य करें।
* आँखों से बड़ा न्यायाधीश कौन है? चोरी करने वाला, छल करने वाला भला आपसे आँख मिलाएगा? हे मन! आँखों को प्रभु दर्शन में लगाओ– जीवन धन्य हो जाएगा।

प्रेमधारा

* जब लोग बूढ़े हो जाते हैं तो पुराने लोगों से मिलने एवं पुरानी जगह पर जाने की इच्छा होती है।
* जब बचपन का मित्र मिलता है तो ईश्वर मिलन जैसा ही सुखद अनुभव होता है।
* बड़े उद्देश्य के लिए घर का कदम व कदम साथ बहुत ही मुश्किल है। या तो बड़ा उद्देश्य न रखें या फिर दवाब में कार्य करने का अभ्यास न करें तभी सफलता मिलेगी।
* उद्देश्य के लिए घर के लोग, नाते, रिश्तेदार साथ नहीं देंगे, किन्तु सफलता मिलने पर सबसे पहले वे ही उसका लाभ उठाने के लिए आगे रहेंगे।

* ज्यादातर लोगों की कार्य क्षमता परिवार मैनेजमेंट नहीं जानने की वजह से समाप्त हो जाती है।
* परिवार में बड़े उद्देश्य की चर्चा न करें और न ही उद्देश्य के लिए संघर्ष से उत्पन्न परेशानियों को परिवार के सदस्यों पर डालें, फिर आप निश्चिंत होकर कार्य भी कर सकते हैं एवं सफलता भी मिलेगी।
* कलियुग में आपका सूर्योदय से पूर्व उठना एवं दूसरों को भी जगाना, परिवार के ज्यादा लोगों को बुरा ही लगेगा।
* आपको धन मिले तो परिवार को उपहार के रूप में कुछ न कुछ बाँटना न भूलें एवं धनाभाव रहे तो इसकी चर्चा कभी नहीं करें तो आप सुखी रहेंगे।
* अच्छा से अच्छा कार्य भी शुरू में प्रशंसा का कारण नहीं बन पाता है और उसे बेकार कहने वाले बिना ढूँढे ही मिल जाएँगे।
* अच्छे कार्यों को करने के लिए सबसे पहली शर्त है कि आप पूरी जिन्दगी किसी का साथ नहीं मिलने पर अकेले भी उसे ही करते रहने का मन बनाइए।
* धैर्य रखें, अच्छा कार्य कभी–न–कभी एक दिन आपको प्रशंसा एवं यश देकर रहेगा।
* प्रशंसा के लिए कार्य नहीं करें अन्यथा कार्य से ध्यान हटकर प्रशंसा एवं शिकायत का उत्तर देने में ही समय निकल जाएगा एवं शिकायत करने वाले सफल हो जाएंगे।
* कार्य के प्रारम्भ में किसी की भी प्रशंसा नहीं हुई है।
* धैर्य ऐसा मंत्र है जिससे एक दिन सफलता के सभी द्वार खुल जाते हैं।
* जो कर्म न करता हो एवं अपनी इच्छा की पूर्त्ति हेतु इंतजार कर रहा हो, वह धैर्य नहीं आलस्य है।
* धैर्य, पुरूषार्थ से किए गए कार्यों के बीच गतिरोध उत्पन्न होने के बावजूद उसे करते रहने का नाम है।
* कलियुग में बिना अपने लाभ की इच्छा रखे कोई आपकी भलाई एवं बुराई दोनों ही नहीं कर सकता है।
* अपना ही गुण–गान जो करता रहता है उसका सभी गुण एक दिन नष्ट हो जाता है।
* बिना पूछे या विशेष अवसर के बिना अपने पुरूषार्थ की चर्चा खुद से कभी भी नहीं करनी चाहिए।

* प्रशंसा एवं शिकायत में लिखे गए शब्द कभी भी स्थायी नहीं होते हैं, इसलिए सिर्फ सत्य को ध्यान में रखकर ही कोई बात बोली एवं लिखी जानी चाहिए।
* वाक्यों की रचना मनुष्यकृत हो सकती हैं किन्तु भाव एवं परिस्थितियाँ सिर्फ ईश्वर की ही बनायी होती है।
* भार समझकर किया गया कार्य, लिखे गए लेख, कही गई बातें कभी भी ईश्वरानुभूति नहीं करा सकते हैं।
* बड़ा वही है जो अपने साथ सबसे कम वेतन पर कार्य करने वाले लोगों से भी अच्छा व्यवहार करें।
* कर्मचारियों को हमेशा ही अपने द्वारा अधिक अच्छे वेतन देने की बात को याद कराते रहने से प्रधान व्यक्ति के प्रति सम्मान कम हो जाता है जिसका कुप्रभाव कार्य में भी दिखता है।
* पैसों का व्यवहार लेने–देने में सही एवं प्रेमपूर्वक रहे तो एक अच्छा मैनेजमेंट कहलाएगा।

प्रेमधारा

* भारत के कितने संतो के आश्रम में कितने गरीब हैं ? यही काफी होगा समझने के लिए कि आश्रम किनके लिए है एवं कितनी भलाई देश का करना चाहते हैं।
* भगवान के नाम पर अपनी भलाई का धंधा इन दिनों जोरों पर है।

* मनुष्य हर पल नया जन्म लेता है एवं बीते पल के कर्मो का फल उसे नए जन्म में सुख–दुख देता रहता है।
* क्रोध में सबसे पहले शब्द ही बेकाबू होता है पर शब्द ही ब्रह्म है। ब्रह्म जब जीव का साथ छोड़ दे तो कष्ट तो होना ही है, इसलिए क्रोधी कभी सुखी नहीं रह सकता है।
* क्रोध पर विजय नहीं प्राप्त होती बल्कि विजय तभी प्राप्त हो सकती है जब क्रोध न हो।
* क्रोध हमेशा ही बुरा फल देने वाला है।
* क्रोध कमजोर मन एवं शरीर का दुष्परिणाम है।
* क्रोध सबसे पहले शब्द को ही बेलगाम करता है। अतः शब्द को नियंत्रित रखने का अभ्यास सुख, आनंद एवं जीत का रास्ता प्रशस्त करता है।
* क्रोध पहले शब्द को ही बेलगाम करता है फिर शरीर को जिससे संसार में गृहवास से लेकर पड़ोस, समाज एवं देश आपस में टकराता है।
* क्रोध कभी अकेला नहीं होता, अतःहे मन! संसार में रह, किन्तु अकेले रह।
* दूसरों से जोड़कर अपनी सफलता–असफलता, सुख–दुख को देखना बन्द कर अन्यथा कभी शांति नहीं मिलेगी।
* बड़े पद पर कार्य करने वाले कर्मचारियों के बारे में लघु पद पर कार्य करने वालों की शिकायत पर सोच समझकर निर्णय करना चाहिए।
* आर्थिक अभाव का दवाब, व्यक्ति, परिवार, संसार एवं देश सबों के लिए एक जैसा कष्टकारक होता है जिसे धैर्य एवं पुरूषार्थ से ही दूर किया जा सकता है।
* किसी भी व्यवस्था में कर्मचारियों की बातों को सीढ़ी दर सीढ़ी ही सुनी जानी चाहिए अन्यथा पद का कोई महत्त्व ही नहीं रह जाएगा।
* जातीयता एवं क्षेत्रीयता के रहते हुए राष्ट्रीयता मजबूत नहीं हो सकती है।
* आदर लेने से पहले अपनी पात्रता का ख्याल रखना आवश्यक है।
* एक नर–नारी के संबंध को शादी कहते हैं जिसके प्रति ईमानदारी बरतने से ही स्वस्थ एवं चरित्रवान समाज का निर्माण किया जा सकता है।
* शादी एक दूसरे के प्रति सहयोग, सम्मान एवं विश्वास का नाम है।
* वैवाहिक जीवन की सफलता इस बात पर नहीं निर्भर करती है कि आप अपनी बात मनवाने में कितना कामयाब हुए बल्कि दूसरों की बात खुशी–खुशी मानने में आपने कितनी उत्सुकता दिखायी।

प्रेमधारा

* आजकल सादगी का प्रचार भी ताम–झाम से करने की भूल लोग कर रहे हैं।
* गाँधी कलियुग के अवतार थे। वे पाँचवे वेद थे जिन्होंने पृथ्वी पर पहली बार सत्य एवं अहिंसा से सत्ता परिवर्त्तन का रास्ता दुनिया को बताया।
* भारत एवं दुनिया को योगियों की नहीं गाँधी की जरूरत है।
* ढूँढ़ो उस महावीर को जिसने संसार से लेने के नाम पर वस्त्र, घर, प्रशंसा कुछ भी नहीं लिया, जिसने संसार द्वारा फेंके गए पत्थरों को भी चोट पहुँचाने वाला नहीं बल्कि खुद के द्वारा दूसरों में हिंसा पैदा होने से दुख के लिए अपने को जिम्मेवार माना। हमें ऐसे महावीर की जरूरत है।
* आज संसार में महावीर की चर्चाएँ जितनी हो रही हैं उन चर्चाओं पर अमल उतना ही कम। हमें महावीर की चर्चा नहीं महावीर की जरूरत है।
* आज प्रशंसा प्राप्त करने के मैनेजमेंट पर योगी, सामाजिक कार्यकर्त्ता, विद्वान एवं कथित सभी बड़े लोग कार्य कर रहे हैं एवं उन्हें सफलता भी मिल रही है।
* योगी, राजनेता, विद्वान एवं सुधारक सभी विषयों पर बोलते हैं सिवाय सत्य के क्योंकि सत्य ही है जो इनके वश में नहीं हैं।
* अगर हम सत्य का अनुसरण नहीं कर रहे हैं तो इसके लिए दोषी हम सभी हैं।
* समय आनेवाला है, जब चौराहे पर खड़ा होकर जोर–जोर से चिल्लाएंगे लोग एवं सत्य बोलेंगे क्योंकि शांति एवं समृद्धि के सभी उपाय तब तक असफल हो चुके होंगे।
* प्रतिस्पर्धा ईर्ष्या का अदृश्य अनुच्चारित रूप है।
* सत्ता एवं शासन की प्रकृति बीज रूप में प्रत्येक प्राणि में विद्यमान है। इसका प्रमाण है कि संसार में सभी लोग किसी न किसी को आदेश दे रहे हैं।
* समस्या का सरल निदान नहीं बल्कि सत्य निदान करना चाहिए, नहीं तो निदान ही समस्या बन जाती है। जैसे किसी देश एवं प्रांत का बँटवारा।
* संसार में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं जिसके निर्माण का कारण हम सिर्फ मनुष्य मात्र ही हैं। मनुष्य मूर्त्ति तो बना सकता हैं पर मूर्त्ति के लिए पत्थर एवं मिट्टी नहीं।

* हम अमृत के पास पहुँच कर भी पात्र के अभाव में खाली हाथ लौट सकते हैं जैसे गंगा के किनारे पहुँचकर पात्र के अभाव में आपके घर में गंगा जल नहीं आ सकता है।
* पात्र का महत्व पात्र में रखी जाने वाली वस्तु से कम नहीं है। हम मनुष्य भी प्रभु के अच्छे गुणों का पात्र हैं जो गुणरूपी प्रभु का वास स्थल है।
* हिंसा के रास्ते से प्राप्त सभी प्रकार की जीत मानवता की हार है।
* दूसरों के मन में हमारे प्रति पैदा हुई हिंसा के लिए दोषी जब तक हम खुद को नहीं मानते तब तक हम अहिंसक नहीं कहला सकते हैं।
* प्रजा भूखी, नंगी, प्यासी एवं बेघर हो तड़प रही हों एवं राजा निश्चिन्त सो रहा हो, तब तक हम एक अहिंसा मूलक समाज एवं राष्ट्र के निर्माण की कल्पना नहीं कर सकते हैं।
* संसार की सबसे बड़ी जीत तब होगी जब अहिंसा घर, समाज एवं देश के संचालन में मूल साधन के रूप में कार्य कर रही हो।
* हजारों, लाखों एवं असंख्य बार भी हमारी जीत क्यों न हो जाए हम तब तक जीतकर भी हारे हुए हैं जब तक सत्य एवं अहिंसा को समाज, देश एवं दुनिया के रोम–रोम में अनुभव नहीं किया जाए।
* आओ हमें सत्य एवं अहिंसा के लिए एक और हार हारना है।
* अहिंसा तब तक हारती रहेगी जब तक हम अपने कारण दूसरों के मन में हिंसा पैदा करते रहेंगे।
* शब्द कठोर हो किन्तु व्यवहार नम्र हो।
* धूल भरी राहों पर तो कोई चलना नहीं चाहता है किन्तु आज लहू–लुहान राहों पर दौड़ लगी है, कोई न कोई तो फिर भी पिछड़ेगा। एक लहू–लुहान चेहरा फिर से उभरेगा। जो जीतने वाले को अपनी हार का कारण कहेगा। बन्द करो यह जीत–हार का खेल आगे पीछे का यह चलन, जब इन्सान एवं इन्सानियत मात्र बेजान पड़ा है।

प्रेमधारा

* ब्रह्मचर्य एक अभ्यास है, शरीर की स्वाभाविक स्थिति नहीं, इसलिए अभ्यास के नियमों का उल्लंघन करते ही टूट जाता है।
* संसार में सभी धर्मों के ज्यादातर ब्रह्मचारी दिखने वाले धर्म गुरु वस्तु एवं पद से ब्रह्मचारी होते हैं, आचरण से भयंकर भोगी। इसे सत्य को साक्षी रखकर उन्हीं से जाना जा सकता है।
* अगर दुनिया आपको जो समझती है वह आप नहीं हैं और यह आप नहीं बताते हैं तो आप भी ढोंगीं की श्रेणी में एक दिन ईश्वर के समक्ष घोषित किए जाएंगे।
* कलियुग में धर्म, नाम एवं प्रशंसा पाने की इच्छा में लोग सभी प्रकार के हथकंडे अपनाते हैं।
* आप जब भी अच्छे लोगों के करीब जाएंगे तो अपनी दृष्टि से उनमें हजारों बुराइयों को देखेंगे।
* आत्मा के संतुष्ट हुए बिना जीव परमात्मा का अनुभव नहीं कर सकता है एवं बिना परमात्मा के अनुभव के झूठ से दामन भी नहीं छूट सकता है।
* जीवन वही निर्मल है जो सत्य के अलावा कुछ नहीं जानता हो।
* धन्य है वह जीवन जो सत्य बोले, सत्य सोचे एवं सत्य ही करे।
* जीव सत्य रूप को जब तक अंदर बाहर नहीं प्राप्त कर लेता है, वह भटकता रहता है।
* जब भी आप कुछ लिखते एवं बोलते हैं, कोई न कोई आपके लिखने के कारण के रूप में आपके चित्त में उपस्थित रहता है।
* सत्य के बारे में बोलने एवं लिखने के क्रम में सत्य रूपी ईश्वर तुम्हारे चित्त में बसा होता है, उस क्षण के लिए तुम निर्मल हो जाते हो।
* सत्य को बोलने एवं लिखने में आत्मा गौरावान्वित महसूस करती है, ईश्वर के करीब महसूस करती है।
* सत्य के लिए पीड़ा उठाने वाला जीव एक दिन ईश्वर के करीब माना जाएगा।
* हे मन! सत्य के लिए तू असंख्य कष्टों को उठाने वाला बन।

* हे मन! कर्म किसके वश में हैं, वह तो जन्म के साथ ही तुम्हारा स्वभाव बन तुझसे करवाता रहता है। इसे वश में करने की बजाय तू ईश्वर के सत्य का संग कर, एक दिन तुम्हारी सारी विवशता समाप्त हो जाएगी।
* जब तुम कष्ट उठाते हो तो ईश्वर तुम्हारे करीब होता है एवं जब उस कष्ट में उत्सव मनाते हो तो ईश्वर तुम्हारे अंदर होता है क्योंकि तब जीव कष्टों से ऊपर उठ कर परमात्मा में मिल गया होता है।
* मेरा अनुभव परमात्मा का अनुभव है जो एक दिन सबों को झकझोरेगा। वह दिन आने वाला है जब सत्य के दरवाजे पर पहुँचकर जोर–जोर से आवाज लगाएगा और तब तुम नहीं चाहकर भी अपना दरवाजा बंद नहीं रख सकोगे, इसलिए हे जीव तू कर्कश आवाज से नहीं मीठी आवाज से अपने घर से बाहर निकल।
* तुम शांति चाहते हो किंतु सत्य नहीं चाहते हो, इसलिए तुम्हारी शांति तुमसे हमेशा बहुत दूर खड़ी मिलेगी।
* हर कोई एक दिन अपना चोला बदलने वाला है उसमें से मैं भी एक हूँ किन्तु मैं ईश्वर के नए घर में प्रवेश करने के लिए पुराने कपड़े सहर्ष उतार दूंगा और तुम.. .....।
* कलियुग में एक राम नाम ही है जो जीव को शांति देता है।
* राम से बड़ा या राम से छोटा सिर्फ राम ही है।
* कौन सी ऐसी जगह है जहाँ राम नहीं है।
* पाने–खोने के बीच ही जिन्दगी का सुख–दुख आता जाता रहता है।
* पाने–खोने से हटकर जो जीता है वही ज्ञानी है।
* मनुष्य तभी तक मनुष्य दिखता रहता है जबतक वह हँसता–रोता रहता है, इससे जो परे हो जाता है पहले उसे आश्चर्य सें देखा जाता है, फिर भगवान कहा जाता है।
* हम लोगों के साथ भी रहें एवं इससे सुख–दुख का अनुभव भी न हो, ऐसी उम्मीद, उम्मीद नहीं बल्कि भूल है।
* अच्छे विचार सिर्फ ईश्वर की प्रेरणा से ही निकलते हैं।
* भारत ही एक ऐसा महान देश है जहाँ हमारे महापुरूष एक ही नर–नारी के साथ सम्बन्ध की शर्त्तों को तोड़ने पर महापुरूष नहीं रह जाते हैं।
* भारत की सोच श्री राम के इर्द–गिर्द ही घूमती रहती हैं जिसमें पर पुरूष एवं पर नारी, संबंधों को कभी भी न्यायोचित नहीं ठहराया जाता।
* विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जिसने एक पुरूष – एक नारी के सिद्धांत को आचरण के रूप में स्वीकारा है।

* श्री राम के एक पुरूष – एक नारी संबंधों को ही स्वीकार कर एड्स जैसे रोगों से संसार को बचाया जा सकता है, बाकी सब भ्रम एवं भटकाव ही है।
* जो कष्ट का कारण बना– भगवान ने उस भाई भरत को सबसे प्रिय कहा।
* मित्र धर्म निर्वाह करने के लिए अगर दुख एक ही प्रकार का हो तो पहले मित्र का कष्ट दूर करना चाहिए जैसा कि भगवान ने सुग्रीव को बाली से उसकी पत्नी को लौटा कर पूरा किया।
* अछूत को छूकर और अपमान को मान देकर प्रेम का धर्म बताया, जब भगवान ने शिला बनी अहिल्या को नारी के रूप में पुर्नस्थापित किया।
* जीते राज्य को वापस कर देना श्री राम एवं भारत का ही धर्म हो सकता है।
* हम जब भी घबराते हैं, निराश होते हैं, तो यही कहते हैं कि भगवान को भी भारी कष्ट पड़ा था, हमें तो उसकी तुलना में कुछ भी नहीं हुआ है।
* सेवा धर्म संसार के सभी धर्मों से श्रेष्ठ है।
* शबरी का सा इंतजार हो तो भगवान भी मिलते हैं।
* प्रभु चिन्तन से मन की मलीनता दूर हो जाती है।
* जनता जितना धैर्य टूटने से हथियार उठाती है उससे ज्यादा सत्ता में पहुँचने के लिए बुद्धिमान लोगों की चाल में फँसकर लोग हथियार उठाते हैं।
* बुद्धिमान लोगों ने संसार को लहू–लुहान कर दिया है।
* खाने के लिए मोहताज हाथों में लाखों करोड़ों रूपये का अस्त्र–शस्त्र कौन एवं क्यों देता है, प्रजातंत्र के संचालकों को ईमानदारी से इसका पता लगाना चाहिए।
* अहिंसा के कमजोर पड़ने से प्रजातंत्र भी कमजोर पड़ेगा। यह प्रजातंत्र के शासकों को ठीक से सोचना चाहिए।
* राजा अच्छे विचार एवं विचारकों को अपना सलाहकार बनाए, तभी वह सत्य शासन कर सकता है।
* राजा का हर पल प्रजा का होता है। वह राजा से प्रत्येक पल का हिसाब लेने का हक रखती है। यह अधिकार प्रजा को मिलना चाहिए।
* प्रत्येक राजा को अपने दैनिक क्रिया कलापों के बारे में नित्य बतौर सूचनार्थ जानकारी प्रकाशित करनी चाहिए।
* राजा को डायरी लिखना अनिवार्य किया जाए तो वह ईमानदार हो जाएगा या अपनी गद्दी छोड़ देगा।
* प्रेमाश्रु जीव के स्वरूप की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति है।
* आँसू संसार की दवा है जिसके निकलते ही चित्त शान्त हो जाता है।

* नफरत करने वाले कभी नही रोते संसार में, जब भी कोई रोएगा तो प्रेम में ही रोएगा। हे प्रभु! आँसुओं की संसार में कभी भी कमी नहीं होने देना ताकि नफरत नहीं बढ़े।
* आँसू पवित्र ह्रदय का प्रसाद है जिसे पाकर संसार धन्य हो उठता है।
* अहिंसा संसार का परम धर्म है।
* बिना किसी को कष्ट पहुँचाए, कष्ट पहुँचाने वालों की भी भलाई के लिए तत्पर रहना अहिंसा है। अहिंसा की सिद्धि प्राप्त होने पर सम्पूर्ण संसार ही आपका मित्र हो जाता है।
* अहिंसा धर्म का पालन किए बिना **'प्रेम एवं मित्रता'** की बात सोची भी नहीं जा सकती है।
* हिंसा करनेवालों से हिंसा की स्थिति पैदा करने वाले कम दोषी नहीं है।
* बिछुड़ने पर रोना एवं साथ रहने पर रूलाना, सामान्य जन ऐसा ही करते हैं।
* अहिंसा धर्म का पालन तब तक संभव नहीं जब तक हिंसा का कारण बना हुआ है।
* अहंकार का लोप हो जाने पर अहिंसा का अंकुरन प्रारम्भ होता है।
* अहिंसा धर्म गृहस्थाश्रम में शांति, समृद्धि एवं आनंद का फल देने वाला है।
* अहिंसा धर्म की शुरूआत सामने वालों की भलाई से ही शुरू होती है।
* अहिंसा ही भलाई का एक मात्र धर्म है।
* अहिंसा का असर जब शुरू होता है तो सभी आचरण असरहीन हो जाते हैं।
* अहिंसा से बलवान एवं हिंसा कमजोर संसार में कुछ भी नहीं है।
* अहिंसा का युग धर्म बने बिना युग सुखदायक प्रतीत हो ही नहीं सकता।
* बिना अपराध का युग सतयुग, सामर्थ्यवानों का व्यक्तिगत अपराध–त्रेतायुग, राजकुलों के बीच का आपसी अपराध–द्वापर एवं राजा–रंक द्वारा समान रूप से अपराध करने की प्रवृति अर्थात सामूहिक अपराध का युग कलियुग है।
* राजा से युग का परिचय है। सतयुग की पहचान सामूहिक सदाचार के कारण, त्रेता श्रीराम के कारण, द्वापर श्रीकृष्ण के कारण एवं कलियुग पुनः राजा–रंक दोनों के बीच अपराध प्रवृति के कारण ही इसकी पहचान है।
* युग पर जो भारी पड़ता है वह है मौन त्यागी, सत्य एवं अहिंसा धर्मी।
* जिन पुरूषों के संग त्याग, सत्य एवं अहिंसा सोते जागते साथ नहीं छोड़ते, वे सभी काल में चलते–फिरते–सतयुग ही हैं।
* गुरु के द्वारा प्राप्त प्रशंसा का शब्द रोम–रोम में परमानंद का संचार कर देता है।
* प्रशंसा हमेशा ही आनुपातिक होनी चाहिए। इसके ज्यादा एवं कम होने से यह जितना नुकसान कर सकती है उतना किसी के द्वारा की गई शिकायत भी नहीं।

* धर्म कठोर होता है किन्तु उसका पालन करने वाला हमेशा ही विनम्र होता है जैसे गुरु के कठोर हाथों में कठोर छड़ी, माँ की गोद को बंधन कहनेवाले बच्चों के मुख में माँ का दूध, सूई की कठोरता को सहता फूल।
* प्रभु जब आनंद ही आनंद देना चाहता है तो पहले छोटे–छोटे आनंद वाली सोच को वह हर लेता है।
* सत्य एवं अहिंसा धर्म के पालने में मैं सबसे पहले हारता हूँ, कभी भी इसका पालन नहीं कर पाता हूँ फिर भी कहूँगा यही धर्म सभी धर्मों का, सभी आनंद का सार है। इसे छोड़ने पर आप हारने लायक भी नहीं रह जाएंगे।
* सबसे मिलो, प्रेम से मिलो, जीवन एक दिन निर्मल हो जाएगा।
* जिस दिन जिह्वा कठोरता का संग छोड़ देगी उसी दिन तुम सबमें प्रिय हो जाओगे।
* हम कहाँ जा रहे हैं, कभी अपने आप से पूछा है आपने ?

प्रेमधारा

* जो शांति का मार्ग है वही प्रेम का मार्ग है, सत्य का मार्ग है।
* नर–नारी का एक दूसरे के प्रति आकर्षित नहीं होना अगर चरित्रवान होने का प्रमाण है तो सम्पूर्ण सृष्टि ही चरित्रहीन है।
* साधु एवं शैतान दोनों के ही वश में कामवासनाएँ नहीं हैं, मनुष्य तो उस पर हर वक्त थिरकने के लिए अपनी बारी का इंतजार करता रहता है, फिर भी प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे को इसके लिए दोषी ठहराता है।
* काम वासना का चोर सब कोई हैं, किन्तु जो पकड़ाता है वह चोर, नहीं तो बाकी सब साधु ही है।
* अगर संसार को ईमानदार बनाना है तो पहले प्रयास में लोगों को उसकी गलती स्वीकारने के लिए प्रोत्साहित करना होगा एवं गलती स्वीकारने पर माफी देनी पड़ेगी। बार–बार ऐसा करते रहने से एक दिन वह ईमानदार हो जाएगा।
* बिना कर्म का आचरण शुद्ध–अशुद्ध नहीं होता है, गलती एवं सही करनेवाले के बीच एक समानता तो है कि दोनों ही कुछ कर रहे हैं।
* अच्छी चर्चा एक दिन अच्छे कार्य के होने का कारण बनती है।

* जैसे चोर के बीच बैठा साधु कष्ट का अनुभव करता है, ठीक इसी तरह कुकर्म करने वाले मन के अन्दर बैठी आत्मा कष्ट का अनुभव करती है। इसलिए जब वह शरीर से निकल नहीं पाती तो घर से निकल सत्संग का रास्ता पकड़ती है।
* शांति का सरल रास्ता है सत्य को स्वीकारना।
* कामी पुरूषों की कामवासनाएँ भी वश में हो जाती है, किन्तु धन का लोभी मृत्यु के पूर्व तक धन के लिए कुकर्मों को करने से नहीं चूकता।
* कलियुग में धन के वश में राजा एवं रंक दोनों मिलेंगे।
* धन ही कलियुग में मित्र एवं शत्रु बनाता है।
* नुकसान के भय से मुक्त हुए बिना सत्य–अहिंसा धर्म का पालन नहीं किया जा सकता है।
* झूठ एवं हिंसा का रास्ता कमजोर लोग अपनाते हैं।
* नुकसान होने पर भी अपने सह–कर्मियों के साथ क्रोध न करना बड़े ही धैर्य की बात है।
* दूसरों को उपदेश देने के बाद भी नित्य मेरा हजारों बार पतन हो जाता है जिससे मैं पश्चात्ताप की अग्नि में जलता रहता हूँ।

* जिसका कभी भी पतन संभव नहीं है वही ईश्वर है।
* कलियुग में सारे प्रिय–अप्रिय रिश्ते धन के लेन–देन के साथ जुड़े रहते है।
* कम आश्चर्य की बात नहीं है कि कलियुग में भी मनुष्य बिना पैसा लिए काम करता है।
* धनवान लोग धन खर्च होने पर उसका जितना हिसाब–किताब करते हैं उतना निर्धन नहीं।
* कलियुग में किसी को बड़ा बना दो तो सबसे पहले वह सभी प्रकार के साधनों के बावजूद निःशुल्क यात्रा करना चाहेगा एवं घरेलू नौकर, टेलिफोन एवं बच्चों की पढ़ाई–लिखाई निःशुल्क चाहेंगा यही बड़े लोगों का कथित बड़प्पन है जिसमें भारतीय सबसे आगे हैं।
* जन सेवकों को अपने जीविकोपार्जन के लिए अपने श्रम से उपार्जित धन की व्यवस्था करनी चाहिए।
* अपने–अपने क्षेत्र में राष्ट्र एवं मानवता के लिए श्रेष्ठतम तरीकों से कार्यों को सम्पादित करने के लिए जनता का प्रतिनिधित्व करना चाहिए।

* प्रजातंत्र में सरकार के गलत निर्णयों का विरोध अदालतों एवं अन्य माध्यमों से करना चाहिए जिससे देश के समय एवं धन का नुकसान न हो।
* सरकारी सम्पत्ति से निर्मित भवन, सड़क आदि पर राजनेताओं के नाम पट्टी से ऐसा लगता है जैसे इन्होंने अपने धन से बनवाया हो।
* लोभी पास में खड़ा हो तो दुख बुलाने की जरूरत ही क्या है।
* धार्मिक पुरूषों को लेन–देन बहुत सावधानी से करना चाहिए अन्यथा एक व्यक्ति के कारण सम्पूर्ण धर्म ही मलीन दीखता है।
* एक मनुष्य पर से विश्वास उठ जाए तो कुछ नहीं बिगड़ेगा किन्तु धर्म पर से विश्वास उठ जाए तो पूरे समाज का ही पतन हो जाएगा।
* सत्य बोलने एवं सुनने वाले के झूठ के साथ व्यवहार हो जाए तो जहर से भी ज्यादा कष्ट का अनुभव उसे होता है।
* कलियुग में झूठ आभूषण एवं सत्य गले के फंदा के रूप में देखा जाता है।
* कलियुग में झूठ सभी मर्ज़ की दवा के रूप में व्यवहार किया जाता है।
* ईर्ष्या से दूसरों की अच्छी चीज भी अप्रिय लगती है और लोग उसे छूने में भी परहेज करते हैं।
* ईर्ष्या की अग्नि में जलकर मनुष्य फिर कभी जलने लायक भी नहीं, राख ही रह जाता ठें
*

* पूर्वाग्रह से ग्रसित प्राणी अपनी गलत राय से नुकसान उठाने के बाद भी नहीं संभलता है।
* मनुष्य के सभी विचार पूर्व में घटित घटनाओं से संबंध रखते हैं अतः उन्हें न्यायोचित तरीके से ही रखना चाहिए।
* दूसरों का झूठ जितना आपको दुख पहुँचाता है, उससे कम नहीं आपका झूठ दूसरों को कष्ट पहुँचाता है। झूठ सुखद हो ही नहीं सकता है।
* जो नर या नारी कामवासनाओं से पराजित नहीं हो, ब्रह्मचर्य धर्म का पालन आजीवन कर सकता है तो वही जीवन एक दिन परमार्थ एवं परमात्मा के कार्यों को करने वाला महान जीवन कहलाएगा।
* परमात्मा एवं परमार्थ की राह पर चलना ब्रह्मचर्य व्रतधारियों के लिए ही संभव है।
* जब तुम्हारा मन एक पल के लिए भी प्रभु चिंतन से अलग नहीं होना चाहता है तो समझो जीवन धन्य होने वाला है।

* जीव अनंत आनंद के लिए लाख उपाय करता है किन्तु शांति उसे प्रभु भजन में ही मिलती है।
* भजन सुनने एवं गाने में बड़ा ही सुख है।
* एक समय आता है जब सत्य–असत्य का पता सब को चल जाता है।
* थके मन से प्रभु की बनाई इस दुनिया को हम नहीं समझ सकते फिर प्रभु को कैसे समझ सकते हैं ?
* प्रभु का भजन जीव का विश्राम स्थल है जहाँ वह अपनी थकान मिटाता है। हे मन! प्रभु का नाम भजो।
* हे निराश लोग! जीव एक दिन इस शरीर को तुम्हारा इंतजार किए बिना भी इसे छोड़कर चला जाएगा, फिर प्रभु कार्य तो करने के बदले में तुम मृत्यु के इंतजार में क्यों व्यर्थ समय गँवा रहे हो ?
* प्रजातंत्र में नेता राष्ट्रहित में नहीं वोट हित में सब कुछ करते हैं।
* बढ़ती जनसंख्या पूरे विश्व के लिए जहाँ चिंता की बात है वहीं कुछे राजनैतिक दलों के लिए सत्ता सुख का साधन।
* चिंतन–मनन एवं शारीरिक श्रम में संतुलन नहीं बनाए रखने से आलस्य का जन्म हो सकता है जो अच्छे से अच्छे विचारों को महत्त्वहीन बना देता है।
* जिस विचार पर आप खुद नहीं चल सकते हैं वह लोगों पर प्रभाव कभी भी नहीं डालता।
* भीड़ कलियुग का सत्य है। जिसके साथ भीड़ है वही सत्य बोलने वाला एवं कहने वाला माना जाता है।
* एक ही उद्देश्य में लगे रहने वाला एक दिन उस उद्देश्य को प्राप्त करके रहेगा।

प्रेमधारा

* रिश्तेदारों के यहाँ रहने एवं उससे अपने अच्छे–बुरे के बारे में उपदेश सुनने से बड़ा कष्ट कुछ भी नहीं है।
* जो नारी शादी के बाद भी ससुराल से ज्यादा मैके का गुण–गान करती रहती है, वह पहले अपनी ससुराल और बाद में अपना मैके भी खो देती है।

* जो पुरुष अपने ससुराल वालों को अपने भाई समाज से ज्यादा महत्त्व देता है वह एक दिन भाई समाज को खोकर अकेला हो जाता है तब ससुरालवाले भी उसके साथ नहीं होते।
* शादी के बाद जो नारी ससुराल को ही देवर के रूप में भाई, ज्येष्ठ के रूप में भैया, सास के रूप में माता, श्वसुर के रूप में पिता, पति की बहनों के रूप में अपनी दीदी–बहन ढूँढ़ लेती है उसका घर ही सभी सुखों को देने वाला स्वर्ग होता है।
* शादी के बाद नारी का ज्यादा दिन मैके में रहना एवं मैके के लोगों का ज्यादा दिन उसकी ससुराल में रहना एक दिन उसे ही कष्ट पहुँचाता है एवं तब वह मैके एवं ससुराल दोनों को ही कष्ट पहुँचाने वाले के रूप में देखती है।
* नारी धर्म की धारा है जो खुद गंगा की तरह यात्रा एवं वियोग का कष्ट उठाती है और जहाँ जाती है उस जगह को तीर्थ बना देती है।
* मनुष्य का कर्म कर्मानुसार फल मात्र देने वाला होता है किन्तु उस कर्म का अनुभव परमात्मा ही अपनी इच्छानुसार कराता है। जैसे ईसा को शूली पर चढ़ाने वाले को भी दोषी नहीं ठहराना, बच्चे द्वारा बार–बार कष्ट देने पर भी माँ का अपने बच्चे को प्यार से दूध पिलाना।
* संसार का अच्छा–बुरा सभी अनुभव परमात्मा की ही इच्छा से प्राप्त होता है।
* हम अपने सभी कर्मों का फल परमात्मा को समर्पित किए बिना शांति का अनुभव नहीं कर सकते हैं।
* नीम का रूखापन जैसे शरीर को निरोग करता है वैसे गुरू का कटु लगनेवाला वचन जीवन को निर्मल बनाता है।
* सद्गुरू का संग जीव को प्रभु कृपा से ही प्राप्त होता है।
* गुरू को शिष्य का भाव पुष्प चढ़ावा के अतिरिक्त और क्या चाहिए ?
* जैसे बाती के अभाव में सब कुछ रहते हुए भी दीपक रोशनी नहीं देता है वैसे ही बड़ी से बड़ी खुशियों के लिए आयोजित उत्सव भी गुरू की अनुपस्थिति में सच्चे शिष्य के लिए आनंदहीन हो जाता है।
* जब मैं नहीं रहूँगा तब भी यह दुनिया रहेगी और तब उस दुनिया में सत्य, प्रेम एवं अहिंसा रूपी इच्छा के बीच रहने की इच्छा रहेगी मेरी।
* प्रभु मिलन की इच्छा में जो आनंद का अनुभव है वह वर्णनातीत है। प्रभु मिलन तो सभी अनुभवों का ठहर जाना ही हो सकता है।

* प्रभु तुम्हारी आँखों में बसे हैं, इसलिए मन बार–बार आँखों को बंदकर प्रभु को ही अपने अंदर कर लेने का अनुभव प्राप्त करना चाहता है, यही ध्यान का अभ्यास है।
* प्रभु संसार का रहस्य नहीं बल्कि वह सभी रहस्यों पर से पर्दा उठाने वाला है।
* प्रभु शरण में सभी रहस्य स्पष्ट एवं रहस्यहीन हो जाता है।
* प्रभु बुराइयों की भी अच्छाई बताने वाला है। जैसे काँटा को खेत की मेड़ पर रखने से लाभ, बाढ़ के बाद उपजाऊ मिट्टी का लाभ, प्रलय के बाद निर्माण का लाभ, पत्थर की कठोरता में सुंदर चेहरे के उदय होने का लाभ, कोयले की खदानों में दबे हीरे के निकलने का लाभ।
* प्रभु के चिंतन–मनन में बीता समय ही समय है।
* भाग्य ही तो परिश्रम के सामने सबसे पहले परास्त होता है।
* जो भगवान की दी हुई चीजों को भगवान का कहकर चढ़ाता है वह आपकी ईमानदारी है, और ऐसा भाव आपकी पूजा।

प्रेमधारा

* सम्पन्न को विपन्न बनाकर बराबरी लाने का फार्मूला सिर्फ धूर्त्त बुद्धिवाले ईर्ष्यालु लोग ही करते आए हैं जिसमें सम्पन्नता सिर्फ एक ही के हाथ आती है।
* बराबरी एक बोध है जिसे अध्यात्म के तरीके से ही प्राप्त किया जा सकता है।

* एक घर चलाने के लिए ईमानदारी से बनाया गया नियम ही देश चलाने के लिए भी काफी है।
* जहाँ छोटी–छोटी समस्याओं के निपटाने के लिए लंबी–लंबी पंक्तियों में खड़े करवाने की व्यवस्था हो, वह ईमानदार व्यवस्था कभी भी नहीं कहला सकती है।
* नियमों की जटिलता व्यवस्था को बेईमान बनाती है।
* प्रजातंत्र में प्रत्येक कार्य का सम्पादित करने के लिए समय निर्धारित किए बिना कर्मचारी ईमानदारी से कार्य नहीं कर सकते हैं।
* भारत के प्रत्येक घर में सरकारी नौकरियों में कार्य करनेवालों से उसके घर वाले ऊपरी आमदनी के बारे में पूछकर सम्मान देते हैं।
* भारत में ईमानदारी की चर्चा ज्पउम ूे जैसा विषय होकर रह गयी है।
* नेता ईमानदारी की बात कर रहे हैं, इससे बड़ी बेईमानी और क्या हो सकती है ?
* एक घंटा देर से मालिक सोए तो कई दिनों तक चर्चा होगी लेकिन उनके ही घर हर दिन नौकर देर से सोए तो दिन में झपकी मारना भी गुनाह माना जाता है।
* मजदूरों का पसीना, पानी की कीमत को बराबर भी नहीं एवं अमीरों का पसीना खून से भी ज्यादा कीमती ठहराया जाता है।
* अमीरों के घर के बेकार हिस्से में एक गरीब जब तक पड़ा रहेगा तब तक प्रजातंत्र बेकार एवं बेईमान कहलाकर खून से नहलाता रहेगा।
* अमीर जब बेखौफ हो जाते हैं तो गरीबी हथियार उठाती है।
* अमीर एवं अमीरी को ठीक से समझो नहीं तो राजतंत्र एवं प्रजातंत्र में अन्तर ही क्या है ?
* भारत में गरीबों की बात करने वालों को उग्रवादी कहा जाता है एवं अमीरों की खुले आम प्रशंसा नहीं करना राजनैतिक मजबूरी।
* प्रेम, सत्य और अहिंसा ही समस्त समस्याओं का निदान है।
* सुरक्षा प्रहरी एवं शारीरिक श्रम करने वाले कर्मचारियों का पेट बढ़ रहा हो तो उसे आलसी समझा जाए।
* सत्य विनम्रता से कहा जाए तो बहुत ही अच्छी बात हैं किन्तु सामने वाले को बुरा लगेगा इस कारण उसे नहीं कहा जाए तो यह सबसे बुरी बात है।
* संसार में ज्यादातर बुरी घटनाएँ इसलिए घटती है कि गलती करने वाले की पहली गलती पर हम चुप थे।
* घर से जब भी बाहर जाएं तो प्रसन्न मुद्रा में ही जाएं।
* घर के बाहर के तनाव को घर आते ही चर्चा नहीं करें एवं घर वाले भी अपनों के घर लौटते ही उससे सवाल न करें। इससे घर का माहौल अच्छा बना रहेगा।
* प्रेम, सत्य और अहिंसा से संसार की समस्त समस्यों का निदान ढूढ़े किन्तु इसके लिए इसे खुद अपनाना होगा।

* युद्ध के अभ्यास से ज्यादा कठिन है सत्य एवं अहिंसा का अभ्यास।
* युद्ध में हम हमेशा दूसरो से सतर्क रहते हैं किन्तु सत्य एवं अहिंसा के पालन में हमें सिर्फ अपने आप से सतर्क रहना होता है।
* सत्य एवं अहिंसा का रास्ता कठिन इसलिए है क्योंकि इसमें हमको आत्मानुसार बदलना होता है।
* गंदा नित्य करो एवं सफाई सप्ताह में एक बार करो यह धर्म नहीं बल्कि आलसियों का आलस्य या अतिव्यस्त लोगों की मजबूरी है।
* कलियुग में माता–पिता अपनी संतानों से धन मांगते हैं बिना यह पूछे कि धन आया कहाँ से है ?
* सफलता चाहते हो तो अपनी असफलता का कारण सिर्फ अपने को मानो जिसमें लोग, सत्य एवं साधन कुछ भी दोषी नहीं ठहराए जाएं।
* मृदु स्वभाव, प्रेमी जनों से मातृवत् व्यवहार मनुष्य को लोकप्रिय बनाता है।
* विद्यालय एक मन्दिर है और पुस्तक मन्दिर की प्रतिमा है।
* पन्ने पूजा की थाली है और शब्द चन्दन, अक्षत, धूप तथा नैवेद्य है।
* अक्षर मन्दिर की सीढ़ी, शिक्षा मन्दिर का दीपक और छात्र–छात्राएं दीपक की लौ हैं।
* दीपक की लौ रूपी छात्र–छात्रा ही देश के भविष्य हैं जो देश से अंधकार को दूर करके प्रकाश लायेंगे।
* दीपक को जलाने वाले शिक्षक माचिस की तीली हैं।
* आदमी को आदमी से जितना कष्ट हुआ है उतना किसी और से नहीं।
* अपनी विफलताओं के कारणों के बारे में निरन्तर जानने की कोशिश एवं उसे सुधार कर पुनःसफलता के लिए प्रयास करना, यह महान लोगों का गुण है।
* छोटी भी सफलता वर्षो प्रयास से उत्पन्न थकान को दूर कर देती है।
* ज्यादा बार मनुष्य जब आपके फायदे की बात कर रहा हो तो समझो उसमें कहने वाले के नुकसान का जो खतरा है उससे वह भयभीत होकर कह रहा है।
* हम निःस्वार्थ कुछ भी नहीं कहते।
* अपनी भलाई एवं बुराई के लिए जिम्मेवार आप खुद हैं।
* आचरण जब बोलने लगता है तो शब्द कहने की जरूरत ही नहीं पड़ती है।
* महिलाओं के लिए सृजन की जा रही ज्यादातर नौकरियां पुरूषों को प्रभावित करने के लिए हैं जो हमारे मानसिक पतन का प्रमाण है।

प्रेमधारा

* क्रोध नहीं करना चाहिए किंतु सदा शांत रहनेवाला व्यक्ति अगर किसी विषय पर क्रोधित दिखे तो क्रोध के कारणों पर न्यायसंगत विचार करने की जरूरत है।

* कलियुग में धन के लाभ के बिना सभी लाभ तुच्छ समझे जाते हैं।
* जो विचार आचरण में उतारे बिना रखा जाता हो उसका प्रभाव नहीं पड़ता है।
* जब भीड़ सत्य का पर्यायवाची बनते दिखे तो न्याय की उम्मीद नहीं की जा सकती है।
* शासक एवं शासन का एक मात्र आधार सत्य हो तभी न्याय के राज्य की स्थापना की जा सकती है।
* एक व्यक्ति कमजोर दिख सकता है किन्तु उस व्यक्ति का सत्य विचार एक दिन करोड़ों को हिला कर रख सकता है।
* कमजोर से कमजोर व्यक्ति भी अगर अपने आचरण में सत्य का पालन करने लगे तो एक दिन वह सबसे मजबूत व्यक्ति के रूप में जाना जा सकता है।
* हजारों सत्य को छापने वाला अखबार भी आखिर एक सत्याचरण वाले व्यक्ति के बिना परिवर्तन का कारण नहीं बन पाता है।
* सत्य छापने का कारण अगर अर्थोपार्जन हो तो वह कीचड़ में घुले हुए इत्र की तरह दुर्गन्ध देने लगता है।
* जो दिन भर दूसरों के झूठ के बारे में जग–जाहिर करता रहता हो उसें अपने सत्य के बारे में पहले बताना चाहिए।
* बड़े संस्थानों का बड़ा आदमी अगर रहन–सहन से साधारण नहीं दिखे तो समझें एक बड़ी संस्था को एक छोटा आदमी चला रहा है।
* बड़ी संस्था का बड़ा आदमी जब रहन–सहन से साधारण दिखे तो समझो एक बड़ी संस्था को एक बड़ा आदमी चला रहा है।
* मनुष्य हर दिन अपने आचरण से गिर सकता है, किन्तु जब तक उसे अपने गिरने का अहसास है तब तक उसे उठने का प्रयास कहा जाएगा।
* विचार कीमती चीज है किन्तु अच्छे विचारों के आचरण वाला अमूल्य है।
* आप किसी को सत्य के लिए प्रेरित कर सकते हैं, बाध्य नहीं क्योंकि उसके कुकर्मों की कालिख काफी गहरी है।
* शिक्षक, चिकित्सक एवं न्यायाधीश को पृथ्वी का भगवान कहा जाता था, किन्तु आज ये सभी अपनी जवाबदेही भूल रहे हैं।
* जिस प्रकार धुरी के अभाव में चक्के नहीं घूम सकते हैं, ठीक उसी प्रकार आज धन के बिना कोई मनुष्य पुण्य या पाप कुछ भी करने को तैयार नहीं है।
* किसी की कमियों को गिनाने मात्र से कोई महान नहीं बन सकता है बल्कि ऐसा करने वाले को निम्न श्रेणी का ही व्यक्ति मानना चाहिए।
* एक दिन में कोई महान नहीं बनता है, किन्तु एक दिन महान कार्यों की शुरूआत शुरू किए बिना कोई महान कैसे बन सकता है ?
* नीच एवं महान दोनों ही बनने की कोई उम्र नहीं होती है।

* नहीं पढ़नेवाला विद्यार्थी, नहीं काम करने वाला पति, घर नहीं संभालने वाली पत्नी, दुख में काम नहीं आने वाला मित्र, बेमौसम गर्मी, ठंडा एवं वर्षा हमेशा ही कष्ट देते हैं।
* मृत्यु करीब हो और जीवन में कोई एक भी अच्छा काम आपने नहीं किया हो तो सच को सबके सामने कबूलकर पलभर में आप महान कहला सकते हैं।
* कहावत है 'अंत भला तो सब भला', किन्तु यह भी उसी पर लागू होता है जिसने किसी कार्य की शुरूआत की हो।
* नियमित रूप से जानवर को भी खिलाओ तो वह तुम्हारे आने का इंतजार करेगा किन्तु मनुष्य ही ऐसा है जिसे कई जन्मों तक भी खिलाओ तब भी तुम्हारा बुरा कभी भी, कहीं भी कर डालेगा।
* सर्प काटा हुआ मनुष्य बच सकता है किन्तु मनुष्य द्वारा काटा गया सर्प कभी भी नहीं बच सकता है।
* सर्प एवं मनुष्य में मनुष्य ही ज्यादा खतरनाक है।
* सर्प अँधेरे में, जंगलों में काटता है और मनुष्य कभी भी, कहीं भी किसी को नुकसान पहुँचा सकता है।
* सभी पशुओं की बुराइयाँ एक ही मनुष्य में पाई जा सकती हैं किन्तु अच्छाई एक मनुष्य के अंदर किसी एक पशु की ही हो सकती है।
* सदा ही लाभ–हानि की चिंताओं में रहने वाला व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं रह सकता है।
* दो महिलाओं को गप करने से रोकना, चींटियों को कतार में चलने से रोकना, भेड़ों का भीड़ से अलग चलने को कहना, खुजली में खुजलाहट करने से रोकना, बाढ़ के पानी को गंदा होने से रोकना जितना मुश्किल है उससे ज्यादा मुश्किल है झूठ बोलने वाले को झूठ बोलने से रोकना।

प्रेमधारा

* पाप का अंत पापी के साथ ही होता है।
* पृथ्वी पर एक भी उदाहरण नहीं है जिसमें पापी के रहते पाप का अंत हो गया हो।
* पाप का संग जो करता है वह पापी है। अगर व्यक्ति पाप ही करना बंद कर दे, तो वह पापी रहा कहाँ, फिर भी उसके पिछले पापों के बारे में न्यायसंगत विचार करना ही होगा।
* सजा या पुरस्कार हमेशा ही अतीत की घटनाओं को लेकर मिलता है, इसलिए पापी द्वारा अतीत में किए गए पाप के बारे में न्यायिक विचार करना ही होगा अन्यथा अराजकता सी स्थिति पैदा हो जाएगी।
* पापियों के आत्मसर्मपण के बाद भी अगर पापी अपने अतीत के प्रति सजा नहीं पुरस्कार चाहता हो तो यह शासन की कमजोरी है, न कि पापी का आत्मसमर्पण, और न ही अपने कुकर्मों के लिए पापी का पश्चात्ताप।
* मनुष्य बदलता है किन्तु अपनी सुविधाओं के लिए व्यक्ति में जो बदलाव होता है वह हमेशा ही अस्थाई होता है। न्याय एवं सिद्धांतों के लिए जो बदलाव आए, वही स्थाई है।
* मृत्यु एक दिन बिना बुलाए भी आती है, किन्तु कुछ लोगों ने परहित के लिए मृत्यु को बुलाया था, वे ही ऋषि थे।
* मनुष्य हमेशा ही बड़े लाभ के लिए छोटे लाभ का त्याग करता है। जैसे कुछ दिन जेल जाकर पूरे खानदान के लिए सत्ता सुरक्षित कर लेना। ऐसे लोगों से देश की भलाई नहीं हो सकती है।
* हर सुबह सूर्योदय होने से ही होती है, उसी प्रकार हर कार्य निरंतर करते रहने से एक दिन पूरा हो जाता है।
* 'फल की इच्छा नहीं रखो एवं कर्म करो', यह सुना हुआ ज्ञान है किन्तु प्रत्येक कर्म को करने के पूर्व उसके परिणाम के बारे में ठीक से नहीं सोचने के कारण ही पृथ्वी पर रहना कष्टकारक होता जा रहा है, यह आज का ज्ञान है।
* आज का सत्य है– प्रत्येक कर्म को करने के प्रति उसके फल के बारे में ठीक से विचार करो, फिर कर्म करो, तभी संसार सुखमय बना रहेगा। यह आज का नया धर्म है।
* फल के प्रति उदासीनता नहीं, जागरूकता लाने की जरूरत है। तभी हम ईश्वर के इस राज्य को बचा पाएंगे, आनंदमय बनाए रख पाएंगे।
* जो किसी की समझ में नहीं आए, हम लोगों ने आज तक उसी को ज्ञान कहा है।

* धूप जब प्रचंड हो, ठंड जब बर्फ हो, वर्षा जब छुपने की जगह न दे, तब भी जो सब कुछ कर रहा हो, पूरे प्रकृति से अकेले लड़ रहा हो, वह गरीब है, धरती का नसीब है।

प्रेमधारा

* विनम्रता के बिना सारी योग्यता आत्मा के बिना शरीर जैसी ही है।
* घर में नित्य दण्ड पाने वाले युवा एवं बच्चे भी आज अपने शिक्षकों की हलकी डाँट पर उन्हें अपमानित करने से बाज नहीं आते हैं।
* आज शिक्षक छात्र–छात्राओं की छोटी–छोटी गलतियों को भी क्षमा नहीं कर पाते हैं।
* शिक्षकों एवं छात्र/छात्राओं के बीच पिता एवं पुत्र/पुत्री के जो संबंध पहले थे वे कमजोर पड़ रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप बाल एवं युवा पीढ़ी उच्छृंखल होती जा रही है।
* छात्र–छात्राओं एवं शिक्षकों के बीच खराब हो रहे संबंध में शिक्षक ही ज्यादा दोषी हैं, किन्तु छात्र–छात्राओं के कम दोषी होने के बाद भी उन्हें ही बड़ा दोष लगता है।
* शिष्य वही है जो गुरु के कठोर शब्दों में ही अपनी भलाई समझता है एवं उसके द्वारा दी गई सजा को ही आत्म मुक्ति का मार्ग।
* गुरु द्वारा दी गई सजा ठीक वैसी है जैसे गद्दे के अंदर पड़ी धूल जिसे पीट–पीटकर नम्र एवं शुद्ध किया जाता है।
* भौतिक उपलब्धियाँ तभी तक लुभाती रहती हैं, जब तक वे प्राप्त नहीं हो जाती हैं। प्राप्त होते ही कच्चे फल की तरह नित्य सड़ कर गंदगी ही फैलाती हैं।
* सुकर्मों का कल्पतरू बनो, जहाँ पतझड़ कभी नहीं फटकता।

* निर्माण का बीज कभी मरता नहीं, सृष्टि में बदलाव कभी रूकता नहीं। हमारा मन भी उसका ही एक हिस्सा है, इसलिए बदलना चाहे तो इसमें इसका क्या दोष है ?
* बच्चे खूब बोलना चाहते हैं, युवा खूब दौड़ना चाहते हैं, बुढ़े मौन चाहते हैं। सबको अपनी उम्र के साथ जीने दो, यही उनकी आजादी है।

– श्री प्रेम

प्रेमधारा

* जब सभी उम्मीदें खत्म हो जाती हैं एवं उसी बीच कोई सहायता पहुँचती हो और अचानक ग़म खुशियों में बदल जाते हैं तो कहते हैं कि प्रभु की कृपा है।
* आनंद की प्राप्ति के बाद प्रभु कृपा का जो अनुभव मनुष्य को होता है वह पहले ही प्राप्त हो जाय तो यह नित्य जीवन में प्रभु की उपस्थिति का अभ्यास कहा जाएगा।
* आशाएँ पूरी न हो, कष्ट दूर न हो, आनंद दूर–दूर तक न दीखता हो फिर भी 'प्रभु ने जो कुछ किया होगा वह अच्छा ही किया होगा', यह विचार प्रभु के निर्णय के प्रति मनुष्य का अटूट विश्वास है।
* जब कष्ट बिल्कुल दूर न होने वाला हो और उसके बाद भी जिसके ओठों पर आनंद की मुस्कान हो, वे सिद्ध हैं।
* जो घोर कष्ट झेलेगा और फिर भी किसी को कोई दोष नहीं देगा, एक दिन वही प्रभु के निकट जाना जाएगा ।
* जिसके पास गुजरने से दुख आनंद में बदल जाता है, कृपण दानी बन जाता है, रोगी स्वस्थ हो जाता है, वह प्रभु का ही कोई नाम होगा।
* जिसका खजाना लूट गया हो, जिसका राज्य छिन गया हो, जिसका इष्ट–मित्र साथ छोड़ गया हो फिर भी जो धैर्य से धर्म की राह चलने के लिए उपदेश दे रहा हो, उसका ही धर्म एक दिन सभी कबूल करेंगे।
* राजा के धर्म को कोई नहीं मानता किन्तु गद्दी छोड़े राजा के पीछे अपना राज्य लुटाने सैकड़ो लोग उसके पीछे–पीछे हो जाते हैं, वे अवतार हैं।
* अवतार का कोई राज्य नहीं होता बल्कि सभी राज्यों में उसके बताए नियमों का ही पालन किया जाता है।
* जो सब कुछ छोड़ सिर्फ ईश्वर का ही संग स्वीकारता है, एक दिन उसका सब कुछ उसके चरणों में पड़ा मिलेगा।

* तुम जिसे प्राप्त करने के लिए सभी पाप–पुण्य किया करते हो वही जब तुम्हें प्राप्त हो जाता है तो छोटा दिखने लगता है और एक नए बड़े के लिए पुनःनए पाप–पुण्य में लग जाते हो, यही माया है।
* माया उसके वश में है जो मांगता नहीं सिर्फ देता है, लेता नहीं सिर्फ लौटाता है, पीछे–पीछे दौड़ता नहीं बल्कि दौड़ते हुए लोगों पर हँसता है, एक दिन वही मुक्ति दाता कहलाता है।

प्रेमधारा

* मुक्ति का मार्ग प्रभु भजन के लिए नव संभ्रातों द्वारा पिछड़ा कहलाने में है न कि उनके साथ देर रात तक क्लब में नंग–धड़ंग नाचने–गाने में हैं।
* जो जीवन देश की हरियाली, नदियों एवं पहाड़ों को बचाने के लिए जीया गया हो, उसके प्रयास को भागीरथ प्रयास कहा जाएगा।
* हम अपने दो–चार बच्चों के लिए जितना व्यस्त रहते हैं उसका हजारवाँ भाग भी देश के लिए कभी नहीं सोचते, न करते हैं फिर भी देश हमें देश–निकाला नहीं करता, इससे ज्यादा एक देश अपने नागरिकों के लिए और क्या कर सकता है।
* देश को दोष देने की जगह खुद के ईमान के बारे में ईमानदारी से सोचो तो एक दिन खुद से घृणा हो उठेगी तुम्हें।
* जिन्दगी के लिए समय का बंटवारा करो फिर पता चलेगा कि अपने लिए क्या किया एवं देश के लिए कितना किया।
* देश के लिए हमने देश के नाम पर अपना घर, अपनी गाड़ी एवं सुविधाओं का पहाड़ ही तो खड़ा किया है।
* मुक्ति का मार्ग उपदेश देने में नहीं बल्कि उपदेश पर चलने में है।
* मुक्ति का मार्ग रात्रि के तीन पहर बीतते ही शुरू हो जाता है।
* मुक्ति का मार्ग बस स्टैंड पर बुजुर्गों को चढ़ने के लिए अपना नम्बर दे देने में हैं एवं गाड़ी में खड़ी महिला को जगह देकर खुद खड़े होने में है।
* मुक्ति का मार्ग वर्ग में शिक्षकों की डाँट को अपने जीवन का भाग्य समझने में है एवं उनके प्यार को पढ़ाई की थकान को दूर करने के लिए एक सुखद अनुभूति समझने में है।

* मुक्ति का मार्ग गुरु के मन में बस जाने में एवं उनके आदेश पर जीवन उत्सर्ग कर देने में है।
* मुक्ति का मार्ग गर्मी की छुट्टी के सैर–सपाटे को छोड़ माँ–बाप के साथ समय गुजारने में है।
* मुक्ति का मार्ग युवावस्था में रोगियों का सहारा एवं सत्य के लिए मर मिटने वाला बनने में है।
* मुक्ति का मार्ग अपनों एवं परायों को भूल जरूरतमंदो के बीच न्यायपूर्वक साधनों का बंटवारा करने में है।
* सत्ता प्राप्ति के साथ ही यह गलतफहमी सत्ताधारियों को हो जाती है कि यह कुर्सी हमेशा के लिए उसे मिली है और फिर वहीं से शुरु होता है पतन।
* सत्ता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक दिन सत्ता की ओर बढ़नेवाला, सत्ता प्राप्ति के साथ ही अपने अहंकार में किए जाने वाले गलत निर्णयों के कारण सत्ता से दूर जाता हुआ एक दिन सत्ता से बेदखल हो जाता है।
* सत्ता के खेल में विनम्रता एवं सेवा जहाँ सत्ता दिलाती है वहीं सत्ता प्राप्ति के बाद उत्पन्न अहंकार एवं कुआचरण उसे सत्ता से बेदखल करता है।
* सत्ता एवं संपत्ति के दर्प से जो बच जाए वही सिद्ध है।
* अधिकार ज्यादातर गलत ही करवाता है, जबकि कर्त्तव्य हमेशा ही अच्छा करवाता है।
* अधिकार एवं कर्त्तव्य की दौड़ में कर्त्तव्य बहुत पीछे छूट गया है जिसके कारण व्यक्ति एवं समाज हिंसक होता जा रहा है।
* कर्त्तव्य पालन में हमेशा ही शब्द एवं अंग को नियंत्रित रखना पड़ता है जबकि अधिकार में दोनों ही बेलगाम हो जाते हैं।
* कर्त्तव्य तहखाने में पड़ा सच है जो रहते हुए भी भवन में अपनी चमक नहीं बिखेरता एवं अधिकार दरवाजे की कुंडी की तरह जब चाहे आने–जाने वाले को रोक अपनी शक्ति का अहसास दिलाता रहता है।
* कर्त्तव्य की सुबह नहीं होती है। अगर इसका अस्त हो गया होता तो शायद पृथ्वी लाशों के दुर्गन्ध से पट गई होती, क्योंकि अधिकार ने आज तक यहीं किया है।
* मारने की शक्ति से जब तक व्यक्ति, समाज एवं देश को शक्तिशाली समझा जाता रहेगा तब तक हिंसा मुक्त समाज का निर्माण नहीं किया जा सकता है।

* हिसां के दर्प से मनुष्य का चेहरा जंगली जानवर से भी ज्यादा भयावह दिखता है, फिर भी लोग उसकी जय–जयकार कर अपना प्रेम दर्शाते हैं। यह उस प्रेम करने वाले की महानता है या खून से रंगे हाथों की मजबूरियाँ।
* हिंसा का कारण जो कुछ भी हो, यह अमन–चैन का रास्ता कभी भी नहीं बन सकता है।
* अहिंसा का पक्ष लेना अगर कमजोरी है तो काश! ऐसी कमजोरी भगवान सबको दे देता तो दुनिया खरबों रूपयों से मारने वाले यंत्र बनाकर भूखे तो नहीं मरती।
* पृथ्वी पर आज लोगों को मारने वाले यंत्रों पर जितना खर्च हो रहा है उतना जीवन पर नहीं फिर भी हम अपने को अच्छा बताने से नहीं थकते।
* मारने की हममें कितनी क्षमता है अगर यही हमारी अच्छाई है, हमारे सम्मान पाने का कारण है तो एक दिन लोगों की अनुपस्थिति में न तो ऐसी अच्छाई एवं न ही ऐसा सम्मान पाने वाला कोई रहेगा।

प्रेमधारा

* आज सारी जातियां वैश्य हो गई हैं। संन्यास आश्रम, गृहस्थाश्रम एवं उपासना के सभी स्थल व्यापारिक नियमों से संचालित होते हैं।
* सौ वर्ष पहले विदेश जाकर उपदेश के बदले धनार्जित करने वाले एक संन्यासी ने कभी यह सोचा भी नहीं होगा कि एक दिन भारत के सभी तथाकथित धर्मोपदेशक विदेश धनोर्पाजन के उद्देश्य से ही नाना प्रकार के रूप धारणकर जाएँगे और उदाहरणस्वरूप उनका ही नाम लेंगे।
* किसी व्यक्ति की अच्छाई की प्रशंसा करने का यह मतलब नहीं होता है कि उसकी किसी बुराई की निंदा नहीं की जाय।
* बड़े नाम के द्वारा की जाने वालो बड़ी गलती भी भीड़ की ऊँची आवाज़ से दबा देने का मनुष्य का भेड़िया सदृश स्वभाव है।
* अनुयायी अंधा होता है। वह आचरण की नकल करने की जगह पूरी जिन्दगी अपने आदर्श की वेश–भूषा ही उतारने में बिता देता है।
* मनुष्य वही है जो भेड़ों की चाल से अलग है, किन्तु ऐसे मनुष्यों को ढूँढना मुश्किल है।
* कलियुग में आर्थिक लाभ के लिए जी–हुजूरी करनेवालों की संख्या अनगिनत मिलेगी।
* पाप को हजार बार काटने से, उलट–पुलट कर देखने से भी पाप ही मिलेगा। इसलिए उससे जितनी जल्द हो सके अपने को बचा लेना चाहिए, नहीं तो एक दिन पापी को उसके पाप के बदले उलट–पुलट कर सभा में तड़पाया जाएगा।
* पापी भी पाप को जानता है फिर भी वह पूछता चलेगा कि पाप क्या है। ऐसे ही लोगों की भीड़ आज धर्म सभाओं में मिलेगी।

* दो चार लोगों के द्वारा माने जानेवाले धर्म का भी प्रभाव हजारों वर्ष के बाद भी खत्म नहीं हुआ है और आज लाखों लोग धार्मिक चर्चाओं में जुटते हैं फिर भी संसार आकंठ झूठ से पटा हुआ है।
* आज धार्मिक चर्चाओं के लिए जुटने वाली लाखों की भीड़ में शामिल होने से कुछ नहीं मिलता किन्तु हाँ धार्मिक चर्चाओं के लिए भीड़ जुटाने वाले आमंत्रण पत्र के सादे भाग का इस्तेमाल कुछ अच्छी चीजों को लिखने के लिए किया जा सकता है।
* अच्छी एवं बुरी दोनों ही बातों के सबसे नजदीक हमारा मन ही होता है। अतःइसे ही ठीक से रखने की जो विद्या है, वही महाविद्या है।
* कल्पनाओं की उड़ान में भी वास्तविकता नहीं प्रतीत हो तो कोई उसे नहीं पढे.गा फिर जो जिन्दगी वास्तविकता से दूर है उसे कौन पढ़ेगा।
* कसम खानेवाले लोग कहीं न कहीं अपने अतीत के झूठ से संबंध रखते हैं, वादा तोड़ने से संबंध रखते हैं जिसके कारण उनके सहज कथन पर भी लोगों का विश्वास नहीं जमता।
* सम्पूर्ण भारत भारतीयों का है जो ऐसा नहीं मानने के लिए तैयार हैं वे भारत को अपने घर का रसोई घर समझते हैं जिसका कारण राष्ट्र की अराष्ट्रीय सरकार है।
* देश की रक्षा का धर्म सभी धर्मों से ऊपर है।
* जो ज्ञान अपने देश को बचाने में सक्षम नहीं हो, उस ज्ञान का परित्याग कर देना चाहिए।
* हम कुछेक दिनों के सत्ता सुख के लिए सैकड़ों वर्षो तक देश की जनता को कष्ट में नहीं डाल सकते हैं।
* देश के स्वभिमान के सामने व्यक्ति के स्वाभिमान की बात करने से ज्यादा नीचता पूर्ण बातें और क्या हो सकती है ?

* माँ के चेहरे की झुर्रियों में ममता की अनंत कहानियाँ लिखी हुई है।
* माँ की झुर्रियां, बरगद की छाँह, सुबह की बेला, किसानों के कंधे पर हल लिए शाम को घर लौटना, एक अजीब–सी अनुभूति दे जाता है जिसे समझने के लिए शब्द नहीं, बस थोड़ी देर की निश्चिन्तता चाहिए।
* घर का खाना एवं सफर की कहानी, हमेशा ही याद आती रहती है।
* थकान के बाद एक प्याली चाय, मुस्कान के साथ कोई अच्छा तोहफ़ा, हमेशा ही अच्छा लगता है।
* विद्यालय में अंतिम घंटी बजने का इंतजार, स्टेशन पर गाड़ी पहुँचने का इंतजार, जिस तरह हमें रहता है, वही इंतजार प्रभु मिलन को चाहिए।
* माता सीता एक बार बिना पूछे घर की सीमा लाँघती है तो माता को, उनके पति को एवं मित्रों को कितना कष्ट हुआ। आज वैसी महिलाओं को अपने शुभ–अशुभ का ख्याल करते हुए विचार करना चाहिए कि अगर वे नित्य बिना सहमति के कहीं जा रही है तो उसका परिणाम क्या होगा ?
* उम्र बढ़ने पर स्वभाव पुरूष से ज्यादा निर्भर होने लगता है एवं महिला बढ़ती हुए उम्र के साथ स्वतंत्र ख्याल की होती जाती है।
* शादी के बाद नारी का मैके से ज्यादा लगाव वैवाहिक जीवन में दरार पड़ने की संभावना बढ़ा देता है जो शांति एवं समृद्धि के लिए बाधक है।
* सामान्य मनुष्य उसकी प्रशंसा करता है जो उसकी प्रशंसा करता हो।
* अपनी प्रशंसा करवाने के लिए कुछ लोग दिन भर गलत लोगों की भी प्रशंसा कर अच्छाई को कमजोर करते रहते हैं।

* अगर मन अकेले रहने के लिए तैयार हो, शरीर अपना कार्य करने के लिए तैयार हो एवं ईश्वर की कृपा से मृत्यु के पलभर पूर्व भी जब वह किसी की सेवा न ले तो वह भाग्यशाली है।
* आचरण को आधार बनाकर जो उपदेश दिया जाय वही अनुकरणीय है।
* पल भर में सिर्फ मृत्यु आती है बाकी सबकुछ इंतजार कराता है।
* अपने सुख के लिए दूसरे को कष्ट देने से बड़ा अपराध कुछ भी नहीं है।
* जो कष्ट आप सह सकते हैं उसके लिए कभी भी दूसरे से मदद न माँगें।
* दूसरों को जो सुख देना आपके वश में है बिना कहे उसकी मदद करनी चाहिए।
* माँगने पर मदद करना अच्छे लोगों का स्वभाव है। माँगने पर सामर्थ्य रहते हुए भी मदद नहीं करना नीच लोगों का स्वभाव है, एवं दूसरों की जरूरत में बिना मदद माँगे सहयोग करना उच्च कोटि के लोगों का स्वभाव है।
* जो सत्य बोलने की इजाजत नहीं देता हो वह गुरु नहीं हो सकता है।
* गुरु भय पैदा नहीं करता बल्कि अज्ञान दूर कर भय से मुक्त करता है, जो ऐसा न करे वह गुरु नहीं।
* गुरु शिष्य के बीच का संबंध सिर्फ शिष्य द्वारा गुरु की प्रशंसा करते रहने की शर्त पर हो तो गुरु एवं शिष्य दोनों ही एक दिन गर्त्त में जाएंगे।
* जब शिष्य यह जान जाए कि गुरु झूठ बोल रहे हैं तो उसे अपने अत्यन्त ही प्रिय की मृत्यु से भी ज्यादा कष्ट पहुँचता है।

प्रेमधारा

* क्रोध स्मृति को नष्ट कर देता है।
* जवानी में अपने से अपनी प्रशंसा करनेवाले को बुढ़ापे में अपनी प्रशंसा में बार–बार बोलने की बीमारी लग जाती है जिसे कोई नहीं सुनना चाहता है।
* वृद्धावस्था की बड़ी बीमारी स्मृति का लोप होना है। इससे बचने के लिए युवावस्था से गुजरनेवालों को क्रोध का संग छोड़ देना चाहिए एवं आवश्यकतानुरूप ही बोलने की आदत डालनी चाहिए।
* आजकल बिना काम किए धन लेने की प्रवृत्ति जोरों से बढ़ रही है।
* धन के लेन–देन में किस पर विश्वास किया जाए, किस पर अविश्वास, इस चिंता में पड़ने की बजाय लेन–देन के विषयों को पारदर्शी एवं समय–समय पर औचक निरीक्षण वाली व्यवस्था के द्वारा सुव्यवस्थित करना चाहिए।
* कलियुग में सभी परीक्षाओं में मनुष्य उत्तीर्ण भी हो जाय तब भी धन के विषय पर किसी न किसी बिन्दु पर जाकर वह बेईमान हो ही जाएगा।

* गुरु का जीवन शीशे से भी ज्यादा पारदर्शी होना चाहिए।
* साधु हो या शैतान, गृहस्थ हो या संन्यासी, सभी व्यक्तिगत धन एवं प्रशंसा के लिए कार्य करते हैं एवं जो ऐसा नहीं करते हैं वे सिद्ध हैं।
* भगवान का नाम लेकर जितना दुष्कर्म पृथ्वी पर हुआ है एवं हो रहा है, उतना शैतान का नाम लेकर कभी नहीं हुआ है।
* भगवान का नाम लेकर ज्यादा दुष्कर्म हो रहा है, आखिर ऐसा क्यों ? ऐसा सवाल करने वाले को धर्म के विरूद्ध आचरण करने का दोषी ठहराकर जनता को उसके विरूद्ध खड़ा करवाया जाता है।
* कलियुग में धन के लिए सबसे ज्यादा अपराध हो रहे हैं। इसलिए अपराध को रोकने के लिए व्यक्तिगत धन एवं सुविधा भोग की सीमा बाँधनी होगी।
* व्यक्तिगत धन अर्जित एवं संचित करने की सीमा के बारे में एक विकसित समाज एवं देश को सोचना ही पड़ेगा नहीं तो प्रत्येक घर का आँगन एक दिन रक्त–रंजित हो उठेगा।
* आज न्यायालय में धन के लिए जितने मुकदमें चल रहें है उतना किसी अन्य विषयों को लेकर नहीं फिर भी राष्ट्र व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय धन के बारे में ठीक से चिंतन नहीं कर रहा है।
* समृद्ध एवं शांत विश्व के लिए यह समझने की जरूरत है कि धन के सभी श्रोत प्रकृतिगत हैं, अतःइस पर पृथ्वी के सभी लोगों का समान अधिकार है। इसके लिए एक दूसरे को नीचा दिखाने एवं अपने शक्ति प्रदर्शन के द्वारा कमजोर राष्ट्र को अपना शिकार बनाने की छूट किसी भी राष्ट्र को नहीं दी जा सकती है।
* मनुष्य ने धरती पर अपनी कमजोरी की रेखा खींच रखी है जिसे सम्मान एवं गर्व से हम देश कहते हैं। काश! देश विश्व ही रहा होता तो इतने अस्त्र–शस्त्रों का निर्माण एक दूसरे को मारने के लिए नहीं किया गया होता।
* अगर हम दुनिया को एक बेहतर दुनिया बनाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते हैं तो नित्य एक बेहतरीन दुनिया की कल्पना ही करें।
* कलम विवश हो उठती है कागज पर चलने के लिए, यह रहस्य ईश्वर के अतिरिक्त और कौन जान सकता है ?
* क्या कलम विवश हो उठती है कागज पर चलने के लिए, यह मैं नहीं जानता किन्तु ईश्वर सबकुछ जानकर ही ऐसा कर रहा है, यह मेरा विश्वास है।
* ईमानदारी अल्प साधन में ही निवास करती है।
* सुविधाभोगी जीवन ईमानदार हो ही नहीं सकता है।
* समय आने वाला है जब 'ईमानदारी' शब्दकोष से हटा दी जाएगी क्योंकि इस शब्द का उपयोग करनेवाला कोई नहीं रह जाएगा।

* अस्वस्थ शरीर बहुत चाहकर भी क्या कर सकता है, इसलिए अपने स्वास्थ्य की रक्षा हर हाल में करनी चाहिए।
* ईश्वर का सबसे सुंदर फल किसी पिता एवं गुरु के लिए उसका सच्चा पुत्र एवं शिष्य है।
* माता–पिता एवं गुरु जो कुछ अपनी संतान एवं शिष्य को देते हैं, उसके बारे में वे खुद सबको बता देते हैं एवं बदले में कुछ न कुछ माँगते हैं फिर पृथ्वी पर निःशुल्क क्या है ?
* निःशुल्क सूर्य की रोशनी, चाँद की शीतलता एवं अनेकों ऐसी चीजे हैं जिनकी हम कद्र नहीं करते हैं इसलिए प्रभु ने कलियुग में माँ के मन को कठोर एवं गुरु के मन को व्यापारी बना दिया है।
* खिड़की पर गंदा कपड़ा फैलाने से पूरा घर बीमारियों का वास स्थल हो जाता है।
* घर के कोने में घर की शक्ति का वास होता है किन्तु अधिकांश घरों में कोने का उपयोग बेकार एवं गंदी चीजों को रखने के लिए किया जाता है।
* जो माँ अपनी संतान को अपनी युवा अवस्था में गलत उपदेश देती रहती है वही अपनी संतान की मृत्यु का कारण बनती है एवं बुढ़ापा में बेसहारा हो जाती है।
* ऐसी माताओं की कमी नहीं जो गलती से भी अपनी संतान को सच्ची राह पर चलने के लिए नहीं कहती है।
* आज की माताएं अपनी संतान से सिर्फ अतुल धन की इच्छा रखती हैं।

प्रेमधारा

* कलियुग में बच्चे अपने ही विद्यालय की चीजों को जानबूझकर तोड़कर खुश होते हैं, युवा जिन कारखानों एवं दफ्तर से रोटी कमाते हैं उनका ही नुकसान पहुँचाने से नहीं चुकते हैं एवं बूढ़ा–बूढ़ी अपने ही घर की शिकायत टोले–मुहल्ले में घूम–घूमकर करते पाये जाते हैं।
* कलियुग में महावत द्वारा हाथी को, शिकारी द्वारा शेरों को अपने वश में तो करते हुए आप पाएंगे किन्तु मनुष्य, मनुष्य के वश में नहीं रह गया है।
* कलियुग में मनुष्य सिर्फ धन के वश में रह गया है।
* सत्युग में मनुष्य सत्य से, त्रेता में धर्म से, द्वापर में नीति से एवं कलियुग में बुद्धि से वश में किया जाता रहा है।
* सत्युग में बुद्धि का प्रयोग शून्य के बराबर था, त्रेता में म्यान में जंग लगी तलवार की तरह, द्वापर में विचार के लिए था, किन्तु कलियुग में बुद्धि के वगैर कोई कार्य ही सिद्ध नहीं किया जा सकता है।

* बात – बात पर बुद्धि का प्रयोग मनुष्य को छली बनाता है जिससे महान व्यक्ति का उदय कभी नहीं हो सकता है।
* बुद्धि के बार–बार प्रयोग से मनुष्य–मनुष्य से जितना भयभीत है उतना न सर्प से, न बिच्छू से न जंगल में जंगली जानवरों से।
* बुद्धि का बार–बार प्रयोग मनुष्य को ईश्वर कृपा से कोसों दूर ले जाता है।
* ईश्वर तो सिर्फ प्रेम के वश में है।
* सत्य के पालन से आप ईश्वर जैसा कहला सकते हैं किंतु प्रेम से ईश्वर आपके वश में हो जाते हैं।
* जहाँ सत्य एवं प्रेम का नित्य अभ्यास किया जाता है वहाँ ईश्वर की उपस्थिति का अहसास स्थायी रूप ले लेता है।
* मनुष्य बड़ों के संग से बड़ा बनना चाहता है इसलिए बड़ों के हटते ही वह छोटा हो जाता है।
* माँ की हँसी, गर्मी के बाद बारिश की पहली फुहार, बरसात के बाद नदी का निर्मल जल, सुबह में कोयल की कूक, आम के मंजर की भीनी–भीनी सुगंध सब अनमोल हैं।
* धन आने पर अपने ही लोग विवाद करते हैं।
* धन के हिसाब के नाम पर नित्य पति–पत्नी के बीच नोंक–झोंक चलती रहती है।
* अगर रिश्तेदारों से कोई विवाद नहीं हो तो पैसे का लेन–देन शुरू कर दीजिए फिर सच्चाई सामने आ जाएगी।
* कलियुग में धन से ही रिश्ते बनते एवं बिगड़ते हैं।
* भावुक मन का उसके खुद के लिए बड़ा दोष यह है कि वह सामने वाले के बारे में अपनी बनाई कल्पना के विरूद्ध पाकर दुखी रहता है एवं अच्छाई यह है कि भावुकता के कारण वह किसी की भी बुराई नहीं कर सकता है।
* धन किसे बुरा लगता है, किन्तु अपने से ज्यादा धनवान भी किसे अच्छा लगता है।
* मनुष्य के सोचते रहने की जो क्षमता है वही उसके दुखी रहने का कारण है।
* सोच को बंद एवं शुरू करने में अगर मनुष्य का वश चलता तो वह कभी भी दुखी नहीं होता और न ही तब वह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकारता।
* मनुष्य के सोचने की जो बाध्यता है अगर वह सोच मनुष्य पर हावी हो गई तो उसकी सबसे बड़ी कमजोरी और अगर सोच पर मनुष्य प्रभावी हो गया तो उसकी सबसे बड़ी मजबूती सिद्ध होती है।

प्रेमधारा

- माँ के दूध में अमृत तत्व एवं उसके चरणों में ही स्वर्ग है।
- माँ के दूध के सामने समुद्र मंथन से निकला अमृत भी कौड़ी के भाव है।
- माँ के चरणों में जीवन–गंगा है जिसके स्पर्श से जीवन पवित्र हो उठता है।
- गंगा के बार–बार दर्शन से और माँ के चरणों में आजीवन पड़े रहने से भी मन तृप्त नहीं होता है।
- पृथ्वी पर माँ नाम महामंत्र है। कलियुग में प्राणी महामंत्र को छोड़ने से ही दुखी है।

- धन्य है उसकी जिह्वा, जो नित्य हजारों, लाखों बार माँ कहते–कहते नहीं थकती क्योंकि एक दिन उसे महासिद्ध घोषित किया जाने वाला है।
- माँ नाम तो एक बार ही लेने से जीव को मुक्ति मिल जाती है किन्तु बार–बार माँ का नाम लेने से जन्मों, हजारो जन्मों के लिए जीव की मुक्ति सुरक्षित हो जाती है।
- आप सभी मंत्रों का जप करें एवं माँ महामंत्र का जप न करें तो संदेह है कि आपका कल्याण होगा भी क्योंकि जो प्रत्यक्ष जन्मधात्री को नहीं जानता वह सृष्टि की माता को कैसे जान पाएगा ?
- हे जीव ! तुम्हारी मुक्ति का उपाय 'माँ' नाम में सरल एवं सुनिश्चित कर दिया है ईश्वर ने और तू मंत्रों की दीक्षा लेने के लिए साधु, संतों एवं मठ–मंदिरों का चक्कर लगाकर उस परमपिता परमेश्वर को लज्जित कर रहे हो, इसलिए वह तुमसे मुँह छिपाए तुम्हारे सामने माँ रुप में बैठा है।
- कष्ट में, आनंद में, अंधेरे में, उजाले में, देश में, परदेश में, काल में, महाकाल में एक ही नाम है जो जीव का उद्धारकर्त्ता है, वह है 'माँ' नाम। हे जीव ! तू माँ–माँ जप। एक दिन तुम्हें तुम्हारे कष्टों से ही दूर नहीं किया जाएगा बल्कि तुम्हारे सम्पर्क में आने वाला भी आनंद में नाचेगा, झूमेगा क्योंकि तुम्हारे कारण माँ ने उसकी रक्षा का जो भार अपने ऊपर ले लिया है।
- माँ की गोद की तुलना न विष्णु के विष्णुलोक से, न स्वर्गलोक से ही की जा सकती है क्योंकि विष्णु भी अपने लोक को छोड़ माँ की गोद को पाने के लिए अवतार लेते हैं।
- संसार की कोई भी कहानी 'माँ' की कहानी के बिना अधूरी है।
- माँ जब हमें सुलाती है, जब हमें जगाती है, जब हमें खिलाती है, जब हमें खेलाती है, जब हमें अंगुली पकड़ चलाती है तो यह सब देख विष्णुलोक का त्रिलोकपति भी पृथ्वी पर आने को मचल उठता है और हम पापी माँ को भार समझते–समझते न जाने कितने समय तक के लिए अपने को नरक में डाल रहे हैं।
- माँ हमारी गलतियों को बाल्यावस्था में पुचकारती है, युवावस्था में क्षमा करती है और प्रौढ़ावस्था में खुद लाचार वृद्ध की आवाज में अपने को ही धिक्कारती है और कहती है, हे ईश्वर! राह से भटक गए हमारी सन्तान को राह बता – क्योंकि तू सबको रास्ते पर लाने वाला, चलाने वाला है।
- माँ जब पुकारती है तो बच्चा उसकी नहीं सुनता किन्तु जब वह धिक्कारती है तो तीनो लोक में उस संतान की कोई नहीं सुनता।
- संसार द्वारा जो ठुकरा दिया गया हो उसे जब माँ का संरक्षण मिल जाए तो उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है किन्तु जब माँ ठुकरा देती है तो उसकी रक्षा सभी देवता मिलकर भी नहीं कर पाते हैं।

- संसार की समस्त नारी सिर्फ इसलिए पूज्यनीय है कि वह माँ बनती है।
- जो आपकी सफलता का कारण है उसका आजीवन सम्मान करें।
- सम्मान जब आप दूसरे को देते हैं तो वह कई गुणा में आपको वापस मिलता है।
- सम्मान देने वक्त जितना सम्मान लेनेवाला सम्मानित होता है उससे कई गुणा ज्यादा सम्मान देने वाला सम्मानित होता है।
- सम्मान परस्पर आदर नहीं बल्कि किसी कार्य विशेष के लिए उस व्यक्ति विशेष की प्रतिभा प्रदर्शन के प्रति एक सामूहिक स्वीकारोक्ति है।
- सम्मान पाने वाला सम्मान पाने वक्त खुश रहता है और उससे कम खुशी सम्मान देने वाले को नहीं रहती है।
- किसी खास समारोह में लिखित रूप से दिया गया सम्मान बाद में प्रमाण पत्र के रुप में व्यवहार होते–होते डिग्रियों की तरह किसी पद विशेष को पाने की एक वस्तु मात्र होकर रह जाता है।
- सम्मान अगर किसी पद की प्राप्ति का कारण बनता हो तो सम्मान लुप्त हो जाता है एवं वह प्रतिभा का प्रमाण पत्र मात्र बनकर रह जाता है।
- आजकल पैसे लेकर सम्मान देने वाली संस्थाओं की बाढ़ आ गयी है जिसके जाल में सम्मान पाने वाले लोभी तो फंसते ही हैं बाद में सम्मान पाने पर आम जनता के बीच उसकी चर्चा कर उन्हें भी भ्रमित करते रहते हैं।
- प्रतिभाशाली एवं आचरणवान व्यक्ति को सम्मान नहीं पाने पर कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता है।
- इन दिनों औद्यौगिक धराने चर्चित लोगों को सम्मानित करके व्यापारिक लाभ उठाने में काफी रुचि दिखा रहे हैं जो सम्मान देने से ज्यादा अपनी क्षमता प्रदर्शन कर प्रतिभाशालियों को नीचा दिखाने का कार्य कर रहे हैं।
- अगर आपके अपने आदमी को भी आपके द्वारा पीछे में दिए गए कार्य का प्रत्यक्ष लाभ नहीं पहुँचता हो तो उस कार्य को वह पूरी तत्परता के साथ नहीं करेगा।
- बिना लाभ की इच्छा से सिर्फ संत ही संसार में किसी की भी मदद करते हैं।

प्रेमधारा

→ कार्य पूरी तत्परता से करना तब भी परिणाम परमात्मा पर छोड़ना, मनुष्य के ज्ञान से ज्यादा उसकी मजबूरी है क्योंकि परिणाम भविष्य की घटना है एवं भविष्य के बारे में किसको कितना ज्ञान है ?

→ किसी संस्था के संस्थापक के पूर्ण ईमानदारी एवं कठोर परिश्रम के बावजूद सफलता कुछ समय के लिए भले ही नहीं मिले, किंतु एक दिन उसे अवश्य मिलेगी, अगर असफलता के बाद भी सफलता के लिए प्रयास जारी है।

→ संस्था के संस्थापक के ईमानदार रहने के बावजूद अगर संस्था से जुड़े लोगों में कोई भी बेईमानी कर रहा है, तो परिणाम पर असर पड़ेगा ही किंतु संस्थापक की ईमानदारी की वजह से एक दिन सब कुछ ठीक हो जाएगा।

→ अपने कर्मचारियों को एक ही काम के लिए बार–बार अगर कहना पड़े तो ऐसे कर्मचारियों से कार्य में गुणवत्ता एवं ईमानदारी की उम्मीद नहीं की जा सकती है।

→ अगर कर्मचारी बिना कहे अपने से वरिष्ठ पदाधिकारियों की बात समझने लगे एवं कार्य को वरिष्ठ पदाधिकारी के अनुरूप करके दिखाने लगे तो कार्य में गति एवं गुणवत्ता दोनों का ही अनुभव किया जा सकता है।

→ कार्यस्थल पर नित्य समय पर नहीं पहुँचने के लिए कोई न कोई तर्क देने वाले कर्मचारी को स्वभाव से बेईमान समझना चाहिए।

→ सिर्फ कर्मचारियों से कठिन परिश्रम, ईमानदारी एवं कार्य में गुणवत्ता की उम्मीद करना एवं मालिक द्वारा अपने कर्मचारियों को लाभांश पुरस्कार या वेतन वृद्धि नहीं देना, एक दिन कर्मचारियों की कार्यक्षमता को कम करता है एवं बेईमान बनने के लिए विवश।

→ हर माह विलम्ब से वेतन देने वाले मालिक अपने कर्मचारियों से बेहतर काम करने की उम्मीद नहीं कर सकते हैं।

→ मालिक एवं कर्मचारियों के बीच जब तक पिता एवं पुत्र का संबंध न हो तब तक अच्छी कार्य संस्कृति का वातावरण तैयार नहीं किया जा सकता है।

→ मालिक अपने कर्मचारियों को खिलाकर खाना चाहता हो एवं कर्मचारी अपने मालिक को खिलाकर खाना चाहता हो, जब तक परस्पर ऐसी इच्छा हृदय में न हो तब तक महान उपलब्धि को प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

→ मालिक द्वारा अपने कर्मचारियों को गुलाम की तरह उपयोग करना एवं कर्मचारियों द्वारा अपने मालिक एवं उनकी संपत्ति को अपनी गेंद की तरह देखना मालिक एवं कर्मचारी दोनों के ही हित में नहीं है।

→ जो मालिक अपने कर्मचारी की हिफाजत अपने शरीर के रोमकूप से लगे बालों की तरह करता है एवं जो कर्मचारी अपने मालिक के उफ् पर सारी रात जग कर बिता देता हो, ऐसे संबंध के बिना संसार सुंदर नहीं बन सकता है।

→ मालिक तो संसार में एक ही है, किंतु ईश्वर ने संसार में अपने कार्यों को करने की जिम्मेदारी मनुष्यरूपी मालिक को दे रखी है, जो घर का, कारखाना का, देश का मालिक संपूर्ण जगत के मालिक की तरह व्यवहार करता है। एक दिन लोग उसे ही जगत का मालिक वह कर पुकारने लगते हैं।

→ संसार में न कोई मालिक है न कोई नौकर। प्रभु ने तो सबको अपनी जबावदेही का मालिक बना कर भेजा है किंतु जब हम जबावदेही का निर्वाह कहने पर भी पूरा नहीं करते तो मालिक से नौकर बना दिए जाते हैं।

→ कुछ लोग नहीं मानने के लिए तैयार हैं कि जगत का कोई मालिक है जबकि उनसे ऊपर कितने श्रेष्ठ जन हैं जिनकी बातें मानने की उनकी मजबूरी है।

प्रेमधारा

→ आज आजादी का अर्थ मात्र शासक के परिवर्तन तक सीमित हो कर रह गया है।

→ आजाद देश में शासक तो होता है लेकिन शासित कोई नहीं होता है क्योंकि जनता ही शासक होती है।

→ जब सिर्फ शासक ही हो तो शासन सिर्फ स्वानुशासन, कर्त्तव्यबोध एवं श्रेष्ठ आचरण द्वारा ही संपादित किया जा सकता है।

→ आचरण के श्रेष्ठतम स्वरूप में प्रजा को ढाले बिना आजाद एवं गुलाम देश का कोई मतलब नहीं रह जाता है।

→ अधिकार की लड़ाई गुलाम देश में लड़ी जाती है किंतु आजाद होते ही प्रजा कर्त्तव्य के श्रेष्ठतम स्वरूप को आचरण में ढाले बिना देश को नहीं चला सकती है।

→ शासन में जिस विलासितापूर्ण जिंदगी के विरूद्ध एक गुलाम देश संघर्ष करता है वही आजादी प्राप्त करते ही अपने द्वारा चयनित शासक को पूर्व शासक की सारी सुविधा प्रदान करने में लिए पहल करती है।

→ शासक बदलते हो तो शासन का तरीका भी बदलो तब परिणाम बदला हुआ मिलेगा।

→ बदले हुए शासन को शासक के रहन–सहन एवं आम जनता के रहन–सहन में तुलना करते हुए देखना चाहिए।

→ प्रजा का जीवन ऊँचा उठाए बिना शासक का जीवन स्तर अगर बदलता हो तो शासक बेईमान है।

→ औद्योगिक संस्था या देश हो, किसी भी समूह का जो नेतृत्व करता हो उसके दैनिक रहन–सहन के अंतर को कम से कम करके मानवीय मूल्यों पर आधारित शासन व्यवस्था की नींव मजबूत करनी चाहिए।

→ दुनिया के सभी वादों, साम्यवाद, समाजवाद, पूँजीवाद द्वारा संचालित देश के शासकों की जीवन शैली, सुरक्षा व्यवस्था, देश की शान जैसे कारणों का हवाला देते हुए अमीरवाद पर ही आधारित है।

→ संसार को एक बड़े परिवर्तन के लिए तैयार होना होगा जो मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित होगा, जहाँ संसार के सभी शासकों के निवास स्थल को अजायबघर या फिर जेलघर में परिवर्तित कर देना होगा। प्रजा एवं उसका शासक एक सांकेतिक तंत्र का एक हिस्सा मात्र होगा।

→ प्रजातंत्र पूर्ण विकसित अवस्था में जब होगा तो शासक एवं शासित का अंतर समाप्त हो जाएगा एवं कर्त्तव्य में श्रेष्ठतम स्वरूप का स्वआचरण द्वारा संसार चलता हुआ दिखेगा, जिसे सत्युग कहते हैं।

→ कल्पना साकार होती है जिसका स्वरूप बुरा एवं अच्छा दोनों में से कोई भी हो सकता है और दोनों ही सोचने से होता है तो फिर क्यों न हम अच्छा ही सोचें।

प्रेमधारा

→ किसी व्यक्ति, समाज एवं देश की भूमिका उसके कर्त्तव्य निर्वाह का पर्यायवाची होती है।

→ कर्त्तव्य को सुनिश्चित किए बिना किसी की भूमिका कैसे तय की जा सकती है ?

→ कर्त्तव्यविहीन व्यक्ति समाज एवं देश के लिए वांछित राहों पर चलकर कष्टदायक घटनाओं को अंजाम देता है जिससे तोड़–फोड़ एवं हिंसा जैसी घटनाओं का जन्म होता है।

→ कर्त्तव्य हमेशा ही दूसरों के सुख से जुड़ा होता है एवं अधिकार सुख लेने की भावना रखता है, इसलिए व्यक्ति, समाज एवं देश की भूमिका अधिकार के सहारे तय नहीं की जा सकती है।

→ आज तक प्रत्येक देश का विधान अधिकार के सहारे चल रह रहा है, इसलिए सभी मुल्क की मूल आत्मा हिंसक दिख रही है क्योंकि हमारी सोच ही दूसरों को कमजोर एवं अपने को मजबूत करने के इर्द गिर्द घूमती रहती है।

→ कर्त्तव्य मूलक व्यक्ति समाज एवं देश का निर्माण किए बिना परमार्थी, अहिंसक राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती है।

→ बिना अहिंसक राष्ट्र की कल्पना किए न कर्त्तव्य की और न व्यक्ति, समाज, एवं देश की भूमिका तय की जा सकती है।

→ शासक एंव शासन की पहुँच कमजोर एवं मजबूत व्यक्ति में अंतर किए बिना होनी चाहिए थी, जो नहीं हो सका, जिसके परिणाम स्वरूप ही हिंसा का जन्म हुआ है।

→ अहिंसा कर्त्तव्य के प्रति श्रेष्ठ सोच एवं अधिकार के प्रति मृत्यु भय से मुक्त होकर प्रतिवाद करने का एक ईश्वरीय चमत्कार है जिसे व्यक्ति द्वारा अपनाने पर वह महात्मा कहलाता है एवं समूह द्वारा अपनाने पर युग परिवर्तन।

→ हिंसा कमजोर लोगों का हताश कदम होते हुए भी प्रत्येक शासक के गाल पर एक तमाचा है जिसका अनुभव शासक वर्ग को नहीं हो रहा है।

→ शासक हिंसा घटित स्थलों का मुआयना करके अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री कर लेते हैं जिसके परिणाम स्वरूप दुनिया में पूर्व के अनुपात में आज हिंसक घटनाओं में नित्य इजाफ़ा हो रहा है।

→ सामूहिक हिंसा एवं व्यक्तिगत हिंसा दोनों ही सत्ता एवं संपत्ति के लिए हो रही है।

→ सामूहिक हिंसा को वाद का नाम देकर महिमा मंडित करने के बावजूद उसके पीछे सत्ता एवं सम्पत्ति का उद्देश्य ही दिखता है।

→ हिंसा का मात्र विरोध करने से हिंसा नहीं रूकेगी बल्कि इसके बदले प्रत्येक जनता को सत्ता, संपत्ति एवं सम्मान का न्यायोचित लाभ पहुँचाना होगा।

→ हिंसा करने के लिए अस्त्र एवं रोकने के लिए भी अस्त्र का प्रयोग यह सीमा पर विदेशियों से लड़ने जैसा लगता है। क्या देश की सीमा की समस्या एवं अपने घर के अंदर की समस्या को सुलझाने के तरीके में फर्क नहीं होना चाहिए ?

→ देश के अंदर घट रही सामूहिक हिंसा की घटना को हम एक माँ के दिल से अपनी भटकी हुई संतान के लिए समस्या सुलझाने का रास्ता ढूँढ़ें।

→ आज तक हमने सिर्फ शांति का ढिंढोरा पीटा है। तैयारी तो हम युद्ध की ही कर रहे हैं।

→ हिंसा असंतोष का परिणाम है एवं सभी प्रकार का संतोष सिर्फ ईश्वरीय ज्ञान में ही निहित है।

→ संतोष का उपदेश शब्द से नहीं, आचरण से ही दिया जा सकता है जिसका अभाव है।

→ मन, कर्म एवं ज्ञान से पुरूषार्थी एवं परिणाम प्राप्ति के प्रति स्वामी भाव का लोप हो जाना ही संतोष है।

→ पूरे पुरूषार्थ से जो सब कुछ अर्जित करता हो किंतु प्राप्त फल पर पूरे विश्व का हिस्सा मानता हो, वही संतोषी है।

प्रेमधारा

- देवता एवं दानव की पहचान सूर्योदय के पूर्व उठने एवं नहीं उठने से तय हो जाती है।
- असुरी प्रवृति के लोगों की निंद्रा ईश्वरीय गुण वाले मनुष्यों के लिए वरदान है। निंद्रा में पड़े असुर ईश्वरीय गुणवाले मनुष्य के शुभ कार्यों को बाधित नहीं कर पाते हैं।
- अल्प निंद्रा ईश्वरीय वरदान है जिसे कलियुग में बिमारी का नाम देकर असुर अपना व्यापार चला रहे हैं।
- वृद्ध माता–पिता को आलसी संतान निंद्रा की दवा खिलाकर सुलाए रखना चाहती हैं।
- गुरू एवं माता–पिता के वृद्ध होने पर शिष्य एवं संतान देवता बन गुरु एवं माता–पिता को ही उपदेश देने लगते हैं एवं बात–बात पर कहा करते हैं कि अब आपलोगों का जमाना नहीं रहा है।
- कलियुग में नाम की इच्छा रखने वाले एवं बार–बार राष्ट्र की बात करने वाले साधु की मनसा राजा के चरित्र के बारे में याद दिलाने की नहीं बल्कि कहीं न कहीं राजा बनने की होती है।
- असुरों की प्रशंसा गलती से भी करने पर असुर जितना बुरा बनता है उससे ज्यादा ईश्वरीय गुणवाले मनुष्य का गुण आसुरी गुण में बदल जाता है।
- कलियुग में वैसी माताओं की कभी नहीं जो पुत्र को बार–बार सांसारिक लोभ में डालकर संपूर्ण राक्षस ही बना डालती है।
- धन को सरल एवं सुंदर तरीके से अर्जित करने का उपदेश जब तक आचरण में नहीं उतरता है तब तक दुनिया का भला नहीं होने वाला है।
- जब मनुष्य धन से महान कहलाने लगे तो समाज एवं राष्ट्र का पतन निश्चित समझे।
- आज मनुष्य की पहचान वस्तुओं से है। मनुष्य से वस्तु अच्छी है कि उसकी प्रशंसा किसी मनुष्य के कारण नहीं होती है।
- इंतजार करने के बाद ही कुछ भी मिलता है किन्तु कुछ मिलने के बाद कोई उसे संभाल कर रखता है तो यह बड़ी बात है।
- मनुष्य जिस मुकाम को प्राप्त करने के लिए दिन–रात परेशान रहता है उसे प्राप्त करने के बाद प्राप्त मुकाम चला न जाए, इसके लिए परेशान रहता है।

- परेशानी कभी खत्म नहीं होती है ऐसा लोग कहते हैं किंतु परेशानी आती क्यों है– इसके लिए कोई विचार नहीं करता।
- जिस दिन मनुष्य परेशानी के आने के कारण के बारे में सोचने लगता है उसी दिन से उसके द्वारा ज्ञान प्राप्ति की यात्रा शुरू हो जाती है।
- उन्नति एवं विपत्ति साथ–साथ चलती रहती है।

- प्रगति के लिए मार्ग में आने वाली विपत्तियाँ कष्ट देते हुए भी आनंद ही देती है।
- मनुष्य के पास ऐसा कोई उपाय नहीं है कि वह तरक्की भी करना चाहे एवं परेशानियों का भी सामना नहीं करे।
- परेशानियाँ जिसके सामने घुटने टेक देती है वहीं पुरुष है।
- पुरुष सद कार्यों को करने वाले नाम का पर्यायवाची है जिसकी उपस्थिति में उत्साह एवं आनंद आकाश छूने लगता है।
- आकाश में रेखा खींचो अमन की जिसे पढ़ने के लिए आँखें एवं छूने के लिए हाथ कभी कम न पड़े।
- शांति की कीमत सिर्फ शांति के अलावा और क्या हो सकती है ?
- सत्य है कि आकाश में कोई दफनाया नहीं जाता किन्तु धरती में बेगुनाहों के दफन पर आसमान को भी हजारों बार रोते देखा है लोगों ने।
- बेगुनाहों की मौत एवं गुनाहगारों की ताजपोशी पर युग भी अपना नाम बदल कलियुग कहलाता है।
- गुनाहगारों को कभी शर्म नहीं आती फिर भी आज उन्हें पकड़े जाने पर मुँह ढके मिलते हैं उनके।
- शर्म भी शर्मसार होता है जब गुनाहगार की नजर में उम्र एवं जगह का ख्याल खत्म हो जाता है।
- उस परवर दिगार का आदेश तुम्हें सुनाई पड़ता है और पास में बेगुनाहों की लाशों से पटी वस्तियों की चीखें नहीं।
- जब गुनाहगार गुनाह को ईश्वर के नाम से जोड़ने लगे तो समझो वही संसार का सबसे बड़ा गुनाहगार है।
- मृत्यु के भय ने हजारों–लाखों बार लाश की तरह जीने के लिए मजबूर किया है हमें फिर भी मौत आती है तो हमारा कोई वश नहीं चल पाता है।
- जिस मृत्यु से आजतक कोई नहीं बच पाया दुनिया में उससे बचने के लिए सबसे ज्यादा श्रम, समय एवं धन का खर्च हो रहा है।

- मृत्यु भय से मुक्ति अवगुणी को राक्षस एवं गुणी को देवता बनाती है।

प्रेमधारा

- दुष्ट अपनी दुष्टता एवं जानवर अपना स्वभाव मृत्यु के बाद ही छोड़ता है।
- हजारों उपाय के बाद भी मनुष्य सबसे ज्यादा परेशान सबसे नजदीक के लोगों से ही होता है।
- संतों की भलाई की गिनती की जा सकती है, किन्तु दुष्टों की दुष्टता तो अनचाहे घास की तरह नित्य उगती रहती हैं।
- भटका हुआ संभलता है, संभला हुआ भी भटककर फिर संभलता है, किंतु जो स्वभाव से ही दुष्ट है उसे मृत्यु भी नहीं संभाल सकती है।
- जान पहचान को आधार बनाकऱ किसी के लिए अच्छा और किसी के लिए बुरा कार्य करने वाले पदाधिकारी ही आम जनता को कष्ट देते रहते हैं।
- बड़े पदाधिकारी खुद चापलूसी करते भी हैं एवं कोई उनकी भी करे, ऐसी इच्छा भी रखते हैं।
- जो सरकार चापलूसों के इर्द–गिर्द घिर जाती है उसका अंत जल्द ही हो जाता है।
- पदाधिकारियों द्वारा पक्षपात अन्याय का बीजारोपण करता है एवं समाज को हिंसक बनाता है।
- जनता पर हुकूमत करने की इच्छा से कार्य करने वाले पदाधिकारियों ने ही उग्रवाद को जन्म दिया है।
- झूठ बोलने के लिए साहस एवं अभ्यास की जरूरत नहीं है किन्तु सत्य बोलने के लिए दोनों की ही की जरूरत पड़ती है।
- बचपन में गोद में जिसे खेलाया था वही बड़े होकर बड़े शहरों में जाने पर भूल जाता है तो बड़ा ही कष्ट पहुँचता है।
- अगर दिनचर्या से बंधे आदमी से अपनों को कष्ट पहुँचता है तो देश एवं समाज को लाभ।

- आलस्य एवं अपराध एक ही जैसा है, जैसे एक सिपाही का आलस्य, चोरी एवं हत्या की घटना को जन्म दे सकता है एवं आलस्य से नहीं पढ़नेवाला नौजवान बेरोजगार होकर अपनी सुविधाओं को जुटाने के लिए अपराध कर सकता है।
- हर हाल में आलस्य का त्याग ही प्रगति का इतिहास रच सकता है।
- आलस्य से बड़ा दुश्मन एवं आलसी से बड़ा पृथ्वी का भार कुछ भी नहीं है।
- आलसियों ने पुरूषार्थ से अर्जित किए गए बड़े–बड़े राज्यों को बेच दिया है।
- महलों की ढही दीवार अपने आलसी मालिक पर रोती है, वह ढही दीवार नहीं बल्कि दीवारों के बहते आँसू हैं जिसमें दीवारें बहती हुए ढह रही हैं।
- आलसियों का भोजन एवं कंजूसों का संग कभी लाभ नहीं पहुँचा सकता है।
- दुराचारियों ने दूसरों को लूट कर अपने महल का सृजन किया किंतु आलसियों ने तो ईमानदारी एवं पुरूषार्थ से खड़े राज्य को मिट्टी में मिला दिया।
- दुराचारी सिर्फ अपराध करते हैं, किन्तु आलसी तो अपराधियों को जन्म देते हैं।

प्रेमधारा

- कलियुग में ईमानदारी सिर्फ कल्पना में चिंतन–मनन मात्र के लिए रह गई है।
- सतत् प्रयास के बाद प्राप्त सफलता अतीत की समस्त परेशानियों को भुला डालती है।
- दुख के दिनों में अतीत के सुख वर्तमान के कष्टों को घटाने की जगह और बढ़ा देते हैं।
- हरियाली और माँ का आंचल एक जैसा लगता है।
- फलदार वृक्ष, बुढ़ापे में संतान द्वारा समय पर भेजे गए पैसे एवं गुरु के चरणों में शिष्य बैठा हो तो ये सब अच्छे कर्मों का ही फल है।
- चिलचिलाती धूप में किसान द्वारा खेतों में काम करना, परीक्षा के लिए रात–रात भर जगकर पढ़ना, पत्नी द्वारा पति के खाने पर इंतजार करना, पिता के घर लौटने पर संतान द्वारा बिना कहे चाय–पानी लेकर उपस्थित हो जाना एवं गुरु के शब्दों में शिष्य द्वारा लोगों को समझाना बड़ा ही सुख देने वाला लगता है।
- बीमारी की अवस्था में किसी के द्वारा हाल–चाल पूछने चले आना, कर्मचारियों के बीमार पड़ने पर मालिक का उसके घर पहुँच जाना, रेलवे स्टेशन पर टिकट के लिए कतार में खड़े होने की जगह किसी के द्वारा टिकट ला देना खुशी का अनुभव करा जाता है।
- बड़ा बनने की इच्छा, सुंदर दिखने की इच्छा, विद्वान कहलाने की खुशी एवं भरी सभा में देर से पहुँचने पर पहले से उपस्थित लोगों द्वारा मुड़कर अभिभावदन प्राप्त करने की खुशी का इजहार नहीं किया जा सकता है।
- बहुत कम लोग हैं कि सफलता प्राप्त करने के बाद विनम्र रह पाते हैं।
- लिखने वक्त, खाने वक्त, पूजा करने वक्त एवं प्रिय जनों से बात करने वक्त किसी का बीच में टोकना किसे अच्छा लगता है ?
- मनुष्य करता वही है जो उसकी इच्छा होती है, फिर भी वह किसी को इसलिए पूछता है कि कहीं उसका कुछ नुकसान न हो जाए।
- नुकसान के भय से किसी से ली गई सलाह हमेशा सही ही नहीं होती है।

- जिस कार्य के परिणाम का अंतिम सुख–दुख आपको ही मिलना है, उसे करने के बारे में भी अंतिम निर्णय खुद ही लें।
- यात्रा घर की सुविधा नहीं मिलने के बावजूद भी आनंद देने वाली होती है क्योंकि मनुष्य स्वभाव से बदलाव चाहता है जो उसे यात्रा में प्राप्त होता है।
- बदलाव की घटना में खुद को बदले बिना बदलाव संभव नहीं है।
- गरीब से अमीर बनना, मूर्ख से विद्वान बनना, दुखी से सुखी बनना, यह सब कुछ मनुष्य चाहता है किन्तु बिना अपनी दिनचर्या में बदलाव किए, क्या यह सब संभव है ?
- अगर अपने जीवन में परिर्वतन चाहते हो, तो खुद को बदलो, आलसी से पुरुषार्थी बनो, कायर से निर्भयी बनो, कृपण से दानी बनो, चरित्रहीन से चरित्रवान बनो। एक दिन सब कुछ बदली हुई अवस्था में तुम्हें मिलेगा।
- मनुष्य स्वभाव से आलसी है, किंतु पहला आलस्य भूख लगने पर टूटता है, दूसरा दूसरों को अपने से बेहतर देख वैसा बनने की इच्छा से टूटता है।
- भूख एवं निंदा के भय से हम सभी आलसी बनने से डरते हैं अन्यथा पृथ्वी पर कोई कुछ नहीं करे।
- आज तक कुछ भी किसी की प्रशंसा या निंदा में ही लिखा जाता रहा है इसलिए सामान्य मनुष्य की जिन्दगी इन्हीं दो के इर्द–गिर्द घूमती रहती है।
- प्रशंसा एवं निंदा के अतिरिक्त मनुष्य का जो ज्ञान है उसे प्राप्त करने पर मनुष्य में साक्षी भाव का विकास होता है इसलिए वह शांत रहता है।
- हम तभी तक किसी की निंदा करते हैं जब तक वह हमारी प्रशंसा में बोलने नहीं लगे।

प्रेमधारा

- बड़ा से बड़ा परिवर्त्तन भी अस्थाई ही होता है क्योंकि मनुष्य को स्थाई रूप से बदले बिना यह संभव नहीं।
- परिवर्तन का अर्थ ही होता है बदलना और इसलिए जब भी परिवर्तन की लड़ाई लड़ेंगे वह अस्थायी जीत ही दिलवाने वाली होगी।
- जरूरत है अपरिवर्तित सत्य एवं शांति के इर्द गिर्द इकट्ठा रहने की, जहाँ संघर्ष नहीं सिर्फ समर्पण चाहिए।
- हे मनुष्य! सत्य, संस्कार एवं शांति के बिना दुनिया में प्राप्त हर वस्तु अंत में कष्ट ही देती हुई मिलेगी।
- जरा विचार करो कि तुम कौन हो, कहाँ से आए हो एवं क्या करने आए हो ?
- लम्बे भाषण में भी लोग दो पंक्तियाँ ढूँढ़ते हैं और उसे बनाते हैं अपने जीवन एवं जीने का मंत्र।
- बातों को छोटा करके हम अपने सबसे कीमती समय को बचा सकते हैं।
- रात हर दिन आती है, इसलिए हमने अनंत बत्तियों का इंतजाम किया, फिर भी अँधेरा रहता है और उस अँधेरे में भी करोड़ों को आपने चलते देखा होगा।
- दिन में दुनिया का हर कोना रोशन होता है, फिर भी हजारों लाखों आलसियों को आपने कुछ भी नहीं करते हुए भी देखा होगा, यही सच्चाई है।
- हौसले एवं सच्चाई में से चुनना हो तो रात में अँधेरे में चलने वाला हौसला ही चुनने लायक है।
- बार–बार अवैध संबंधों को छापना, लोगों को इन बुराइयों से बचाना, उन्हें अच्छा बनाना या अखबारों की बिक्री बढ़ाना है ?
- सभी क्षेत्रों की जबावदेहियों के बारें में रोज–रोज चर्चा करना एवं चर्चा करने वाले समाचार पत्र तक की जबावदेही के बारे में डर से फुसफुसाना भी नहीं, क्या यही प्रेस की आजादी है ?

- बुराइयों की चर्चा कर देने मात्र से क्या अच्छे लोगों की जबावदेही खत्म हो जाती है ?
- अच्छे से अच्छे सत्कर्मों को लिखने वाले भी आज तक किसी बड़े परिवर्तन का कारण क्यों नहीं बन पाते ?
- सुकरात, गाँधी, मार्क्स, लेनिन कोई भी समाचार तंत्र की देन नहीं। प्रवर्त्तक सिर्फ परिवर्तन की इच्छा से चर्चा करने वाले लोगों का प्रचार तंत्र नहीं ।
- दाल में नमक का नित्य संतुलन बिना एक योग्य रसोइया के संभव नहीं है तो हमारी पूरी दुनिया में संतुलन बिना योग्य व्यक्ति के संभव कैसे हो सकता है ?
- जब व्यक्ति तंत्रों पर भारी पड़ता दीखे तो समझें परिवर्तन होने वाला है।
- परिवर्तन का बिगुल जब भी बजेगा तो वहाँ कोई न कोई एक नाम उभर कर आएगा।
- देश एवं दुनिया को सिर्फ एक व्यक्ति की जरूरत है जो सत्य के अलावा कुछ नहीं चाहता हो।

प्रेमधारा

- संसार अपनों के गुजरने के गम से भरा पड़ा है। घाव को उपदेश नहीं बल्कि मात्र समय ही भर पाता है।
- ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि सत्य से गृहस्थी की दाल–रोटी की भी व्यवस्था नहीं की जा सकती है। आश्चर्य है, जिस सत्य से ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है, उसे दाल–रोटी खरीदने के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं।
- सच जब दाल–रोटी खरीदने में भी सक्षम नहीं हो पाता है तभी वह सच कहलाता है।
- सत्य किसी वस्तु की खरीदारी का साधन नहीं बल्कि ईश्वर प्राप्ति का अंतिम मार्ग है।
- जिस सत्य से आपका चूल्हा नहीं जल पाता है उसी सत्य की रोशनी में हम परमात्मा को प्राप्त कर धन्य हो उठते हैं।
- हाथी की खाल संसार में नहीं बिकती किंतु हाथी के थोड़े से दाँत की कीमत पर कई हाथी हम खरीद सकते हैं, सत्य का प्रभाव संसार में कुछ ऐसा ही है जिससे गृहस्थी तो नहीं चलती किन्तु तीनों लोकों को आप चलाने वाले बन सकते हैं।
- बाजार से खरीदी गई चीज से एवं मंन्दिर और मंदिर से लाया गया प्रसाद दोनो ही एक समय के बाद खराब हो जाते हैं फिर एक को वस्तु दूसरे को हम प्रसाद क्यों कहते हैं ? बाजार की चीज देने वक्त कोई भी पैसा मांगता है किंतु प्रसाद घर जाकर पहुँचा दिया जाता है।
- प्रसादरुपी जीवन जीने की जगह आज हम वस्तु की तरह जी रहे हैं जिसके साधक को स्थान नहीं, इसलिए जीवन के सभी रिश्ते पैसों से तौले जाने लगे हैं।
- आज भौतिक संसाधनों जुटाने वाले ज्ञान के पीछे राजा, प्रजा सभी दौड़ लगा रहे हैं। सत्य एवं संस्कार, श्रद्धा एवं भक्ति, नम्र रिश्तेदार, लोक–परलोक सब किताबों की बातें हो कर रह गई है।
- बाल्यावस्था में ईश्वर के बारे में जानने की इच्छा, युवावस्था में तीर्थो एवं मंदिरों के तरफ बढ़ते वाले पाँव एवं वृद्धावस्था में एकांत में रहने वाला मन कभी–कभी देखने को मिलता हैं।
- जो मन ईश्वर चिन्तन में डूब जाना चाहता हो वही मन है बाकी मन की बीमार अवस्था।
- जैसे तेज गर्मी में शीतल भोजन अधिक स्वादिष्ट लगता है ठीक उसी तरह भक्ति में हरिचर्चा से प्रिय कुछ नहीं लगता।
- अपने लिए हम हर दिन मरते हैं, जीते हैं किन्तु देश के लिए एक भी सांस नहीं लेते, फिर भी देश को हजारों गालियाँ देते रहते हैं।
- देश के लिए मरना, देश के लिए जीना यह सिर्फ कहानियों की किताबों बातें की होकर रह गई है।
- आजादी के बाद भारत में पढ़े–लिखे लोगों की संख्या बढ़ी है किंतु उससे ज्यादा बढ़े हैं भ्रष्ट लोग एवं उनकी भ्रष्टाचार वाली व्यवस्था।
- पद एवं धन की इच्छा सांस का पर्यायवाची सा बन गया है। लगता है इसे निकलते ही लोगों की जानें ही चली जाएगी।

- वस्तुओं के प्रचार की तरह शैक्षणिक संस्थाओं का प्रचार इसे एक दिन वेश्याओं की मंडी से भी ज्यादा बदतर बनाएगा।
- मंदिर के पुजारी जिस प्रकार भगवान से दर्शन कराने की बात करते हैं वैसे ही शैक्षणिक संस्थाओं के शिक्षकगण अधिकतम धन कमाने का मंत्र बतलाते रहते हैं।
- धन कमाना बुरा नहीं है किंतु कैसे भी सिर्फ धन कमाने की इच्छा बुरी ही है।
- भूखे लोगों की कोई जाति नहीं होती। वे कहीं भी खड़े होकर पेट के लिए हाथ फैला सकते हैं और नहीं मिलने पर अंतिम अवस्था में या तो अपनी जान दे सकते हैं या किसी की भी जान ले सकते हैं।
- दुनिया का सबसे अमीर देश भूख के सामने सबसे पहले पराजित होने वाला है।
- दुनिया को भय दिखाकर जीतने वाले अपने ही जनमत से हारेंगे।
- भूख एवं प्यास की जरूरत को पहली जरूरत के रूप में जो देश देखेगा वही आने वाले कल का सबसे श्रद्धा वाला देश कहलाएगा।

प्रेमधारा

- खुशियाँ माँगने से नहीं मिलती है बल्कि उन परिस्थितियों का निर्माण विनम्रता सहजता एवं कठिन परिश्रम से करना होता है।
- दूसरों की खुशियों को अपनाओ अगर अपनी खुशी चाहते हो।
- खुशियाँ बाजार में नहीं मिलती, ऐसा लोग कहते हैं किंतु मनचाही खरीदारी के बाद खुशियाँ उसके साथ घर आती है, अतः लोगों के बिना सोचे कही बातों पर नहीं बल्कि सभी कही बातों पर अपनी सोच बनाओ।
- कछुए खरगोश की दौड़, रावण से लक्ष्मण के ज्ञान लेने के लिए श्री राम का कहना, शबरी द्वारा जूठे बेर भगवान को खिलाना सब सुनने में अच्छा लगता है किंतु यह सब सच नहीं है, दुनिया में लाखों लोग बिना पढ़े–सोचे बोलते रहते हैं।
- अधिकांश लोग सच उसे मानते हैं जिसे सभी सच कहते हैं, किंतु जो उस कहे सच के बारे में भी सोचते हैं एवं एक नई सोच बनाकर सच्चाई सामने लातें हैं वे सबों को गलत ठहराते हैं, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक के रूप में संसार का बड़ा भला करते हैं।
- हमें भीड़ का सच नहीं बल्कि सच की भीड़ चाहिए।
- सच बोलना तब कठिन हो जाता है जब इंसान क्षणिक लाभ–हानि से सच को जोड़कर बोलना चाहता है।
- सच लाभ–हानि देने के लिए नहीं है, बल्कि उसका काम है सच की आड़ में कहे जाने वाले झूठ से प्राप्त लाभ को रोकना।
- हिंसा से प्राप्त गणतंत्र का नायक सत्ता संभालते ही तानाशाह हो जाता है।
- हिंसा के रास्ते से प्रजातंत्र की कल्पना तो की जा सकती है किंतु कभी भी प्रजातंत्र कायम नहीं किया जा सकता।
- मनुष्य स्वभाव से अहिंसक है, किंतु संगति से वह हिंसक बनता है।
- जो अपना घर तानाशाही से नहीं चला सकते हैं वे देश को तानाशाही से चलाना चाहते हैं।
- तानाशाह का कोई परिवार नहीं हो सकता है, इसलिए पूरे मुल्क में तानाशाही आ भी जाए तब भी प्रजातंत्र का बीज परिवार में सुरक्षित रहता है।

- जबतक दुनिया में परिवार का वजूद रहेगा तब तक प्रजातंत्र का बीज सुरक्षित है और परिवार के वजूद को खत्म करना संसार के बड़े से बड़े तानाशाह के वश में नहीं है।
- परिवार दुनिया के संगठन की सबसे छोटी इकाई है जिसका निर्माण स्वाभाविक रूप से होता रहता है और उसका आधार ही प्रजातंत्र है।
- परिवार की ही कल्पना जब विस्तार रूप लेती है तो इसे प्रजातंत्र का नाम दिया जाता है।
- परिवार बिना सबकी सूझ–बूझ एवं सहमति के नहीं चल सकता है, यही प्रजातंत्र की मूल आत्मा है।
- तानाशाहों को जाकर कहो कि तुम्हारे विरूद्ध पूरा परिवार खड़ा है जहाँ तुम्हारी बिल्कुल नहीं चलती फिर भी कहते हो कि देश को हम चलाएँगे!
- अगर दुनिया को सचमुच प्रजातांत्रिक दुनिया बनाना है तो परिवार नाम के संगठन को मजबूत करो।
- प्रजातंत्र जिंदा है वैवाहिक जीवन की शुरूआत से क्योंकि पूरी दुनिया ने बिना सहमति से ब्याह रचाने वाले को बलात्कारी कहकर जेल में डालने का विधान बनाया है।
- जो व्यवस्था सहमति से चलती हो वही तो प्रजातंत्र का मूलमंत्र है।
- दुनिया में दो तानाशाह एक नहीं हो सकते हैं अतःपति–पत्नी दोनों ही तानाशाह नहीं हो सकते हैं, क्योंकि सहमति की शर्त खत्म होते ही रिश्ता टूटने का भय है, अतः तानाशाह भी मूल रूप से प्रजातांत्रिक ही है।
- डरा हुआ प्रजातंत्र तानाशाह की छाया की तरह हैं जो प्रजातंत्र के वास्तविक चेहरे पर अपने चेहरे का प्रभाव छोड़े रहता है।
- अबतक पृथ्वी पर प्रजातंत्र का पूर्ण विकास नहीं हो पाया है क्योंकि मनुष्य स्वभाव से दूसरों से श्रेष्ठ बनकर रहना चाहता है, भले ही वह हो या नहीं, यहीं एक तानाशाह का जन्म होता है।
- दुनिया को किसी भी तानाशाह ने नहीं बदला।
- एक तानाशाह मरता है किंतु बदलता नहीं है।
- हिंसा से पनपी व्यवस्था अच्छी व्यवस्था देने के भ्रम से जन्म लेती है किंतु कभी भी अच्छी नहीं बन पाती है। इसलिए एक दिन बहुत अपमानित होते हुए संसार से विदा लेती है।
- कुछ लोग दुनिया को मृत्यु के भय से आतंकित किए रखते हैं फिर भी दुनिया खुले– आम सड़कों पर घूमती नजर आती है एवं भय पैदा करने वाले संसार के सबसे भयभीत व्यक्ति के रूप में छुपने के लिए गुप्त जगह की तलाश में पूरी दुनिया में भटकते रहते हैं।
- दूसरों को डराने वाला कभी भी निर्भीक व्यक्ति नहीं हो सकता है।
- गंगा की पवित्रता भी काम नहीं आ रही बल्कि गंगा खुद गंदगियों से नहा रही है। यही वक्त की विडम्बना हैं एवं कलियुगियों का कुछ कृत्य।
- हर कोई लगा है अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने में, अपनी अच्छाई की बदौलत नहीं बल्कि दूसरों को गिराकर।
- कलियुग में दूसरों को गिराने के लिए खुद को भी हजारों बार गिराते हैं लोग।
- आज गिराने वाले महान बने बैठे हैं एवं उठाने वाले को कोई पूछता नहीं।
- अच्छा कहलाने के लिए भी जब पैसे खर्च करने पड़े तो अच्छाई कहाँ रह जाएगी ?
- अच्छाई जिन्दा रहे – अच्छाई की बदौलत, यह एक दुर्लभ प्रयास होगा।

- जब बुद्धि ही बार–बार सम्मानित होती है तब विवेक दम तोड़ने लगता है।
- ज्ञान,विवेकविहीन बुद्धि सिर्फ बुद्धि नहीं होकर कुबुद्धि मात्र रह जाती है।
- सरकार से ज्यादा कमजोर और कौन हो सकता है जो हमेशा इसी ध्यान में लगी रहती है कि भीड़ जिसके साथ है उसका समर्थन करना है।
- मात्र भीड़ के साथ खड़ी होने वाली सरकार कभी भी न्याय की राह नहीं चल सकती है।
- सरकार की सोच भीड़ के पीछे चलती हो तो उससे बड़े परिवर्तन की उम्मीद कदापि नहीं की जा सकती है।
- भीड़ की तरफदारी करनेवाली सरकार रंगमंच के नीचे खड़ी जनता की फरमाइश पर नृत्य करनेवाली वेश्या की तरह हो जाती है।
- जब राज्य का मुखिया ही न्याय के लिए संघर्ष नहीं करना चाहता हो तो जनता क्या करेगी ?
- चापलूसों से घिरी सरकार एक दिन अपनी कब्र खुद खोदती है।

प्रेमधारा

- होती है सुबह हर दिन फिर भी जागते हैं कितने लोग ?
- भीड़ के साथ चलना भेड़ियों का काम है। जब यह शासन करने लगे तो सत्य का शासन सिर्फ नाम का रह जाएगा।
- शैक्षणिक संस्थानों की शत्–प्रतिशत सफलता सम्पूर्ण छल एवं एक शकुनि चाल है।
- सच कोई सुनना नहीं चाहता क्योंकि झूठ आकाश की तरह फैल गया है।
- सच्चाई जब संगठित होने लगे तब कलियुग का अंत एवं सतयुग का शुभागमन निकट समझना।
- मैं संसार का आम आदमी हूँ जिसे भूख एवं प्यास लगती है, जिसे आगे बढ़ने की इच्छा है एवं पीछे हटने से भय लगता है, जिसे ईर्ष्या सताती है एवं निंदा करने में आनंद आता है, जो जीत का ढिंढोरा पीटता है किंतु काम वासनाओं के सामने घुटने टेक देता है फिर भी अच्छा कहलाना चाहता है, मैं संसार का आम आदमी हूँ।
- मनुष्य जो कुछ करता है वह सोच कर ही करता है किंतु उसका उद्देश्य जब मात्र धन होता है तब सोच बुद्धि का मात्र एक हिस्सा होकर रह जाती है तब सोच कभी सत्य नहीं बन पाती।
- अपनी हर सोच को देश, दुनिया एवं समाज का लाभ बनाओ, फिर जो सोचोगे, करोगे– वह महान परिणाम को प्राप्त होने वाला होगा।

- धन का मात्र हिसाब–किताब ठीक से रखने वाला होने से कोई धनवान नहीं होता, नही तो भिखारी का हिसाब, सबसे ज्यादा ठीक होने से वह भिखारी नहीं होता।
- तुम्हारे द्वारा अर्जित किये जाने वाले धन ने कितने लोगों को लाभ पहुँचाएगा वही धन का असली हिसाब–किताब है।
- अपने अर्जित धन को ज्यादा से ज्यादा लोगों के लिए लाभ देने वाला बनाओ, तुम सत्य में धनवान हो जाओगे।
- अपने झूठ को छिपाने के लिए जब भी किसी सत्य को बगल में खड़ा करोगे– तुम्हारा झूठ और तेजी से फैल जाएगा।
- आत्मिक शांति संसार की सबसे कीमती चीज है, किंतु इसकी प्राप्ति सबसे कम कीमत पर होती है।
- शांति के लिए ही संसार में कुछ भी खर्च करना नहीं होता है और न अर्जित ही करना होता है बल्कि पल भर में अपने अर्जित राज्य का त्याग कर देने से यह प्राप्त होता है।
- शांति कीमती है किंतु खरीदने की वस्तु नहीं, इसके लिए अपनी अशांति का कारण खर्च करो, एक दिन शांति मिल जाएगी।
- नींद की गोलियों से शांति नहीं मिलती बल्कि तुम अशांति के प्रति सुस्त हो जाते हो।
- जिस प्रकार घाव का पीव निकले बिना लाख दवा खाकर भी बीमारी ठीक नहीं होती, उसी प्रकार अशांति का कारण ढूँढें एवं उसे निकाले बिना शांति नहीं मिल सकती है।
- शांति के लिए सिर्फ एक साहस करने की जरूरत है, एक छलांग लगाने की जरूरत है– अशांति के कारणों को झटके से निकाल फेकने की जरूरत है।
- जिसे तुम अपनी मजबूती समझ बैठे थे वही तुम्हारी कमजोरी बन तुम्हें परेशान कर रही है, इस पर विचार करो एवं उसे अपने से दूर करो।
- समय तुम्हें नीच एवं महान दोनों ही बनाता है – इसलिए समय से डरो क्योंकि इसी समय को तुमने नीच कार्यों के लिए खर्च किया था और अब जब परिणाम आया है तो घबराते हो।
- समय का हमेशा उपयोग करो दुरूपयोग नहीं तब जाकर न आएगी अशांति, न आएगी असफलता।
- महान बनने के लिए सिर्फ अपने आचरण पर ध्यान देना होता है एवं नीच बनने के लिए दूसरे के आचरण पर।
- जब हम नहीं रहेंगे, जब तुम नहीं रहोगे, तब भी रहेगी यह दुनिया। जरा सोचो! हमें क्यों याद करेगा हमारा कल ?

- हर दिन हजारों – लाखों आते हैं, चले जाते हैं किंतु कितनों के जाने पर पड़ोसी की आँखों में भी आँसू उतरते हैं।
- रोना नहीं किंतु प्रेम करनेवालों का कोई और प्रमाण भी तो नहीं।
- कारोबार में रिश्तेदारों का लिया गया सहयोग अंततः गद्दारी में बदल जाएगा।
- अपनों ने जितना अपनों को कष्ट पहुँचाया है उतना शायद परायों ने नहीं।
- हर प्रश्न का उत्तर बुद्धि लगाकर देने वाला ईमानदार कभी नहीं हो सकता है।
- दो भिन्न प्रतिष्ठानों एवं दो स्वामी का कार्य करने वाला कर्मचारी कभी भी ईमानदारी से कार्य नहीं कर सकता है।
- प्रतिष्ठान के मूल सिद्धांतों के साथ ईमानदारी से कार्य करने वाले व्यक्ति का मिलना दुर्लभ है।
- बेईमानों के इस जहाँ में आज भी अनुयायी मिलते हैं, सच्चाई पर चलने के लिए।

प्रेमधारा

- कमजोर आदमी अपने लाभ के लिए किसी की मदद करता है एवं लाभ नहीं प्राप्त होने पर ओछा व्यवहार कर अपनी कमजोरी जाहिर कर देता है एवं अंततःअपयश ही उसके हाथ लगता है।
- मजबूत आदमी दूसरों के लाभ में अपना लाभ समझकर मदद करता है एवं मदद करने पर अपने ऊपर कष्टों को सहजता से झेलते हुए मदद किए गए व्यक्ति पर अपने कष्टों को जाहिर नहीं कर यश का भागी बनता है।
- संत दूसरों की मदद लाभ–हानि से मुक्त होकर करता है। मदद करने के बाद दूसरों की प्रशंसा एवं उसके बदले में खुद को मिले कष्ट में भी उनके भाव परिवर्तन नहीं होते।
- जो किसी की मदद कर बार–बार उसे उसकी याद दिलाता रहता है तो वह पुण्य के बदले दूसरों को नीचा दिखाने के लिए पाप का भागी ही बनता रहता है।

- जिस समारोह का आयोजन किया जाए, वह थकान देने वाला होता है एवं जो स्वस्फूर्त समारोह का रूप धारण कर लेता है, वहीं अनंत आनंद को देने वाला होता है।
- कौन किसको साथ एवं अलग कर सकता है, सबकुछ प्रभु का तय किया हुआ है।
- मनुष्य एक विवश जीव है जो कभी अपनी इन्द्रियों से विवश होता है, कभी परिस्थितियों से किंतु श्रेष्ठ मनुष्य विवशता को जाहिर नहीं होने देते एवं पुरुषार्थी मनुष्य के जीवन में सभी विवशताएँ गुलाम की तरह हाथ जोड़े उसके सामने खड़ी रहती हैं।
- किसी प्रिय के आमंत्रण पर नहीं जाने से मन कचोटता रहता है।
- घर में जन्मे भगवान को भी चोर माना गया एवं दूर के पत्थर भी भगवान की तरह पूजे जाते हैं।
- जिनके घर की माताएँ कोने में अपमानित पड़ी रहती हों उन्हें जगत की माता की कृपा कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती।
- तुम बिना व्यक्ति बनाए उसे अपनी कल्पना दे देते हो, इसलिए तुम्हारी कल्पना साकार नहीं होती। रामकृष्ण परमहंस ने पहले विवेकानंद बनाए, फिर उन्होंने उसे अपनी कल्पना दी थी।
- बिना व्यक्ति बनाए कल्पना को साकार करने की जबावदेही देना ठीक वैसा ही है, जैसे जो ड्राइवर नहीं है उसे गाड़ी चलाने के लिए कहना।
- स्वयं गलत करते हुए दूसरों से अच्छे की उम्मीद करना मूर्खता है।
- ईमानदार खुद्र बनो फिर दूसरों को कहो।
- एक चोर ने अपनी चोरी का सामान लाने के लिए किसी को कहा तो रास्ते में उसने उस सामान में से कुछ चुरा लिया, किंतु जब पकड़ा गया और उससे पूछा गया कि तुमने क्यों चुराया तो जवाब था चोरी का माल ढोनेवाला कोई ईमानदार नहीं रह सकता है।
- हर हाल में देश का विकास हो, यह अपना लक्ष्य मत बनाओ, बल्कि सत्य की राह से ही विकास हो, यह अपने देश का लक्ष्य बने।
- नौकर ने मालिक से कहा– "आपने दस लाख दलाली के लिए तो आप दलाल नहीं हुए एवं मैंने उसमें से पाँच हजार चुरा लिए तो मैं चोर हो गया"।

- ईश्वर किसी को जब तक सत्य पर चलने की प्रेरणा एवं उस पर हर–हाल में टिके रहने का साहस नहीं देता, तब तक उसका सबकुछ उसकी कृपा नहीं लोभ है या उसकी परीक्षा।
- बहुत ही मुश्किल है सत्य की डगर, फिर भी पार कराता है हमारा मालिक।
- सत्य पालन के प्रति अहंकार नही बल्कि जल जैसी कोमलता एवं नदियों का थपेड़ा खाता किनारा बनना होता है।
- नदी का किनारा एवं जल का जो संबंध है वही सत्य एवं ईश्वर में है।
- सत्य की राह कब, कौन एवं कहाँ बता जाएगा यह तुम नहीं जानते हो किंतु चलने लगो तो न बताने वाला, न मदद करनेवाला ही तुम्हारे साथ रहेगा।
- सत्य का स्वर नहीं होता जो गुनगानकर किसी को रिझा सकता है। वह तो बरछे की तरह चुभता है और हजारों बार घायल करता है।
- जानवर अपने बच्चे को इसलिए नहीं पालता है कि बुढ़ापा में उसकी संतान उसे खिलाएगी किंतु मनुष्य कहलानेवाला जीव अपनी संतान के जन्म से ही अपने बुढ़ापे की उम्मीदें जोड़कर संतान की परवरिश करता है।
- अपने विचार का नहीं, आचरण का प्रचार करो।

प्रेमधारा

- मित्र वह है जिसकी यादें प्रसन्नता के शीर्ष पर, मंजिल के पड़ाव पर एवं असहनीय दुख में आती हो।
- प्रिय वह है जो यादों में नहीं बल्कि आँखों में बसता हो अर्थात् जिसे हमेशा देखता हो, या देखते रहना चाहता हो।
- शिष्य वह है जो गुरु के थोड़े से कष्ट में भी अपना बड़ा से बड़ा कष्ट भूल जाता हो एवं उनकी इच्छा के लिए अपना संपूर्ण जीवन अर्पित कर सकता हो।
- संतान वह है जो अपने माता–पिता की छोटी–छोटी इच्छाओं के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तत्पर रहता हो एवं अपनी कृतियों से उनका यश बढ़ाता हो।
- माता वह है जो अपने महान चरित्र से अपनी संतान को चरित्रवान बनाती हो।
- पिता वह है जिसने अपनी संतान के जीवन को विद्वता एवं पुरूषार्थ से लबालब कर दिया हो।
- गुरु वह है जिसने अपने शिष्य की भलाई एवं उसे महान बनाने के लिए भारी से भारी कष्ट उठाया हो।
- जीवन वही है जो नित्य दूसरों की भलाई, प्रभु स्मरण एवं महान कृतियों को करने में गुजरता हो।
- कानों को जो अच्छा लगे वही सदा सुनने की इच्छा रखने वाला एक दिन पथ से भटक जाता है।
- सामान्य मनुष्य को जो कुछ अच्छा लगता है, वह करता है किन्तु श्रेष्ठ मनुष्य जो सत्य होता है वही करते हैं।
- दूसरों को खुश रखना चाहिए, किंतु बुराइयों का साथ देकर अगर यह पूरा हो तो नाराज करना ज्यादा श्रेयस्कर होगा।

- अचानक मिला धन प्रसन्नता देता है, निरंतर मिलनेवाला धन धनवान बनाता है, दुख में मिला धन दुख हर लेता है किंतु सद्गुरू के मिलने से संपूर्ण जीवन धन्य–धन्य हो जाता है।
- अपनी तस्वीरों को अखबार में देखकर, अपनी चर्चा श्रिश्तेदारों एवं अपनों–परायों के बीच सुनकर, सुबह–सुबह जन्म दिन पर बधाई पाकर मन खुश होता है किंतु सत्याचरण की राह पर कष्ट पाकर भी संपूर्ण जीवन प्रशंसित होता है।
- प्रशंसा प्राप्त करने का वह कारण ढूँढ़ो जो दूसरों की भलाई से चलकर तुम्हारे पास आता हो।
- एक तलवार से एक का सर कलम होता है, किंतु एक शब्द पूरे संसार को आहत कर सकता है, मरने–मारने के लिए तैयार कर सकता है।
- तलवार के प्रयोग पर सावधानी बरतनी चाहिए, किंतु शब्द के प्रयोग से पहले आस–पास संबंधित लोगों एवं पूरी दुनिया पर पड़ने वाले असर के बारे में विचार करना चाहिए।
- जब कोई वस्तु किसी के द्वारा उसके माँगने पर नहीं देते हैं तो थोड़े ही देर के लिए उसे कष्ट हो सकता है, किंतु बिना मांगे जब हम उसे बुरे प्रभाव वाले शब्द को देते हैं तो उसका सम्पूर्ण जीवन ही नष्ट हो सकता है, जैसे नेताओं की बात पर हिंसा पर उतारू भीड़।
- मनुष्य को यह पता ही कहाँ है कि वह मृत्यु के बाद फिर इस धरा पर आएगा तब उसके द्वारा बिगाड़ी गई पृथ्वी उसके रहने लायक नहीं रहेगी।
- शब्द मे वह जान है जो जब तक पन्नों में पड़ा रहता है तो बेजान दीखता है किंतु जब उसे कोई पढ़ लेता है तो हजारों लाखों की जानें लौट आती है।
- आज तक शस्त्रों ने जितने को मारा है उससे ज्यादा शब्दों ने मारा है।
- शस्त्र तो निशाना साधे लोगों को मारता है, किंतु शब्द तो हवा में घुलकर पूरी पृथ्वी को विषाक्त कर देता है।
- शस्त्र से बचना फिर भी आसान है किंतु शब्द से बचना मुश्किल है, क्योंकि शस्त्र को नष्ट किया जा सकता है – शब्द को नहीं।
- शस्त्र को हर बार दागना होता है किंतु शब्द को एक बार निकालने पर अनंत काल तक उसका प्रभाव बना रहता है।

- अर्जुन के बाण से कोई नहीं मरा, बल्कि द्रौपदी के शब्दों ने किसी के जीने का रास्ता नहीं छोड़ा।
- प्रभु की कृपा होती है तो किसी के शब्द किसी को प्रिय लगते हैं।
- शब्द तीखा हो तो मौन रहना बेहतर है।
- कम बोलो – शांति से रहो।

प्रेमधारा

- अपने लाभ के लिए कुकर्मियों का साथ लेने वाला भला अच्छा कैसे हो सकता है ?
- जो लाभ अपने को अच्छा एवं दूसरे को पतित बनाता हो वह लाभ नहीं, धोखा है।
- दूसरों को अपने उसी लाभ के बारे में कहो जिसमें उसकी भी भलाई हो।
- लाभ का कारण कुछ भी हो सकता है किंतु लाभ वही है जो सत्य को कभी भी आहत न करे।
- सत्य आहत होता रहा एवं हम अपने–अपने लाभ को लेकर जश्न मनाते रहे यही हमारी दुनिया है।
- सत्य की बाजार में चर्चा होती है किंतु उसे वहाँ से कोई अपने साथ अपने घर नहीं ले जाता।
- जिस सत्य की कीमत लगाई जाती हो वह सत्य, सत्य नहीं रहकर झूठ हो जाता है।
- संसार का सबकुछ बिकाऊ है यह झूठ है, क्योंकि सत्य की कोई कीमत नहीं है।
- सत्य का पालन होता है एवं झूठ बोला जाता है।
- हर बोली गई बोल सत्य नहीं होती।
- सत्य मिलावट नहीं जो दूध की तरह पानी में मिल जाता है।
- सत्य संसार का सबसे कठोर अघुलनशील पदार्थ है।
- ठोस एक ही है वह है सत्य जो ठोस की परिभाषा पर खरा उतरता है।
- सत्य से छेड़–छाड़ करने से सत्य नहीं बदल जाता।
- सत्य दूसरों के लिए राहत एवं कष्ट दोनों ही देनेवाला हो सकता है, किंतु इसका पालन करने के लिए तो सिर्फ एक रास्ता है।

- युग की भी पहचान व्यक्ति से ही होती है, जैसे सत्युग सत्य से, त्रेता राम से, द्वापर कृष्ण से एवं कलियुग आज के राजाओं से।
- शास्त्रों की जरूरत है – इसे उपासना स्थल से निकालकर महाभारत की तरह कर्मभूमि के बीच बाँटने का।
- निरर्थक है गीता उपदेश स्थल। गीता युद्ध की भूमि में जन्म लेती है एवं इसने आज कर्मभूमि से निकाल स्थान विशेष पर भक्ति के नाम पर कर्म विमुखियों की जमात तैयार कर दिया है।
- हे युवाओं! भारत का कल्याण तब तक नहीं होगा जब तक गीता का कृष्ण, रामायण का राम, कर्मभूमि के युद्ध में खड़ा, अन्याय पर प्रहार करता हुआ नहीं मिलेगा।
- अच्छा से अच्छा विचार भी आचरणवान व्यक्ति के अभाव में दम तोड़ देता है।
- सभी शास्त्रों के रहते हुए भी काल कष्टदायक प्रतीत होने लगता है जब एक भी व्यक्ति सत्याचरण करने वाला न हो।

प्रेमधारा

- पुरानी चीजों को ठीक से रखने में है नई उपलब्धियों के लिए आमंत्रण।
- खुदा ने जो कुछ हमें दिया वह औरों को भी दिया किंतु कोई क्या पाया था और क्या खोया था, यह उसकी फितरत भी है और ईमान भी।
- मत पूछो बगलगीर से कि तुम क्या ला रहे हो– पूछो यह भी कि तुम कैसे ला रहे हो।
- मिटनेवाली हजारों चीजों से तुम घिरे हो और कहते हो खुदा से कि हमें अमर कर दो।
- मुर्दों के बीच रहने वाला मुर्दों की गिनती ही करता रह गया, तभी खुदा की बात किसी को भा गई कि गिनतियों से मुर्दों का बनना नहीं रूकता। आखिर जिंदा रहने के लिए तूने किया ही क्या ?
- औरों से पूछते हो उनका हाल, कभी अपने हाल पर भी तो गौर करो।
- किसी से किसी का हाल पूछने से क्या उनका हाल बदल जाता है, किंतु थोड़ी देर के शकुन के लिए पूछते हैं हजारों बार हाल लोग।
- पूछने से हाल बदलते नहीं फिर भी पूछते हैं लोग, कभी कोशिश करके देखा होता तो हाल ही नहीं पूरी दुनिया की हालात बदल सकते थे।
- हालात बदलने से हाल भी बदल सकते थे किंतु इसकी परवाह किनको है, वे तो हाल पूछकर ही अपने को सरकार कहते हैं।
- हाल नहीं पूछते तो कम से कम हालात बदलने का इंतजार तो नहीं करता। बर्बाद हुए समय में दो वक्त की रोटी ही जुटा लेते हम।
- अब इतना तो रहम करो कि हमें अपने हाल एवं हालात पर हमारे भरोसे छोड़ दो। इंतजार करो! वक्त थमता नहीं किंतु थमती है सांसे तो एक दिन थमेगा तेरा भी यह सितम।

- तेरे जुल्म के ताप से सारा नमक शरीर से उतर गया, इसीलिए तो वह नमकहरामी कर गया।
- भगवान आते हैं किंतु तुम्हारे पास ठहरते नहीं, जैसे छेद वाले बरतन में पानी। पात्र बनो, भगवान मिलेंगे भी, ठहरेंगे भी।
- संसार में प्राप्त वस्तु को खोने का भय एवं नहीं प्राप्त को प्राप्त करने – नहीं करने के बीच व्याप्त भय से मुक्त हुए बिना स्थाई आनंद और परमात्मा का अनुभव नहीं किया जा सकता है।
- बड़ा से बड़ा व्यक्ति भी खोने एवं पाने के इर्द गिर्द मंडराता रहता है, इसलिए संसार के किसी भी बड़े को प्रभु के प्रिय के रूप में नहीं जाना गया।
- बड़ा नहीं, प्रभु की कृपा प्राप्त करनेवाला बनो।
- मनुष्य युद्ध करते हुए भी युद्ध नहीं शांति चाहता है।
- युवाओं के बीच स्वाध्याय के प्रति कम हुई रूचि से भविष्य में साहित्य, इतिहास एवं अन्य लेखन कार्यों को करनेवालों की भारी कमी पड़ेगी।
- शांति को लक्ष्य बनाओ फिर तुम ठगे नहीं जाओगे।
- संसार की जिन चीजों को तुम प्राप्त करना चाहते हो उसके लिए अथक प्रयास करो, किंतु शांति की कीमत पर नहीं।
- जब संघर्ष के बाद तुम्हारे पास सभी भौतिक वस्तुएँ होती हैं तो तुम उसे भोगने के लायक नहीं रहते क्योंकि तब तुम बीमारियों से घिर चुके होते हो।
- धन लेकर क्या करोगे, जब अपनी इच्छा से खा–पी भी नहीं सकते।
- कमाओ नहीं जीने के लिए, आनंद का रास्ता चुनो। इसके लिए सद्गुरू के पास जाओ।

प्रेमधारा

- संसार में कुछ ऐसे भी लोग हैं जो कार्य भार के डर से पूर्व में दिए गए कार्यों में जानबूझ कर गलती किया करते हैं ताकि उन्हें नई जवाबदेही नहीं दी जा सके।
- राही अपनी राह बदल देते हैं किंतु क्या राह को अपनी राह बदलते देखा है कभी आपने।
- राह बनो कि चलें हजारों लोग – बदलते मिजाज का राही बन कर क्या करोगे ?
- राह का यह हाल है कि राह पर चलते लोग ही गालियाँ देते हैं उसे जिसने उन्हें मंजिल दी।
- ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो ऊँचाई पर चढ़ने के बाद सीढ़ी गिरा दिया करते हैं ताकि कोई दूसरा चढ़कर उनकी ऊँचाई की बराबरी नहीं कर सके, किंतु उतरते वक्त खुद गिरी सीढ़ियों के कारण मुँह के बल गिरते हैं वे।

- जो चढ़ते हैं आकाश में तो औरों के चढ़ने के लिए भी हजारों सीढ़ियाँ बना देते हैं, जो चढ़ते पहाड़ों पर है तो वहाँ भी पगडंडियाँ खींच देते हैं, वे खुद तो समन्दर में गोता लगाते हैं, किंतु हजारों की खातिर जहाज बना देते हैं, उन्हें ही हम महान कहते हैं।
- कमजोर पिता अपनी संतान की परवरिश तो कर सकता है, उसे अनुशासित नही रख सकता है।
- कमजोर माता अपनी संतान की हर बातों को मान कर एक दिन संतान के विनाश का कारण बनती है।
- माता चरित्रहीन हो तो संतान चरित्रवान कभी नहीं बन सकता है। जब पिता मूर्ख हो तो संतान विद्वान कभी नहीं बन सकता है, मित्र कंजूस हो तो वह मित्रता कभी नहीं निभा सकता है एवं पड़ोसी झगड़ालू एवं खराब आचरण वाला हो तो अनहोनी के भय से कभी भी मुक्त नहीं हुआ जा सकता है।
- पुस्तकविहीन विद्यार्थी, अस्त्र–शस्त्रविहीन योद्धा, मुकुट विहीन राजा एवं विनम्रता विहीन साधु कभी शोभा नहीं पाते।
- राजा न्याय न करे, प्रजा काम नहीं करे, विद्यार्थी पाठ न करे एवं संत जाप न करे तो राज्य का विकास संभव नहीं है।

प्रेमधारा

- जब भी लोग नया संगठन बनाते हैं, सत्य में वे संगठन बनाते नहीं बल्कि वह पूर्व संगठन को तोड़ते हैं और कहते हैं कि वे संगठन बनाते हैं।
- टूटता हुआ संगठन का ही परिणाम है कि पूर्व के राज्य, देश एवं जिला, राज्य बनता जा रहा है।
- धर्म, जाति, देश, राज्य, सब के सब उन्हीं लोगों द्वारा तोड़े जाते हैं जो पूरे धर्म, जाति, देश एवं राज्य पर अपना प्रभाव नहीं छोड़ सकते हैं तो एक हिस्से का नेता बने रहना चाहते हैं।
- हर नया संगठन कमजोर लोगों की जमात है जो नित्य गलतफहमियाँ पैदा करा रहा हैं कि वह मजबूत हैं।

- जब भी कोई कहे कि हमें पैसो की जरूरत नहीं हैं तो समझें उसे सबसे ज्यादा जरूरत है।
- पुरस्कार को वेतन का हिस्सा बनाने से अन्य कर्मचारियों में लोभ एवं असंतोष दोनों ही पनपते हैं जिससे विश्वसनीयता एवं गुणवत्ता दोनों ही एक साथ प्रभावित होती हैं।
- विश्वास करो किंतु अंधविश्वास नहीं, यह बहुत पुरानी बात है। आज विश्वास–अविश्वास से परे, कड़ी निगरानी एवं शत–प्रतिशत गुणवत्तापूर्ण परिणाम देने वाली व्यवस्था की जरूरत है।
- समय आ रहा है जब बेईमान नहीं मिलेंगे क्योंकि तेजी से बढ़ती धन की भूख किसी को भी एक जगह पर ज्यादा दिन रहने ही नहीं देगी।
- बेईमानी एवं गद्दारी की जगह कर्मचारियों की अस्थिरता ज्यादा अच्छी है जो इन दिनों तेजी से बढ़ रही है कुछेक क्षेत्रों में।
- हम बदल सकते हैं बदलते जमाने को।
- लाखों वर्षो का अंधेरा जब पल भर की रोशनी से मिट सकता है तो कुछेक दिनों की अव्यवस्था सत्य प्रयास से क्यों नहीं बदल सकती है ?
- बदलो, जमाना बदलो।

प्रेमधारा

- गलियाँ घर नहीं होती हैं, किंतु बिना गलियों से गुजरे कौन अपने घर तक पहुँचा है आज तक ?
- गलियाँ बदनाम है, किंतु फिर भी कुकर्म वहाँ नहीं किए जाते देखा है किसी ने। घर को मंदिर कहते हो फिर भी वहाँ मदिरालय, वेश्यालय की तरह कई विवादों से भरा काम होते देखा है, लोगों ने।
- रास्ते से क्या होता है, उबड़–खाबड़ रास्ते पर भी संभलकर चलते हुए मंजिल तक पहुँचते हुए हजारों को हमने देखा है एवं सीधी अच्छी सड़कों पर भी हजारों को नशे मे लुढ़कते देखा होगा आपने।

- गुनाह एवं गुनाहगार तो अंदर बैठा है, फिर कब तक सड़को पर पीछा करते–करते थकने का नाटक करते रहोगे ?
- अंदर बैठा गुनाहकार जब बाहर निकाला जाएगा फिर गलियाँ एवं रास्ते वेबजह बदनाम नहीं होंगे।
- पूछकर अच्छा करना एवं बिना पूछे बुरा करना, यह अच्छाई एवं बुराई की पुरानी रीति है।
- बाल्यावस्था में प्यार से, युवावस्था में नीति एवं दृष्टांत से, प्रौढ़ावस्था में तुलनात्मक अनुभवों से और वृद्धावस्था में अपनापन दिखाकर धैर्य से किसी को समझाना चाहिए।
- शैशवावस्था, बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था एवं वृद्धावस्था का ज्ञान सद्ग्रंथों का नियमित अध्ययन एवं नियम के साथ जीने से प्राप्त होता है।
- स्वाध्याय जीवन में आए कष्टों को दूर करता है एवं आने वाले कष्टों को आने से रोकता है।
- बदलाव वही ला सकेगा जिसने कभी बदला है अपने आपको।
- सौ दिनों तक किसी के लिए किया गया कार्य, पल भर में मनुष्य उसके नहीं करने पर भूल जाता है तथा वर्त्तमान का उसका नहीं किया ही याद रहता है।
- आपकी उपस्थिति से अच्छा या बुरा जो फर्क पड़ता है वही आप होते हैं।
- इन्सान अपनों से नहीं परायों से जाना जाता है। अपनों ने तो बेटा, भाई–बहन भी शर्त्तों पर कहा और परायों ने तो भगवान का दर्जा दे डाला।
- दूर रहो अपनों से तो पराया भी नहीं रह जाते तुम उनके लिए और परायों ने तो दूर से ही ईश्वर कह कर पुकारा है तुम्हें।
- जिसने परायों को गले लगाया है उसने ही अपनों को अपना एवं परायों को भी अपना जैसा पाया है।
- माता एवं पिता दोनों में से किसी एक के साथ रहना हो तो माता के साथ रहना चाहिए।
- बाल्यावस्था में माता के साथ, युवावस्था में पिता के साथ, प्रौढ़ावस्था में दोनों के साथ, वृद्धावस्था में प्रभु चिंतन एवं भजन–कीर्तन के साथ जीना चाहिए।
- जो पुत्र बार–बार अपने पिता से धन माँगता हो वह बिना सोचे–समझे खर्च करनेवाला निकम्मा होकर पूरे परिवार को कष्ट देनेवाला होता है।

- जो शिष्य गुरु से किसी अभ्यास को याद करने के लिए बार–बार समय मांगता हो वह या तो अल्प बुद्धि वाला है या आलसी, इनं दोनों को ही विद्या प्राप्त नहीं होती है एवं अंत में वह गुरु को ही अपयश देगा।
- अखबार की खबर, डाकिए की चिट्ठी, नौकरी के लिए आने वाले साक्षात्कार पत्र के इतंजार में आनंद एवं बेचैनी साथ–साथ रहती है।
- बुलाने पर तो हर कोई आते हैं किंतु वह खुदा ही है जो बिना बुलाए आता है, नहीं तो हम जीवन के दल–दल से निकलते कैसे ?
- लोगों को बुलाते–बुलाते वह थक गया, किंतु वह खुदा ही था कि थके हुए जीवन में भी धड़कनें चल रही थीं।
- वह खुदा ही है जो बुलाने से नहीं याद रखने से ही पास–पास रहता है।

प्रेमधारा

- प्रभु की याद दुख में आए तो मजबूरी, सुख में आए तो प्रभु की कृपा। सुख–दुख, आशा–निराशा एवं सामान्य–असामान्य सभी परिस्थितियों में आए तो ज्ञान से उपजी भक्ति है।
- सद् इच्छाएँ पूरी होती है किंतु समय का निर्धारण तो प्रभु के हाथ में है जिसके लिए कठोर परिश्रम एवं धैर्य का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए।
- किसी का विश्वास प्राप्त कर लेना यह श्रेष्ठ पुरूषों का गुण है एवं उस विश्वास को कभी नहीं तोड़ना, प्रभु कृपा प्राप्त संतो का गुण है।
- मनुष्य जब भी तोड़ता है तो वह तोड़ने वालों की श्रेणी में खड़ा हो जाता है एवं जब छोटा–सा भी, वह कुछ जोड़ता है तो श्रेष्ठ पुरूषों में उसकी गिनती होने लगती है।

- ‘तोड़ो नहीं जोड़ो’, संसार इन्हीं कथनों को साकार कर आनंदमय बन सकता है।
- तोड़ने वाला, भय पैदा करता है एवं जोड़ने वाला भय से मुक्त करता है। यही काफी है ‘जोड़ने’ जैसे शब्दों को समझने के लिए।
- कोई भी विध्वंसक शक्ति संसार में थोड़े समय के लिए भी प्रशंसा का कारण नहीं बन सकती किंतु निर्माण शक्ति अनंत काल तक आनंद का संचार कर संसार को प्रेरणा देती रहती है।
- किसी भी देश के संविधान को ईश्वर का विधान समझने की भूल हम नहीं कर सकते हैं, अन्यथा अंग्रेज कभी किसी देश से जाते ही नहीं।
- दुनिया कुकर्मियों एवं सुकर्मियों में बँटकर भी इतनी कष्टदायक नहीं बन पायी जिससे युग रहने लायक नहीं रह जाए किंतु कलियुग में इन दोनों से परे गद्दारों की फौज तैयार हो गई है जिसका एक मात्र कारण हमारे देश को चलाने वाले लोग हैं।
- प्रजा की गलती की सजा उसे एवं उसकी संतान को भोगनी होती है किंतु राजा की गलती की सजा पूरी दुनिया भुगतती है। जिसमें राजा सभी विनाशकारी दृश्यों को देखता हुआ, अंत में अपने परिवार के इष्ट–जन सहित एवं अंत में खुद भी नष्ट हो जाता है, जैसे रावण का हुआ था।
- हे दुनिया के राजाओं! इन्साफ करो, महाकाल आ रहा है जो सिर्फ तुम्हारा एवं तुम्हारे साथ खड़े लोगों को बारी–बारी से अपना इंसाफ सुनाएगा।
- देह का अंत होते हर कोई देखता है, किंतु मन का अंत मन भी नहीं देख पाता है।
- टूटते हुए मन को जोड़ना दीवारों को जोड़ने जैसा नहीं है, दीवार सुबह में जुड़ना शुरू होती है तो जो शाम तक जुड़ ही जाएगी किंतु मन को जोड़ने के लिए पूरी जिन्दगी भी काफी नहीं होती।
- मन के जोड़े–जोड़ है बाकी सब भूल–भूलैया।
- तोड़नेवाले तोड़ने वक्त एवं तोड़ने के बाद भी जश्न मनाते हैं एवं जोड़ने वाले जोड़ने वक्त तो आँसू बहाते ही हैं, जोड़ने के बाद भी थके तन–मन से जश्न मनाने के बदले पल भर के शकुन पर ही संतोष कर जाते हैं।
- जश्न का क्या कहना – बॉर्डर पर फौजी गोली खाकर खून बहाते हैं एवं हम बंद कमरे में बैठकर वाह–वाह कर अपने–अपने दायित्वों का इतिश्री कर लेते हैं।

प्रेमधारा

- बंद करो बकवास कि किसका कौन बिगाड़ता है जबकि एक छोटी–सी चिंगारी पूरा शहर जला डालती है और वह तो नफरत की मशाल लेकर घूम रहा है।
- अब श्मशान घाट को सजाने में लगे हैं लोग क्योंकि जिंदगी मौत बन गई है।

- ♦ अच्छों का अच्छा अंत आपने कर दिया एवं बुराई के विरूद्ध हमने तो अभी कानों में ही कहा था कि आपने सजा सुना दी।
- ♦ अफवाहों ने तो शहर का शहर उजाड़ दिया और तुम उसकी ही बदौलत अपना गाँव बसाने चले हो।
- ♦ हर कोई जाएगा, यह सत्य है किंतु फिर भी कुछ के काम उसके नाम को जिंदा रखेगें भले ही यह अपवाद ही सही।
- ♦ नामों में क्या रखा है, ये लोग कहा करते हैं किंतु नामों में अच्छा बुरा रखा है, क्या ये नहीं जानते हैं लोग ?
- ♦ श्मशान हो या नहाने का घाट कुटनीति सब जगह चल पड़ी हैं क्योंकि घाट को किनारा भी कहते हैं । बुराइयों का भी किनारा लगने ही वाला है, इसलिए पहले ही से घाट पकड़ लिया है उन्होंने।
- ♦ बच्चों एवं बूढ़ों को साथ कभी नहीं रखो क्योंकि बुढ़ापा भी बचपन ही है, इसलिए वे आपस में झगड़ते हैं।

प्रेमधारा

- ✓ उपदेश भी हद हो गया है, भूख–प्यास, जाड़ा–गर्मी जो सहा जा सकता है वह स्वयं तो सह नहीं पाते एवं कामवासनाओं को सहने का उपदेश दे रहे हो।
- ✓ सहने की भी सीमा होती है, सीमा टूटे नहीं इसके लिए मजबूत, सुरक्षित, पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्था की ओर हमें बढ़ना चाहिए।

- ✓ समाज आज तक सहने के उपदेश पर चलता आ रहा है, यह अच्छी बात है किंतु सत्य यह भी है कि हमने सहते हुए हजारों गुणवानों को खो दिया है। जरूरत सिद्धांतों पर अमल करने की एवं गुणवानों को खोने से बचने की है।
- ✓ रोज अखबार में छप रही हैं बलात्कार की घटनाएँ तब भी शरीफ लोग इन बुराइयों की जिम्मेवारी बुरे लोगों को ही दे रहे हैं।
- ✓ हर बुराई का कारण अच्छाई का कमजोर होना है।
- ✓ पूरी दुनिया के जेल का क्षेत्रफल एक गाँव से बड़ा नहीं होगा फिर भी बुराई पूरी दुनिया में शासन कर रही है– यह हमारी कमजोर अच्छाई का परिणाम है।
- ✓ अच्छाई अगर कमजोर हो तो वह मजबूत बुराई के सामने बुराई से भी ज्यादा बुरी दिखती है।
- ✓ हमें मजबूत अच्छाई की जरूरत है, ताकि बुराई को अपने घर से निकालना तो दूर वह अपने घर से बाहर झांक भी नहीं पाए– क्या आप इसके लिए तैयार हैं ?
- ✓ प्रशंसा एवं शिकायत दोनों ही कुछ जोड़कर ही कहा जाता है।
- ✓ आत्म प्रशंसा के लिए किसी की प्रशंसा एवं शिकायत हम किया करते हैं।
- ✓ आत्म संतुष्टि के लिए की जाने वाली प्रशंसा एवं निंदा न्यायोचित नहीं है।
- ✓ मौत देने की कीमत पर ताज संभालते हैं लोग।
- ✓ ढिंढोरा, अमन – चैन लाने का पीटा जा रहा है, जबकि दुनिया के गोदामों में बारूद पहाड़ों का रूप ले रहा है।
- ✓ कल तक दलाली गाली थी एवं आज दलाली पेशा हो गयी है।
- ✓ जहाँ दलाल सम्मानित हो रहे हों वहाँ सत्य का हाल बताना मुश्किल होगा।
- ✓ भीड़ का सत्य नहीं, सत्य की भीड़ चाहिए समाज को बदलने के लिए।
- ✓ आज धन महानता का कारण बना हुआ है। यह पतन की शुरूआत नहीं अंत है।
- ✓ मानवता की बात करनेवाले पहले सत्य की बात करें।
- ✓ आज मानवता की लड़ाई फैशन शो में इकट्ठी भीड़ जैसी लगती है।
- ✓ पसीना बहाओ तो रोटी मिलेगी किंतु लोग आज खून बहा रहे हैं रोटी के नाम पर।
- ✓ आज रोटी भी कराहती होगी कि उसका नाम बेच लोगों का खून बहा रहे हैं लोग।
- ✓ रोटी के लिए नहीं सत्ता सुख एवं अपनी तानाशाही चलाने के लिए लोग दंगा– फसाद करवा रहे हैं।
- ✓ बहुत ठगे बहुतों को रोटी के नाम पर, अब तो तुम अकेले बचे हो, कैसे बचोगे अपनी ही ठगी से ?
- ✓ हम खुशखबरी भी दो–चार बार से ज्यादा सुन नहीं सकते एवं वह खुदा ही है जिसने हमारा दुख लाखों बार सुना।

प्रेमधारा

- ✓ ईर्ष्या हम उम्र एवं एक ही पेशे के लोगों के बीच ज्यादा होती है।
- ✓ ईर्ष्या से निंदा की शुरूआत होती है एवं प्रशंसा से उसका अंत होता है।
- ✓ हे दुनिया के लोगों! मैं आम आदमी हूँ, तुम दुश्मन सिर्फ इसलिए नहीं बनना कि मैं तुम्हारे साथ चल नहीं सका, दुश्मनी मुझसे मत निकालना कि मैं तेरे बंद कमरे का हिस्सा बन नहीं सका।
- ✓ छोटा हिस्सा हमेशा जीत के लिए जिम्मेवार माना जाता रहा है, जैसे दो घंटे चलकर कहते हैं, पाँच मिनट के लिए गाड़ी छूट गई – शायद इसलिए बड़ी जमात की जगह छोटी–छोटी जमातों में बंटने लगे हैं लोग।
- ✓ जमात का क्या कहना जो पूरे का एक छोटा सा हिस्सा होता है, जो आज सिर्फ धमकाने के काम आता है जैसे लोहे की बनी गाड़ी सफर के लिए एवं छोटी सी कील चुभकर पाँव में दर्द देने के लिए काफी होती है।
- ✓ बाजारवाद ने अब घर में दुकान एवं घर में रहने वाले को दुकानदार बना दिया है जो चंद पैसों के लिए अपने घर के लोगों से ही सौदेबाजी किया करते हैं।
- ✓ नई सभ्यता एवं नारी समानता के पक्षधरों ने अच्छी समानता लाई है। नित्य नंगी तस्वीरों को अखबारों में छापने की खुली छूट दिलवाई है।
- ✓ नग्नता को समानता का दर्जा देना यह भी पुरूषों की एक चाल है जिसमें नारी समानता हर दिन शर्मसार हुई है।
- ✓ गुस्सा बिना नुकसान पहुँचाए नहीं जाता है।
- ✓ क्रोध ने संसार का जितना बुरा किया है उतना किसी ने भी नहीं किया।
- ✓ जिसके वश में क्रोध है, वही राजा है एवं जो क्रोध के वश में हो जाता है, वह भिखारी भी नहीं रह पाता है।
- ✓ क्रोध का पश्चात्ताप करना गौ–हत्या के पश्चात्ताप से भी कठिन है क्योंकि गौ–हत्या में भी एक ही जीव मरता है किंतु क्रोध ने तो कई बार पूरी पृथ्वी को जीवों से विहीन कर दिया है।
- ✓ क्रोध शक्ति का बुरा रूपांतर है जैसे लोहे का बुरा रूपान्तर हथियार है, दोनों जब भी चलते हैं सिर्फ नुकसान ही पहुँचाते हैं।
- ✓ हर व्यक्ति के अंदर क्रोध आने का कारण होता है। हम उन कारणों से बच कर क्रोध के प्रभाव में आने से बच सकते हैं।
- ✓ लोगों के हर प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक मत बनाओ। क्रोध से बच जाओगे।
- ✓ सामने वाले के प्रत्येक प्रश्न के उत्तर देने की अनिवार्यता जो मनुष्य बना लेगा उसे एक निश्चित समय के बाद क्रोधित होना ही है।
- ✓ सामने वाले से नहीं बल्कि उनके नहीं अच्छे लगने वाले प्रश्नों के प्रति मौन अपनओं। क्रोध के महापाप से बच जाओगे।

- ✓ क्रोध आने पर खुद जल पीओ तो क्रोध ठंडा हो जाएगा, किंतु सामने वाले क्रोधी को खुद से जल बढ़ा दो तो उसका क्रोध और बढ़ जाएगा।
- ✓ क्रोधी एवं शांत व्यक्ति जन्मजात होता है।
- ✓ भाग्यशाली वे हैं जो जन्म से शांत हैं किंतु जन्म से क्रोधी व्यक्ति को भी निराश होने की जरूरत नहीं है। आप अपने क्रोध को नियंत्रित कर अपना ही नहीं हजारों की भलाई कर सकते हैं क्योंकि बदलने का गूढ़ मंत्र जो आपने जान लिया है।
- ✓ हम बुरे हैं, यह हम जानते हैं किंतु नहीं मानने से हम नित्य और भी बुरे होते जाते हैं।
- ✓ मंदिर की सीढ़ियों से ही लौटते हैं करोड़पति जहाँ पहले से ही खाली कटोरा लिए भिखारी पड़ा होता है जो अपने हाल से बेखबर उसे दुआ देता रहता है–यह क्या है ?
- ✓ रे मन तूने जो कुछ पाया– कुछ पल बाद ही उसकी शिकायत कर तू कब माँगने से थकेगा, इसका इतंजार जीव कर रहा है क्योंकि तेरे थकने से संतोष आयेगा, शांति आएगी, फिर कुछ लाने की जरूरत नहीं होगी।
- ✓ विचार अच्छे एवं बुरे के फर्क से जाना तो जा सकता है, किंतु भीड़ के बिना उसकी क्या उपयोगिता है ?
- ✓ विचार कितनों के लिए उपयोगी है, वही उसकी उपयोगिता एवं महत्व है।
- ✓ प्रारंभ में विचार अकेले दीख सकता है किंतु लक्ष्य तो एक से ज्यादा लोगों को साथ करने का है।
- ✓ भीड़ जुटाने में लगे हैं लोग फिर भी भीड़ को हम भेड़िया कहते हैं।
- ✓ एक संत ने कहा– तूने नाम जपन क्यों कर छोड़ दिया ? क्रोध न छोड़ा, झूठ न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ?
- ✓ संसार में लगे हुए मन को चैन कहाँ ?
- ✓ बाजार को हम घर बना रहे है, घर को गोदाम बना रहे हैं; फिर घर बने गोदाम में घर का सुख हमें कैसे मिलेगा ?
- ✓ इस दुनिया को सुधरने एवं सुधारने में युग बीत गया किंतु क्या सुधरी दुनिया एवं सुधरे यहाँ के लोग ? फिर भी लोग अपने को सुधारक कहते हैं।
- ✓ सुधरना खुद था किंतु हर कोई सुधारने लगा औरों को, दूसरे तो सुधरे नहीं बल्कि नहीं सुधरे के साथ होने से पहले से भी ज्यादा बिगड़ गये लोग।

प्रेमधारा

- ✓ किसी भी नर–नारी के बीच प्रेम संबंधों की चर्चा पूर्णतःया अंशतःसत्य तो होती ही है।
- ✓ नर–नारी प्रेम संबंधों की चर्चा से घिरने पर एक दूसरे को सार्वजनिक रूप से भाई–बहन कहना शुरू कर देते हैं, जो भाई–बहन के पवित्र संबंध को बदनाम करते हैं।
- ✓ नर–नारी स्वाभाविक रूप से एक–दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं। इसकी सीमा तक रहने पर ही हम काम वासनाओं का शिकार नहीं हो सकते हैं।
- ✓ महान उद्देश्य एवं उसके लिए जुनून के साथ अगर अथक प्रयास करने वाला व्यक्ति हो तो वह वासनाओं का शिकार नहीं हो सकता।
- ✓ जुनून अगर प्रभु भक्ति का हो तो वासनाएँ उसे छू भी नही पाती।
- ✓ प्रेम और वासना में फर्क कीजिए, प्रेम संसार को पवित्र बनाता है, वासना पतित।
- ✓ प्रलय होना ही है किंतु प्रलय के बाद की तैयारी कौन कर रहा है ?
- ✓ संसार को बचा सकता है सिर्फ सत्य, हाँ सिर्फ सत्य। हे दुनिया के लोगों! अगर प्रलय से बचना है तो सत्य बोलो, सत्य करो, प्रपंच एवं झूठ से बचो।
- ✓ वासनाओं को छोड़ सत्य का संग करो, एक दिन प्रेम का सत्य भी समझ में आ जाएगा।
- ✓ सत्य घटना है एवं प्रेम अनंत काल तक घट्ति होनेवाला कारण।
- ✓ प्रेम से सत्य के साथ जीने की आदत डालो, संसार की सुंदरता बढ़ जाएगी।
- ✓ जो शब्दों पर अमल नहीं कर पाते हैं वे भी किताब पढ़ते एवं लिखते हैं।
- ✓ ढाई आखर शब्द प्रेम एवं सत्य कचरे में फेंका पड़ा है एवं इन शब्दों की ही प्रशंसा करने वाली हजारों पृष्ठों वाली किताब का विमोचन होते एवं बिकते हुए देखा होगा आपने।
- ✓ भीड़ जुटाने की होड़ लगी है। यह सत्ता एवं पैसा का खेल है जिसमें इस्तेमाल होते हैं आम लोग।
- ✓ समाचार कभी सत्य हुआ करता था एवं इसे छापने वाला पत्र साहस का प्रतीक माना जाता था। अब ये भी सत्य को भुनाने का, खबरों को चटपटा बनाने का, जनता को मजे ले–लेकर पढ़ाने का, सबके पीछे अपना खूब पैसा बनाने का जरिया है– क्या आप इसे नहीं जानते ?
- ✓ युद्ध में जीते राजा का ताज़ पर अधिकार होता है, न कि ताज़ पहनाने वाले का एहसान।

- ✓ जो अपने काम से ज्यादा पूरे शहर के काम के बारे में खबर रखता है, उसे सही कभी मत समझना।

प्रेमधारा

- ✓ संसार को व्यवस्थित करने की जिम्मेदारी से बड़ी जिम्मेदारी अपने को व्यवस्थित रखने की है।
- ✓ दिनभर अच्छे शब्दों के बोलने एवं लिखने वालों के बारे में भी सत्य जानकारी उसके घरेलू नौकरों एवं ड्राइवर से ली जा सकती है।
- ✓ जो सत्य को कबूल करता हो वह साधक, जो सत्य से कभी डिगता नहीं हो, वह सिद्ध एवं जो सत्य को प्रेम के साथ आत्मसात् कर लेता हो, ईश्वर का अवतार समझो।
- ✓ मालाओं को जपने वाला सिर्फ ईश्वर का नाम लेनेवाला है किंतु जो ईश्वर के गुण रूपी मालाओं को आत्मसात् कर लेता है, उसे अवतार समझो।
- ✓ मालाओं को जपने वाला सिर्फ ईश्वर का नाम लेने वाला है– किंतु जो ईश्वर के गुण रूपी मालाओं को आत्मसात् कर लेता है, उसके लिए माला एवं चन्दन महत्त्वहीन हो जाते हैं।
- ✓ शब्द पर नियंत्रण अपने से कमजोर के प्रति एवं अपने आश्रितों के प्रति एक बड़ी साधना है।
- ✓ कार्य से असंतुष्ट स्वामी जब क्रोधित होता है तो गालियों पर उतर आता है जो स्वयं में बड़ा अपराध है।
- ✓ मनुष्य अच्छा बनना चाहता है। कोशिश भी करता है किंतु वह बना है या नहीं, यह उसके सबसे नजदीक के लोगों से ही पता चल सकता है। हे मनुष्य! बड़ा नहीं, प्रिय एवं सत्य वचन बोलने वाला बनो।
- ✓ जिस देश ने सत्य एवं अहिंसा के बैनर तले आजादी प्राप्त की, उसी देश में सत्य बोलने वाले ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलते।
- ✓ अपने जीवन का एक सत्य प्रकट करो जो अब तक आपके अलावा कोई और नहीं जानता, यही सत्य की शुरूआत होगी।

- ✓ सत्य गौण न पड़े, सत्य मौन न रहे, सत्य का संसार बना रहे तो आएँ 'सत्य दिवस' मनाएँ।

प्रेमधारा

- ✓ अगर पराजित ही करना है तो अपनी बुराइयों को पराजित करो।
- ✓ अच्छे एवं बुरे का ज्ञान सिर्फ अच्छे लोगों को ही हुआ करता है।
- ✓ जिन बुरे लोगों का तुम समर्थन करते हो, एक दिन वे ही तुम्हें परेशान करेंगे।
- ✓ बुराई और अच्छाई दोनों ही एक दिन में नहीं पनपती।
- ✓ कातिलों के हाथ में लगाम तूने सौंप दी है फिर भी कहते हो कि सरकार सुरक्षित है, देश सुधर रहा है।
- ✓ हर तरफ एक ही अफसाना है– 'अपनों ने अपनों को ठगा', इसे ही बार–बार दोहराना है।
- ✓ जीत के लिए जीते हैं लोग, सत्य के लिए कोई हारने को तैयार नहीं और उन्हें ही भरी सभा में सत्य के लिए शपथ दिलवाते हो तुम।
- ✓ बातें धर्म की नहीं हैं फिर भी क्या अधर्म के रास्ते देश चलाने के लिए किसी को दोगे ?
- ✓ कालिख लगे हाथों से चेहरा सँवारने में लगे हैं लोग।
- ✓ किसने सत्य की शुरूआत की यह महत्त्वपूर्ण नहीं, बल्कि किसने कितने समय तक सत्य का साथ दिया यह महत्त्वपूर्ण है।
- ✓ सत्य हारता जीतता नहीं हैं, वह तो सिर्फ हारने एवं जीतने वालों के तरीके बताने का साधन मात्र है।
- ✓ हर बार जीतने का तरीका गलत होता है।
- ✓ जब भी जीत गलत तरीके से हासिल की गई हैं, वह लोक निंदा का कारण बनती रही है जिससे भगवान भी नहीं बच पाए तो मनुष्य की क्या बिसात है!
- ✓ मनुष्य ईश्वर जैसा हो सकता है, ईश्वर कभी नहीं। जैसे पुत्र पिता जैसा दिख सकता है फिर भी पिता नहीं हो सकता।
- ✓ मनुष्य के रूप में मनुष्य ही पृथ्वी पर आता रहा है किंतु सभी रूप ईश्वर के ही हैं इसलिए हम उसे ईश्वर भी कहते हैं।
- ✓ पिता का गुण जिसमें ज्यादा दीखता है वह पिता की संतान कहलाता है। ईश्वर का ज्यादा गुण दीखने वाला ईश्वर की श्रेष्ठ संतान कहलाता है।
- ✓ ईश्वर एवं मनुष्य के बीच अंतर करने में लगने से अच्छा है, हम अपने आचरण से ईश्वर एवं मनुष्य के बीच का अंतर समाप्त करें। ऐसा जो करे वही मनुष्य में श्रेष्ठ है।

- ✓ जन्म–मृत्यु का रहस्य संसार का सबसे गूढ. रहस्य है, जो हमारे समक्ष ईश्वर के होने के बारे में विश्वास दिलाता है।
- ✓ सुख में ईश्वर का अनुभव विरले ही कोई करता है। यह तो दुख ही है जो हमें ईश्वर के बारे में चिन्तन–मनन एवं उसे मानने के लिए विवश करता रहता है।
- ✓ आवाज़ उठती है किन्तु आकाश इतना फैला हुआ है कि वह गूँजती नहीं, विलीन हो जाती है।
- ✓ कोशिश कुछ ऐसी करो कि सत्य के लिए आवाज़ भी उठे और गूँजे ऐसा कि आकाश भी छोटा पड़े।
- ✓ मुश्किल है बनाना और आसान है बिगाड़ना। पर कुछ लोग दूसरे को बिगाड़कर ही अपने को महान कहते हैं।
- ✓ जो डर बेचते हैं वे अपने को इंश्यूरेंस कंपनी कहते हैं।

प्रेमधारा

- ✓ शास्त्र एवं शस्त्र में जो फर्क है वही फर्क ज्ञान एवं अज्ञान में है।
- ✓ शास्त्र जब चलता है तो शस्त्र नहीं चलता है किंतु जब शस्त्र शास्त्र को छोड़कर चलता है तो वह अधर्म एवं अपराध कहलाता है।
- ✓ शस्त्र के साथ शास्त्र का संयोग धर्म का, न्याय का संयोग कहलाता है। जैसे महाभारत में श्रीकृष्ण का उपदेश एवं अर्जुन का गांडीव धर्मयुद्ध के नाम से प्रचलित हुआ।
- ✓ जब शास्त्र से समाज एवं देश चल रहा हो तो वह सर्वोत्तम काल कहलाएगा, जब देश शास्त्रानुसार शस्त्र चलाता हो तो न्याय का काल कहा जाएगा, किंतु जब शस्त्र–शास्त्र को छोड़ अकेले चल रहा हो तो वह अधर्म राज अर्थात राक्षस राज कहलाएगा।
- ✓ इन दिनों देश चलाने हेतु शास्त्र एवं शस्त्र की जगह धन ने ले लिया है– जिसे पतन या प्रलय के पूर्व का काल कहा जा सकता है।
- ✓ धन के लिए श्रम की जरूरत पड़ती है किंतु बिना श्रम का अगर धन आ जाए तो इसे ही भ्रष्टाचार कहते हैं।
- ✓ धन एवं धन्य में फर्क यह है कि धन के लिए संग्रह करना होता है एवं धन्य कहलाने के लिए खर्च करना होता है।
- ✓ मुश्किल है ढूँढ़ना नोंक–झोंक नहीं करनेवाले पति–पत्नी, संपत्ति के लिए नहीं लड़नेवाला भाई, मेड़ नहीं तोड़नेवाला किसान, चाटुकार बिना राजा, दो दलों की नहीं टूटने वाली मित्रता, सफर में ट्रेन को गंदा नहीं करनेवाला यात्री, कमजोर रिश्तेदारों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करने वाले रिश्तेदार, तीर्थों में सुख देने वाला पुरोहित, पंचर का पैसा नहीं चुराने वाला ड्राइवर, होटलों में बिना लोभ के सेवा करने वाला बेटर, सच बोलनेवाला राजनेता, फिर भी लोग कहते हैं कि संसार चल रहा है।
- ✓ जो सत्य नहीं बोल सकता है वह अपने को सत्यवादी नहीं कह सकता है, फिर भी वह योगी, साधु संन्यासी, महाराज तो कहलाता ही है।

- ✓ दुनिया को बेहतर बनाए रखने के लिए सत्यवादी ही काफी है, किंतु इसके ही अभाव में हम योगी, संन्यासी, साधु एवं महात्मा जैसे नामों पर संतोष कर लेते हैं।
- ✓ खुद अच्छा बनने की जगह हम पूरी जिन्दगी दूसरों के अच्छा बनने के इंतजार में या किसी के अच्छा बनने पर उसकी प्रशंसा करने में ही अपना समय बिता देते हैं।
- ✓ दूसरों की अच्छाई की प्रशंसा अवश्य करें किंतु खुद भी अच्छा बनें।
- ✓ अच्छी बातों को केवल कहने या लिखने में नहीं उसे अपनाने में जीवन का आनंद है।
- ✓ जब तुम सभी प्रयास के बावजूद आनंद का अनुभव नहीं कर पाते हो तो सत्य का अनुसरण करना शुरू करो, आनंद तुम्हारी गुलामी करने लगेगा।
- ✓ प्रभु ने आपको जिन कार्यों के लिए चुना है यह पता किए बिना आप जो कुछ करेंगे वह गलत ही करेंगे।
- ✓ हे मनुष्य! तुम्हें प्रभु ने किन कार्यों के लिए चुना है, इसका पता लगाने के लिए अपनी आत्मा के पास जाओ क्योंकि उसे ही पता है कि तुम्हें क्या करने के लिए जगत् में भेजा गया है।
- ✓ सहज है आत्मा के पास पहुँचना, फिर भी नहीं पहुँच पाते हो तो सत्संग करो। सद्गुरू के पास जाओ, वह तुम्हें प्रभु के द्वार तक पहुँचाएगा।
- ✓ सद्गुरू के पास ही वह मंत्र होता है जिसे जानने के बाद प्रभु के अलावा जीव कुछ भी जानना नहीं चाहता।

- ✓ सोचने, कहने एवं करने में समानता हो तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ है, अगर वह प्रेम, परोपकार, राष्ट्रभक्ति एवं मानवता के लिए किए गये आचरण में तब्दील हो जाए तो व्यक्ति श्रेष्ठ होकर महापुरूष की श्रेणी में आएगा।
- ✓ मनुष्य उन वस्तुओं से संतुष्ट होना चाहता है जो स्वयं दूसरों की देख–रेख के बिना नष्ट हो जाती है।
- ✓ जो अमर है, जो मिटता नहीं, वह जब तुझे संतुष्ट कर दे, तभी तुम संतुष्ट हो पाओगे और वह है तुम्हारी आत्मा।
- ✓ रे मनुष्य! तू आत्मा का कहा मान, बाकी सब बेकार है।
- ✓ आनंद के अनुभव के बिना शांति का भी अनुभव नहीं किया जा सकता है और आनंद का अनुभव आज तक प्रयोगात्मक ही है।
- ✓ ऐसा व्यक्ति ढूँढ़ो जिसे धन नहीं चाहिए, जिसे ज्ञान नहीं चाहिए, जिसे सम्मान नहीं चाहिए, जिसे प्रशंसा नहीं चाहिए और जब तक ऐसा व्यक्ति नहीं मिल जाता तब तक उसकी संगति से तुम्हें आनंद भी नहीं मिलेगा।
- ✓ आनंद संसार की सबसे दुर्लभ चीज है, जिसे पाने वाले ने इसे पाने के लिए सब कुछ छोड़ा था और तू सबकुछ पाकर इसे पाना चाहते हो।
- ✓ आनंद को ढूँढ़ना बंद करो– वह तुम्हारे पास आने का इंतजार कर रहा है, किंतु तूने तो अपने पास पूरे संसार को बुला रखा है जहाँ आनंद के आने की जगह ही नहीं बची है।
- ✓ आनंद को, सहारे से नहीं, अकेले ही प्राप्त किया जा सकता है, किंतु हमने तो इसे कभी संगति के सहारे, कभी कपड़ों के सहारे, कभी भोजन के सहारे, कभी भजन के सहारे, कभी रिश्तों के सहारे प्राप्त करना चाहा है।
- ✓ नमक के सहारे सब्जी एवं चीनी के सहारे मिठाई खाई जाती है न कि सब्जी के सहारे नमक को। जीवन में आनंद भी कुछ ऐसा ही है, हम आनंद के सहारे वस्तुओं को भोगे, न कि वस्तु के सहारे आनंद को।

- ✓ यह निरंतर कोशिश का ही परिणाम है कि ऊँचाई एवरेस्ट की, फैलाव आकाश का, गहराई समंदर की एवं दूरियों ग्रहों एवं नक्षत्रों की, मनुष्य की पहुँच से बाहर नहीं रही।
- ✓ सफलता के लिए निरंतर प्रयास, उचित समय पर कार्य की शुरूआत, कार्य अवधि के दौरान उत्पन्न कठिनाइयों के प्रति धैर्य के साथ बुद्धि का प्रयोग, अच्छे लोगों की संगति एवं ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास की जरूरत होती है।
- ✓ असफलताओं से निकलता है सफलता का मंत्र।
- ✓ किसी भी कार्य की सफलता के लिए निरंतर आर्थिक मजबूती बनी रहे, इसके लिए अच्छी सूझ–बूझ की जरूरत है।
- ✓ आर्थिक मजबूती के बिना अच्छी से अच्छी कल्याणकारी योजनाएँ भी दम तोड़ देती है।
- ✓ उधार जिस व्यक्ति से लेते हो, उससे मिलते रहो– कर्ज़ कष्टकारक नहीं लगेगा।
- ✓ जो उधार भी लेता है एवं उधार लिए गए व्यक्ति से मिलना भी नहीं चाहता हो, वही कष्ट में पड़ता है।
- ✓ सफलता शांति के साथ चाहिए अन्यथा अकेली सफलता भी असफलता जैसी ही होती है।
- ✓ बहुत सफल व्यक्ति का व्यक्तिगत जीवन कष्टों से भरा होता है जिसे सुनने के बाद कोई सफलता को प्राप्त करना नहीं चाहेगा।

प्रेमधारा

- ✓ भाग्यशाली वे लोग हैं जिनके साथ अच्छे लोग हैं।
- ✓ वस्तुओं के साथ रहने से जो सुख मिलता है भाग्य दिखता है, वह क्षणिक है, किंतु अच्छे लोगों के साथ रहने से जो सुख आपको मिलता है, उस भाग्य को दुर्भाग्य कभी पराजित नहीं कर सकता है।
- ✓ भाग्य एवं दुर्भाग्य के बीच सिर्फ खोना–पाना या सुख–दुख ही नहीं है, बल्कि अच्छे बुरे मित्रों की पहचान, गलत–सही निर्णय का पता चलना एवं अपने खुद का भटकाव या संभलकर चलने जैसी बातों का भी पता चलता है।
- ✓ भाग्य हमेशा ही कष्ट एवं संघर्ष के गर्भ से उत्पन्न होता है जिसमें धैर्य रूपी किसान साथ में रहता है।
- ✓ मनुष्य का अच्छा होता है तो उसे भाग्य एवं बुरा हो तो उसे दुर्भाग्य कहता है किंतु इस अच्छे–बुरे के पीछे हमेशा ही उसके गलत एवं सही कदम होते हैं।
- ✓ कई बार दुर्भाग्य रूपी दिखने वाला कष्ट लाखों करोड़ों के लिए प्रेरणा एवं आनंद लाता है, जैसे ईसा एवं गाँधी जैसे महापुरूषों के द्वारा उठाए गए कष्ट।

- ✓ हे मनुष्य! हमें कितना कष्ट या सुख हुआ है, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है बल्कि हमने कष्ट या सुख को क्यों चुना, यह महत्त्वपूर्ण है। जैसे अंग्रेजों की चापलूसी कुछेक लोगों का सुख था एवं गाँधी का कष्ट भारत एवं दुनिया के करोड़ों लोगों के लिए मुक्ति का मार्ग, भाग्य का मार्ग था।
- ✓ संघर्ष करो क्योंकि संघर्ष से भाग्य रूपी सत्य निखरता है एवं आराम एवं आलस्य से दुर्भाग्य रूपी असत्य।
- ✓ जो भाग्य को सुख समझने की भूल करता है वहीं मादक द्रव्यों का शिकार होकर एक दिन गंदे नाले में पड़े मिलता है एवं जो भाग्य को सत्य के लिए संघर्ष करने की क्षमता मानता है, वही कल का महापुरूष है।
- ✓ हजारों सुख को भाग्य कहने वाले पल भर में एक सुख को खोने से विचलित हो जाते हैं, किंतु जिन्होंने भाग्य को सत्य के लिए संघर्ष माना, वे ही एक दिन करोड़ो का भाग्य कहलाते हैं।
- ✓ भाग्य का अर्थ यह नहीं है कि आपने कितना सुख किया बल्कि आपने कितनों को सुखी बनाकर सुख का अनुभव किया, सुख के अनुभव को सौभाग्य कहते हैं।

प्रेमधारा

- ✓ मनुष्य एवं जानवर में यह अंतर है कि मनुष्य अपना भला–बुरा खुद सोचता है एवं जानवर दूसरे या अपने भले–बुरे के बारे में भी नहीं सोचता।
- ✓ जिन्दगी भर आप जिस मनुष्य के साथ रहते हैं वह आपका भला कब करेगा यह तो जाना जा सकता है, किंतु बुरा कब करेगा यह जिन्दगी के अंतिम क्षण में भी पता नहीं चलता।
- ✓ संसार का सबसे रहस्यमय प्राणी मनुष्य ही है।
- ✓ मनुष्य भय से अच्छा बनता है एवं जानवर जन्मजात अच्छा या बुरा होता है।
- ✓ मनुष्य जब हारता है तो भगवान का चिंतन मनन करता है किंतु जानवर के पास भगवान की कोई कल्पना नहीं होती है।
- ✓ जिसने भी जानवर पाला है, उससे उसे सुख ही मिलता है किंतु माँ–बाप भी जिस बेटे को पालते हैं उनमें से ज्यादातर उन्हें कष्ट देनेवाले ही निकलते हैं।
- ✓ मनुष्य एवं जानवर में किसी एक को अपन सुरक्षा के लिए रखना हो तो उसमें से जानवर को ही रखना चाहिए।
- ✓ योग में सभी आसन जानवरों से ही सीखे गए हैं।
- ✓ मनुष्य नित्य जानवरों से सीखता है एवं अपने को संसार से मुक्त होने के प्रयास में लगा है किंतु वही मनुष्य जानवरों को मनुष्य का व्यवहार सिखाकर उसे मनुष्य का गुलाम बना देता है।

- ✓ मनुष्य स्वभाव से दूसरों को गुलाम बनाने वाला है इसलिए इसके बीच रहकर आजादी जैसी बातें नहीं की जा सकती है।
- ✓ मनुष्य पहली मुलाकात में लोभ एवं प्रेम से किसी को अपना बनाता है एवं बाद में नीति–सिद्धांत, अनुशासन एवं अंत में कठोरता से उसे अपने वश में कर गुलाम बनाता है।
- ✓ मनुष्य द्वारा लम्बे समय तक किए गए शासन में गुलाम बनाकर रखने की स्वाभाविक स्थिति पैदा हो जाती है जिसके विरूद्ध हम अनेक वर्षों तक संघर्ष करते हैं एवं उसे आजादी की लड़ाई का नाम देते हैं।
- ✓ मनुष्य लोभ, प्रेम, बुद्धि एवं अनुशासन जैसे नामों पर अंततः सामनेवाले को गुलाम ही बनाना चाहता है।
- ✓ जब से पृथ्वी है तब से मनुष्य–मनुष्य के बीच युद्ध चल रहा है। यह गुलाम बनाने की मानसिकता की ही तो देन है।
- ✓ मनुष्य स्वभाव से तानाशाह है, यह किसी के साथ वर्षों तक रहने के बाद पता चलता है।
- ✓ शासन 10 वर्षों के बाद तानाशाही की ओर बढ़ने लगता है एवं पच्चीस से पचास वर्षों में वह पूर्णतःतानाशाह हो जाता है।
- ✓ जैसे उलटने–पलटने से अनाज सड़ता–गलता नहीं हैं, वैसे ही शासन को भी उलटते–पलटते रहने से सड़ता–गलता नहीं है।
- ✓ शासन प्रजातंत्र हो तो मूर्खों का शासन कहलाता है, राजतंत्र हो तो निरंकुशों का, सैनिकों का हो तो तानाशाह का एवं हिंसा के मार्ग से आया हो तो उसे तानाशाह एवं विकृत मस्तिष्क वालों का शासन कहना चाहिए।
- ✓ शासन कौन अच्छा है, कौन बुरा है, इस पचड़े में पड़ने से अच्छा है उसे 5 से 10 वर्षों में बदल दो।